हज़रत
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम)
का
परिचय
कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) से दिल की गहराईयों से नफरत करते है।
कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) पर मर मिटने के लिए हमेशा तैयार रहते है।
ऐसा क्यों?
जानीए कुछ सत्य और तथ्य हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) का परिचय

क्यु.एस.खान
B.E (Mech)

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinari Primaises
A-13, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in
Website- **www.freeeducation.co.in**
www.tanveerpublication.com

हज़रत मुहम्मद (स.) का परिचय

ISBN No- 978-93-80778-21-1

Price: **₹ 50/-**

Printed by

Al Qalam PUBLICATION PVT. LTD.

3, Gali Garhaiyya Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Tel :- 011-23241481, 23261481. Fax :- 011-23241481.

E-mail :- alqalambooks@gmail.com

प्रस्तावना

ईश्वर ने यह ब्रम्हांड ४५० करोड वर्ष पूर्व बताया था। ईश्वर ने इस ब्रम्हांड और मानवजाति को बनाने के पहले हमारी आत्माएं बनाई थी (पवित्र कुरआन ७:११)। अर्थात हम इस ब्रम्हांड में बहुत लम्बी अवधि से है। आत्मा नष्ट नहीं होती इसलिए भविष्य में भी हम अनंत काल तक इस में रहेंगे।

हम आने वाले अंत काल में सुख से रहेंगे या दु:ख से, यह हमारा इस धरती पर ६० वर्ष के जीवन पर निर्भर करता है। हम क्या जीवनशैली अपनाए जिस से हम को मरने के बाद सुख प्राप्त हो यह बहुत महत्त्वपुर्ण प्रश्न है।

इस के लिए आप को स्वयं शोध और ज्ञान मंथन करना होगा। हम और आप से पहले भी बहुत से आचार्य और विद्वानों ने ऐसा ही शोध और ज्ञान मंथन किया है।

इस पुस्तक के अध्याय ९ में ऐसी ही कुछ विद्वानों के विचार लिखे है जिन्होंने जीवन भर शोध और ज्ञान मंथन किया है और किसी नतीजे पर पहुंचे है।

महापुरुष ज्ञानी वेद व्यास जी, महाकवि तुलसीदास जी, संत तुकाराम, येशु ख्रिस्त और बहुत से विद्वानोंने हज़रत मुहम्मद (स.) की प्रशंसा की है। अगर हम भी हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करें। उनको जांचे और परखें और फिर अपने विश्वास का निर्णय लें तो हमारे मरने के बाद, और इस धरती पर भी हमारे सफलता के अवसर बड़ जाते है।

यह पुस्तक इसी हेतु लिखी गई है। आप सुनी सुनाई बातो पर विश्वास ना करें। धर्म के बारे में हर जानकारी को जांचे परखें, शोध करें और सही निर्णय पर पहुंचे की कोशिश करें। आप की धर्म और विश्वास की दिशा में लापरवाही आप का मरने के बाद का जीवन बर्बाद कर सकती है। इसलिए इस मामले में गंभीर रहे और सही निर्णय लें।

देश में जो संम्प्रदायिक दंगे हो रहे है। और लोगों के बीच जो नफरत फैलाई जा रही है। इस पुस्तक से मुझे आशा है की वह भी कम होगी।

मैंने यह पुस्तक बहुत सी दूसरी पुस्तकें पढ़ कर लिखी हैं। हो सकता है मुझ से समझने में या लिखने में गलती हुई हों। आप से विनती है के आप को इस में ऐसी कोई बात लगे जो किसी के भावनाओं को ठेस पहुँचती हो, या किसी का अपमान करती हो, या इस में कोई बात या तथ्य गलत लिख गया हो तो मुझे इस की सूचना दें। हम इसे सुधारने की पूरी कोशिश करेंगे।

आपका भाई

Q.S.Khan
hydelect@vsnl.com

अनुक्रमाणिका

क्या आप ईश्वर को मानते है?

क्या आप एक ईश्वर को मानते हो?

नही?

कोई बात नही।

मैं आप से कुछ प्रश्न पूछता हूँ। कृपया उस का उत्तर दें।

● बीसवी शताब्दी (1900 AD) में वैज्ञानिकों ने इस बात को जाना कि आरंभ में कोई बहुत गर्म छोटी सी चीज़ थी। जो एक धमाके की तरह फैलना शुरु हो गई। और फैलते फैलते सारे ब्रम्हाण्ड में फैल गई। इसे Big Bang Theory कहते है। जब वह कुछ ठंडी हुई तो गरम धुंवे की तरह हो गई। फिर और ठंडी हुई तो धरती आकाश बने। धरती पर हर तरफ पानी पानी हो गया। फिर जमीन पानी के नीचे से उपर उठी। और पानी से सभी प्राणी पैदा हुए।

● पवित्र कुरआन जो १४०० वर्ष पूर्व अवतरित हुआ है। उस में लिखा हुआ है कि पहले धरती और आकाश सब गरम धुआँ थे। ईश्वर ने उससे धरती और आकाश का निर्माण किया। (पवित्र कुरआन ४१-११)

तो जो सत्य और तथ्य वैज्ञानिकों को बीसवी शताब्दी में मालूम हुए वह १४०० वर्ष पूर्व पवित्र कुरआन में कैसे आ गए?

इस प्रकार के कुछ सत्य, तथ्य और प्रश्न निम्नलिखित है।

● वैज्ञानिकों ने 1800 A.D. में अनुमान लगाया कि सभी जीवित प्राणियों का जन्म पानी से हुआ है। १४०० वर्ष पूर्व कुरआन में ईश्वर ने कहा है कि सभी जीवित प्राणियों को हमने पानी से जन्म दिया।

(पवित्र कुरआन २१-३०)

● प्राचीन युग में लोगों की ऐसी सोच थी कि सूर्य और चंद्रमा दोनो मशाल की तरह जलते है और प्रकाश फैलाते है। १९ वी शताब्दी में वैज्ञानिकों ने खोज लगाया कि केवल सूर्य ही अपना ईंधन जलाकर प्रकाश बिखेरता है। चंद्रमा तो केवल सूर्य के प्रकाश से उज्वलित है। यही तथ्य १४०० वर्ष पूर्व पवित्र कुरआन में लिखा हुआ है, (पवित्र कुरआन २५:६)

● प्राचीन काल से लोगों का विश्वास था कि धरती स्थिर है। सूर्य चंद्रमा और सारा ब्रम्हाण्ड इस पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाते हैं।

१६०९ में जर्मन वैज्ञानिक Johnannas Kepler ने इस तथ्य की खोज की कि सारे प्लॅनेट सूर्य के चारो तरफ चक्कर लगाते हैं, और अपने axis पर भी घूमते हैं। बीसवीं शताब्दी में यह पता लगा कि सूर्य भी स्थिर नही है। यह भी अपने axis पर घूमता है और सारे प्लॅनेटस को साथ लेकर १५० मील/सेकंड की गति से Solar Apex के चारो तरफ चक्कर लगाता है। और एक चक्कर २०० Million वर्ष में पूरा करता है।

१४०० वर्ष पूर्व ही ईश्वर ने इस तथ्य को पवित्र कुरआन में लिख दिया था कि सूर्य और चंद्रमा यह सब अपने-अपने Orbit में चक्कर लगाते रहते हैं। (पवित्र कुरआन २१:३३)

● सूर्य में Helium गैस का Fusion होता है। इस प्रक्रिया से ऊर्जा और प्रकाश निकलती है। जब सूर्य में Helium गैस समाप्त हो जाएगी तो Fusion प्रक्रिया भी रुक जाएगी तो सूर्य ठंडा होना शुरु होगा। वह एक गुलाबी रंग का गैस का गोला बन जाएगा और फैलते फैलते पृथ्वी को भी अपने अंदर समालेगा। उस समय आकाश गुलाबी नजर आएगा। और धरती पर हर जगह केवल दिन होगा।

इस तथ्य को वैज्ञानिकों ने पचास वर्ष पूर्व खोज निकाला है, जब के यह तथ्य १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र कुरआन में लिखा हुआ है।
(पवित्र कुरआन, ५५:३७)

(और यह दिन कयामत (प्रलय) का दिन होगा।)

● प्राचीन काल से लोगों का ऐसा सोचना था कि आकाश में दो तारों के बीच कुछ भी नहीं है। कुछ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने पता लगाया के उनके बीच भी प्लाजमा है। (Plasma is fourth state of matter)

जब कि यह तथ्य १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र कुरआन में लिखा हुआ है कि उनके बीच भी कुछ है। (पवित्र कुरआन- २५:५९)

● १९२५ में Edwin Hubble ने इस बात का पता लगाया कि ब्रम्हाण्ड में जो आकाशगंगा (Galaxy) है वह एक दूसरे से दूर जा रही है। या यह ब्रम्हांण्ड फैल रहा है।

"हम इस ब्रम्हांड को फैला रहे हैं" यह बात ईश्वर ने १४०० साल पहले ही पवित्र कुरआन के अवतरित कर दिया था।
(पवित्र कुरआन-५१:४७)

● किसी भी पदार्थ का सब से छोटे कण को ATOM कहते है। प्राचीन काल में इसे दूसरे नामों से भी जाना जाता था। जैसे जौरह, जरराह इत्यादि। कुछ वर्षो पहले वैज्ञानिको ने पता लगाया के एटम से छोटे पार्टीकल भी है जिसे Sub-Atomic particles कहते है।

१४०० साल पहले ईश्वर ने इस तथ्य को पवित्र कुरआन में लिख दिया था के ATOM से छोटे पार्टीकल का अस्तित्व है जो ईश्वर के ज्ञान में है। (पवित्र कुरआन, ३४:३)

● धरती पर बहुत से ऐसे जगह है जहाँ समुद्र में दो प्रकार के पानी है। और वह दोनों पानी एक दूसरे में Mix नहीं होते बल्कि अलग-अलग रहते है। ऐसा Meditaranian sea में है और Atlantic Sea में है। और इस तथ्य का ज्ञान लोगों को १०० वर्ष पूर्व हुआ। जब कि इस तथ्य को ईश्वर ने १४०० वर्ष पुर्व ही पवित्र कुरआन में लिख दिया था।
(पवित्र कुरआन २५:५३)

● यह धरती जिसपर हम चलते है। अगर हम अपने कदमों के नीचे १०० कि.मी. गहरा गड्डा खोदें तो नीचे से गरम लावा निकल आऐगा। हम धरती के सतह (Surface) पर १०० कि.मी. मोटी परत पर बसते हैं। यह १०० कि.मी. मोटी परत भी कई परतों से मिल कर बनी है। जब एक परत दूसरे परत पर फिसलती या सरकती है तो भूकंप आते है। धरती पर जो पहाड़ है यह दो परतों में खूंटों (Wedge) की तरह धसे हुए है और एक दूसरे पर परतों को फिसलने से या सरकने से रोकते है।

इस तथ्य (Fact) को वैज्ञानिकों ने बीसवी शताब्दी में जाना। जब कि ईश्वर ने इस सत्य को पवित्र कुरआन में १४०० वर्ष पहले ही अवतरित किया था। (पवित्र कुरआन ७९:३२)

● स्त्री के गर्भ में बच्चा लड़का पैदा होगा या लड़की यह पुरुष के वीर्य (Sperm) पर निर्भर

करता है।

क्रोमोजोम के २३ वे जोड़े में अगर पुरुष के वीर्य से XX जोड़ा बनेगा तो लड़की का जन्म होता है और XY जोड़ा बना तो लड़का जन्मेगा।

बच्चा लड़का होगा या लड़की यह माँ नहीं बल्कि बाप पर निर्भर करता है, यह तथ्य और सत्य वैज्ञानिकों को अब बीसवी शताब्दी में मालूम हुआ। जब कि यह तथ्य १४०० वर्ष पहले ही कुरआन में अवतरित हुआ है।

(पवित्र कुरआन ७५:३५-३९) (५३:४५-४६)

● इसी तरह पानी, हवा, पहाड़, पक्षी, जानवर कीडे मकोडे, मनुष्य का शरीर और उस का जन्म इत्यादि इनके बारे में वह सत्य और तथ्य जो वैज्ञानिकोंने कुछ शताब्दी पहले खोज कर के जाना है ईश्वर ने वह सब १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र कुरआन में लिख दिया था।

● ऐसे ८०से अधिक वैज्ञानिक तथ्य जो पवित्र कुरआन में है, हारुन याहया ने अपनी पुस्तक Allah's Miracles in the Quran में लिखा है। डा. जाकिर नाईक की भी इस विषय में The Quran and Modern Science नामक पुस्तक है।

● पवित्र कुरआन में क्या लिखा है और यह वैज्ञानिक तथ्यों को कैसे प्रमाणित करता है यह समझने के लिए आप पहले हारुन याहया और डा. जाकिर नाईक की पुस्तकें पढ़ें, फिर पवित्र कुरआन का अध्ययन करें। इस से आप को पवित्र कुरआन समझने में आसानी होगी।

● वह लोग जो एक ईश्वर को नहीं मानते, वह बताए कि, वह तथ्य जो एक वैज्ञानिक केवल आधुनिक मशीन और साधन के द्वारा ही जान सकता है वह १४०० वर्ष पूर्व पवित्र कुरआन में कैसे लिख गऐ?

● इन तथ्यों को वही जान सकता है जिसने उन्हें बनाया है। ईश्वर ने उन्हें बनाया है इसलिए ईश्वर ही उन्हें जानता है। और यह इस बात का भी प्रमाण है की एक ईश्वर का अस्तित्व है।

पवित्र कुरआन को ईश्वर ने ही अवतरित किया है। इसीलिए वह तथ्य और सत्य इस में १४०० वर्ष पूर्व से मौजूद है। जिन्हें वैज्ञानिकोंने अभी जान पाया है।

एक ईश्वर अनंत काल से था और हमेशा रहेगा। इस ब्रम्हाण्ड की रचना केवल ईश्वर ने की है। यह अपने आप वजूद में नहीं आ गया है।

ईश्वर सच्चा है। उस की अवतरित की हुई पुस्तक (कुरआन) भी सच्ची है। और वह जिस पर यह पुस्तक अवतरित की गई वह भी सच्चा और ईश्वर का दूत है।

****

Allah's Miracles in the Quran
Publishers :- Goodword books
1, Nizamuddin west Market,
New Delhi-110013
Tel:- 41827083, 46521511
Fax-011-46651771
E-mail-info@goodwordbooks.com

The Quran & Modern Science
Compatible or Incompatible?
Publishers :- Islamic Research Foundation
56/58 Tandel Street (North),
Dongri, Mumbai-400009, India.
Tel:- 91-22--23736875
Email- islam@irf.net,
Website:- www.irf.net

इस पुस्तक को आप हमारी
वेबसाईट **Website:-**
www.freeeducation.co.in
से मुफ्त डाऊनलोड कर सकते है।

पैग़म्बर कौन?

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, ''इन्सान और जिन्नात को हम ने अपनी प्रार्थना के लिए पैदा किया है।'' (पवित्र कुरआन ५१:५६)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, ''क्या लोगों ने समझ रखा है कि वे बस इतना कहने से छोड़ दिये जायेंगे कि 'हम मुसलमान हो गए', और उनकी परीक्षा ना ली जाएगी?''
(पवित्र कुरआन २९:२)

(अर्थात परीक्षा दिए बिना किसी को स्वर्ग नही मिलेगा)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, ''अगर ईश्वर चाहता तो तुम सब को एक समुदाय बना देता, मगर उसने अलग अलग जाति और समुदाय बनाए है ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले। तो पुण्य के काम करने में एक दूसरे से आगे बढ़ो।'' (पवित्र कुरआन ५:४८ का सारांश)

● शैतान ने ईश्वर को आवाहन (Chalange) किया था की मैं तेरे बन्दों को बहकाता रहूँगा। और तेरे कुछ नेक बन्दों के सिवा तेरे सारे बन्दे मेरे बहकावे में आ जाऐंगे।
(पवित्र कुरआन १७:६२ का सारांश)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, हमने हर जाति और समाज में अपने पैग़म्बर भेजे।
(पवित्र कुरआन १०:४७)

● शैतान लगातार लोगों को बहकाता रहता है, इसलिए दयालु ईश्वर हर युग में अपने दूत या पैग़म्बर भेजता रहा, जो मनुष्य जाति को परीक्षा में सफल होने की राह और मुक्ति की राह बताते रहे।

● तो पैग़म्बर ईश्वर के प्रतिनिधि है जो हमें स्वर्ग प्राप्त करने का सच्चा रास्ता समझाते रहते है।

पैग़म्बर कौन बनाता है?

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है की हमने तुम्हें बनाया फिर तुम्हारी शक्लें (Faces) बनाई। (पवित्र कुरआन ७:११)

विद्वान इस आयत का अर्थ ऐसा बताते है कि ईश्वर ने पहले सभी मानवजाति की आत्माएं बनाई। फिर उन आत्माओं के लिए शरीर बनाया था।

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, ''और जब ईश्वर ने पैग़म्बर आदम की पीठ से उन की संतानों को निकाला, और उन को खुद उन का साक्षी (गवाह) बनाकर पूछा, ''क्या मैं तुम्हारा ईश्वर नहीं हूँ?'' तो वह कहने लगे हम साक्षी देते है कि आप हमारे ईश्वर है। और यह वचन (Statement) इसलिए लिया कि, कहीं प्रलय (कयामत) के दिन मनुष्य यह ना कहने लगें कि ''हे ईश्वर हम तो तुझे जानते ही ना थे।'' और कहीं ऐसा ना कहें की ईश्वर के साथ देवी-देवताओं को तो हमारे पूर्वज पूजते थे, हम तो केवल उन की संतान है, जो उनके बाद पैदा हुए। तो जो पाप की परंपरा उन्होंने स्थापित की उस का दंड हमें क्यों मिलेगा?''
(पवित्र कुरआन ७:१७३ का सारांश)

विद्वान कहते है कि यह वचन लेने की प्रक्रिया भी उस समय की है जब मनुष्य केवल आत्मा था और उस समय अभी शरीर नहीं बने थे।

● जैसे ईश्वर ने तमाम इन्सान की आत्मा उस का शरीर बनाने से पहले बनाया है उसी तरह ईश्वर ने पैग़म्बर या प्रेषित भी मनुष्य के जन्म से पहले ही बनाया है। निम्नलिखित पवित्र कुरआन की आयत इस तथ्य को प्रमाणित करती है।

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, ''और जब हमने पैग़म्बरों से वचन लिया और (ए मुहम्मद) तुम से और नूह (मनु) से और इब्राहीम से और मूसा से और वचन भी उन से पक्का लिया। (पवित्र कुरआन ३३:७)

● अर्थात यह धरती और आकाश बनाने से पहले ही ईश्वर ने धरती पर कयामत (प्रलय) तक पैदा होने वाले सभी इन्सानों की आत्माओं को बना दिया था। और उसी समय सभी पैग़म्बरों की आत्माओं को भी बना दिया था। फिर जैसे समय गुजरता गया मनुष्य भी धरती पर अपने समय पर पैदा होते रहें। और उनके मार्गदर्शन के लिए पैग़म्बर भी आते रहे।

● मगर जैसे मनुष्य घोर तपस्या करके संत, महापुरुष या वली बन जाता है, वैसे कोई घोर तपस्या करके पैग़म्बर नहीं बन सकता है। क्योंकि पैग़म्बर ईश्वर खुद नियुक्त करता है। और सारे पैग़म्बरों को वह करोडों वर्ष पूर्व ही नियुक्त कर चुका है। ईश्वर के इस पैग़म्बर नियुक्ति के अमल में मनुष्य का कोई दखल नहीं है। यह ईश्वर का एक तरफा फैसला है।

● ईश्वर जिन आत्माओं को पैग़म्बर नियुक्त करता है वह उन्हें सब से अच्छा और सम्मानित खानदान (वंश), सब से अच्छा व्यक्तित्व, सब से अच्छा आचरण, पवित्र विचार, और ज्ञान भी देता है। इसका एक कारण यह है कि भले ही मानवजाति किसी पैग़म्बर के आदेशों और शिक्षा को अपनी जिद से ना माने, मगर वह यह कह कर किसी पैग़म्बर को नही झुठला सकती है कि यह पैग़म्बर तो नीच जाति का है या इसका चरित्र खराब है। या इस को सोच समझ नहीं है या यह मूर्ख है। वह ऐसा कभी नहीं कह सकते। सभी पैग़म्बर सर्वोत्तम वंश, चरित्र, व्यक्तित्व वाले और बुद्धिमान थे।

इस तथ्य को ईश्वर ने कई बार पवित्र कुरआन में कहा है।

पैग़म्बरों की पाप से देविक रक्षा

● ईश्वर पैग़म्बरो को खास तरीके से बनाता है और पैदा करता है और उसके साथ वह इस धरती पर भी उन की सभी प्रकार की गलतियों और पापों से रक्षा करता है।

इस बात का सबूत कुरआन में हज़रत युसूफ (अ.स.) के जीवन-कथा से मिलता है। जो निम्नलिखित है।

● हज़रत यूसुफ (अ.स.) कनान में पैदा हुए। गुलाम बनकर मिस्र (Egypt) में बिके। मिस्र के राजा के एक वजीर ने उन को खरीदा और अपने बेटे की तरह पाला। जब वह बड़े हुए तो बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व वाले हुए। उन पर वजीर की पत्नी जुलेखा आशिक हो गई। उस ने एक बार हज़रत युसूफ (अ.स.) को कमरे में बुला कर कमरे के द्वार और खिड़की बंद कर दी और उनसे संबध करना चाहा। यह ईश्वर की मदद ही थी की हज़रत युसूफ (अ.स.) वहाँ से पीछा छुड़ाकर भागने में सफल हुए। इस बात को ईश्वर पवित्र कुरआन में इस तरह कहता है।

''और जब वह (हज़रत युसूफ) अपनी युवावस्था को प्राप्त हुए तो हमने उन्हें निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। और उत्तमकारों को इसी तरह हम बदला दिया करते है।''

जिस स्त्री के घर में वह रहते थे, वह उन पर डोरे डालने लगी। और द्वार बंद करके कहने लगी 'लो आ जाओ।' हज़रत युसूफ (अ.स.) ने

कहा, 'अल्लाह की शरण चाहता हूँ। मेरे रब ने मुझे (आप के पती के घर में) अच्छा ठिकाना प्रदान किया है। निश्चय ही ऐसे जालिम (पाप करने वाले) कभी सफल नही होते।'

उस स्त्री ने उसका इरादा कर लिया, और यदि उसके रब की एक दलील (निशानी या प्रमाण) युसूफ के सामने न आ गई होती तो युसूफ भी उसकी और बढ़ते। उन के सामने अल्लाह की दलील (निशानी) आई ताकि हम यूसुफ से बुराई और अश्लीलता को दूर रखें। नि:संदेह वह हमारे चुने हुए (नेक) बंदों में से थे।''

(पवित्र कुरआन १२:२३-२५)

(अर्थात ईश्वर ने ही हज़रत युसूफ (अ.स.) को अश्लीलता से बचाया।)

● हम साधारण लोग जब कोई गलती करते है तो दो फरिश्ते जो हमेशा मनुष्य के साथ रहते है, वह उसे लिख लेते है। फिर कयामत के दिन हम ने जो पाप और पुण्य किया है उसका फैसला होगा।

मगर पैग़म्बरों के साथ ऐसा नहीं होता है। ईश्वर कदम कदम पर पैग़म्बरो का मार्गदर्शन करता है। और अगर उन्होंने बड़ी गलती की तो तुरंत उन्हें दंड भी देता है।

पैग़म्बरों का मार्गदर्शन

पैग़म्बरो के मार्गदर्शन और दंड के उदाहरण निम्नलिखित है,

● धनवान लोगों का समाज में दबदबा होता हैं। वह जो कहते है और करते है वह समाज सुनता और अपनाता है। अगर एक कबीले का सरदार मुसलमान हो जाए तो उस का सारा कबीला मुसलमान हो जाता है। इसलिए जब कोई सरदार हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आता तो आप उस का आदर करते और बहुत एकाग्रता से उसको धर्म की शिक्षा देते।

एक बार कई सरदार हज़रत मुहम्मद (स.) से मिलने आए और आप (स.) उन को कुछ समझा रहे थे। उसी समय एक अंधे और गरीब मुसलमान साथी (अब्दुल्ला बिन उम्मे मकतूम) भी वहाँ आ गया और कुछ धर्म से संबधित सवाल आप (स.) से पूछने लगे।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने चाहा कि पहले सरदारो से बात पूरी कर लें फिर अंधे साथी को उत्तर दें। सरदारो को धर्म सीखने की इतनी चाह न थी जितनी उन अंधे साथी को थी। ईश्वर के नजर में सरदार और गरीब सब बराबर है। और ईश्वर चाहता है की जिस को धर्म के ज्ञान की अधिक चाह हो पहले उसी को ज्ञान दो। इसलिए ईश्वर ने फौरन पवित्र कुरआन की आयत (८०:१-११) अवतरित करके हज़रत मुहम्मद (स.) को सही तरीका समझाया

(तिरमिजी)

पैग़म्बरों को देवीक दण्ड

● पैग़म्बर को दंड देने के उदाहरण इस प्रकार है,

हज़रत यूनुस (अ.स.) Nineveh समुदाय के लिए पैग़म्बर थे। निनेवाह बगदाद से 250 k.m दूर था। उन्होंने उस समुदाय को बहुत समझाया मगर वह ना माने। आखिर में हज़रत युनूस (अ.स.) ने उस समुदाय के लिए बददुआ (श्राप) दी और वहाँ से दूसरे देश के लिए चल दिए। ईश्वर ने उन्हें दूसरे देश जाने का आदेश नहीं दिया था। और वह ईश्वर के फैसले के खिलाफ जा रहे थे। इसलिए ईश्वर ने उन्हें दंड देने का निश्चय किया। हज़रत यूनुस (अ.स.) एक नाव से दूसरे शहर जा रहे थे। समुद्र में जब तूफान आया और नाव के डूबने का खतरा हुआ तो नाव चलाने वाले ने हज़रत यूनुस (अ.स.) को समुद्र में फेंक दिया और एक बड़ी

मछली उन को निगल गई। इस तरह ईश्वर ने उनको एक बड़ी मछली के पेट में कैद कर दिया। हज़रत यूनुस (अ.स.) को अपनी गलती का अनुमान हुआ। उन्होंने पश्चाताप (तौबा) किया, तब कही जाकर ईश्वर ने उन्हें क्षमा किया। वरना वह कयामत तक मछली के पेट में कैद रहते। (पवित्र कुरआन २१:८७ का सारांश)

● ईश्वर ने जिस शिक्षा या धर्म के साथ हज़रत मुहम्मद (स.) को भेजा था वह यह है की "ईश्वर एक है, और उस का कोई सहायक नहीं है। इस संसार का बनाने, संभालने और चलाने के लिए उस को किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है।" मक्का के लोगों का ऐसा विश्वास था की ईश्वर तो एक है मगर बहुत सारे देवी देवता उस की सहायता करते है। और यही बडा मतभेद मुसलमानों और मक्का वालों में था।

एक मुसलमान के मन में जैसे ही यह विश्वास आ जाएगा की कोई ईश्वर का सहायक है तो वह मुसलमान नहीं रह जाता है। मक्का के सरदार एक षडयंत्र (साजिश) रच रहे थे। वह चाहते थे की मुसलमान इस बात को मान लें कि ईश्वर के सहायक है। इसलिए वह शांति और सदभावना की बात करते और कहते कि, हम तुम्हारी कुछ बात मान लेते है और तुम हमारी कुछ बात मानो। और देवी देवता को कुछ महत्व दे दो। इस घटना का वर्णन पवित्र कुरआन में इस प्रकार है,

'ऐ मुहम्मद (स.)! ये तो इसी में लगे थे कि हमने जो वही (सत्य धर्म का ज्ञान) तुम्हारी ओर अवतरित किया है उससे तुम्हें फेर दें, और तुम ऐसी बात हमारी तरफ से कहो जो हमने अवतरित नहीं की है। अगर तुम ऐसा करते तो वह तुम्हें घनिष्ठ मित्र बना लेते। यदि हम तुम्हें संभाल न लेते तो तुम उनकी ओर कुछ न कुछ झुकने के निकट जा पहुँचे थे। (अगर ऐसा होता तो) हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा दंड देते,और मृत्यु के बाद भी दोहरा दंड देते। फिर तुम हमारे मुकाबले में अपना कोई सहायक न पाते।'(पवित्र कुरआन १७: ७३-७५)

सारांश: -

● इस पाठ का सारांश यह है की ईश्वर ने मनुष्य के पैदा होने के पहले ही पैग़म्बरो को नियुक्त किया था। उसने पैग़म्बरों को सर्वोत्तम वंश, व्यक्तित्व, आचरण और बुद्धि दी।

पैग़म्बरों के जीवनकाल में ईश्वर पैग़म्बरों का मार्गदर्शन करता रहता है और सभी प्रकार के पापों से उनकी सुरक्षा करता है।

और अगर कोई पैग़म्बर जान बूझ कर ईश्वर के आदेश को नहीं मानता या पाप करता है तो ईश्वर उसे फौरन दंड देता है।

धरती पर ऐसा कभी नहीं हुआ कि कोई पैग़म्बर जीवन भर पाप भी करता रहा और पैग़म्बर भी बना रहा।

धरती पर १,२४,००० पैग़म्बर आए और किसी ने कोई बुरा काम नही किया।

धर्म का कोई ग्रंथ कितना ही माननीय हो, अगर उस में लिखा है कि पैग़म्बर ने कोई गलत काम किया या पाप किया है तो वह ग्रंथ गलत हो सकती है मगर पैग़म्बर पाप नहीं कर सकता है।

****

● ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत
(ऋग्वेद 8:73:6)

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी कभी पार नहीं कर पाते।
अर्थात, जिस के कर्म गलत होगे वह कभी सफल ना होगा।

हज़रत मुहम्मद (स.) के पूर्वज

हज़रत आदम (अ.स.):-

● भविष्य-पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वा को विष्णु ने गीली मिट्टी से पैदा किया। प्रदान नगर (जन्नत) के पूर्व हिस्से में, ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ कौस का एक बहुत बड़ा जंगल था। (कौस किलोमीटर से बड़ा होता है) अपनी पत्नी (हव्वा) को देखने की बेताबी से आदम गुनाहवाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कली (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के ज़रिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु के हुक्म को तोड़ डाला। परिणाम स्वरुप उनको पृथ्वीपर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी औलादें हुई। आदम की उम्र ९३० साल थी।

(भविष्य पुराण)

● यही बात कुरआन में भी लिखी है और बाइबिल में भी।

● सनातन धर्म (हिंदु धर्म) में पैग़म्बरों को मनु कहा जाता है। हिंदु धर्म के ग्रंथों में चौदह मनु का जिक्र हैं। हज़रत आदम पहले मनु है। और सातवे मनु के युग में बाढ़ आया था। और उन्होंने ही मनुस्मृति लिखी है।

सभी मानवजाती हज़रत आदम की ही संतान है। इस को ऋग्वेद में ऐसे कहा गया है।

● जन मनुजात। (ऋग्वेद १:४५:१)

सब मनु की संतान है।

इसी बात को पवित्र कुरआन में इस तरह कहा गया है; ''लोगों, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।'' (कुरआन ४९:१३)

तो हज़रत आदम (अ.स.) हमारे, आपके, हज़रत मुहम्मद (स.) और सभी के सबसे पहले पूर्वज है।

हज़रत नूह (मनु) (अ.स.):-

● मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल (युग) में एक बहुत बड़ा बाढ़ (Flood) आया था। जिस में केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

नूह (मनु) ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर जात के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को सवार कर लिया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब में डूब गयी।

यही बात कुरआन में भी लिखी है (पवित्र कुरआन ११-२५-४८) यही बात बाइबल में भी लिखी है। (जेनिसिस ६-८)

हज़रत नूह (मनु) यह हज़रत आदम (अ.स.) के नवै वंशज है। इन दोनों के बीच जो लोग है उन के नाम इस प्रकार है।

आदम-शीथ-अनुश-कैनन-महलैल-यारीद-अंकुश (इडविल) -मुटू शल्क- लूनिक-नूह (www.wikipedia.org)

नूह या मनु हमारे आपके हज़रत मुहम्मद (स.) और सभी लोगों के दूसरे प्रसिद्ध पूर्वज है।

हज़रत इब्राहीम (अबीराम) (अ.स.):-

● एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं, जैसे; अल्लाह, मालिक, रहीम, रहमान इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल ९९ नाम हैं। इस में से कुछ नाम उसके विशेष गुणों के लिए हैं। जैसे; खालिक़ अर्थात पैदा करने वाला (ईश्वर)। क्योंकि ईश्वर के अलावा और कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है। मालिक यानि (Owner) ईश्वर के अलावा इस संसार का और कोई मालिक नहीं है। इस लिए यह भी ईश्वर का विशेष नाम है।

● लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी हैं, जो उसकी स्वभाव (Features) के अनुसार हैं। जैसे रहीम, अर्थात अत्याधिक दया करने वाला। 'ग़फ़ूर' अर्थात क्षमा करने वाला।

कभी-कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैग़म्बरों को भी याद करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) को रहीम और ग़फ़ूर के नाम से याद किया है। (पवित्र कुरआन १०:१२८) क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालू और क्षमा करनेवाले थे।

इसी प्रकार हिन्दु धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर ने बहुत से पैग़म्बरों को अपने ही नामों से याद किया है, उदाहरणत: हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग किए। एक भाग पुरुष का तथा दूसरा भाग स्त्री का बन गया।

यही बात हदीस और बाइबल में भी है, कि हज़रत आदम (अ.स.) के शरीर के बायीं ओर (Left side) से हज़रत हव्वा (अ.स.) को पैदा किया गया।

तो हरिवंश पुराण में जिसे ब्रम्हा कहा गया है, वह वास्तव में ईश्वर स्वयं नहीं, हज़रत आदम (अ.स.) हैं।

इसी प्रकार अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को ब्रह्मा कहा गया है, और लिखा है कि ब्रम्हा (अ.स.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (कुर्बानी) दी। यही बात पवित्र कुरआन में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुर्बानी दी थी। (पवित्र कुरआन३७-१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.स.) के द्वारा किए गए कुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा कहा गया है वह स्वंय ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं। हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को यहुदी, ईसाई और मुसलमान सभी एक महान पैग़म्बर मानते है और हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हज़रत मुहम्मद (स.) के पूर्वज भी है।

● हज़रत इब्राहीम (अ.स.) मनु के दसवे वंशज है। उनके नाम इस प्रकार है।

नूह(मनु)-साम-अरफकशद-शालीख-अबीर-फालिखा-अब्रागु-शाहरु-ताहुर-तारीह(अझहूर)-इब्राहीम

(www.wikipedia.org)

हज़रत इस्माइल (अ.स.) (अर्थवा) :-

● अथर्ववेद में जो ब्रम्हा (हज़रत इब्राहीम) का अपने बेटे अथर्व (हज़रत इस्माइल) की कुर्बानी देने का वर्णन है उसे पुरुष मेधा कहा गया है। पुरुष मेधा के दो श्लोक इस प्रकार है,

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत् ।
मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शत:
तद् वा अथर्वरा: शिरो देवकोश: समुब्जित:
तत् प्रारो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मन:
(अथर्ववेद १०:२:२६)

आखरी श्लोक का अर्थ है, ब्रम्हा ने जहाँ अथर्वा की कुर्बानी देनी चाही, वहा फरिश्ते रहते है, और ईश्वर उस की रक्षा करता है।

ऊपर दिए गए अथर्ववेद के श्लोक में जिसे अथर्वण कहा गया है उनको अरबी भाषा में हज़रत इस्माइल कहा जाता है और वह हज़रत मुहम्मद (स.) के ६१ वे वंशज है।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और अथर्वा (हज़रत इस्माइल) के बीच जो प्रसिद्ध लोग गुजरे है केवल उन के नाम इस प्रकार है।

((अथर्वा)इस्माइल-सबाफ-यासाब-नाकर-अदनान-माअद-नाजर-नासर-इल्यास-कनाना-नफ्र-मालिक-फिक्र-गालिब-लोवई-काब-मुरा-खिलाब-कोसाय-अब्द मनाफ-हाशिम-अब्दुल मुत्तलिब- अब्दुल्लाह-पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.))

(www.victorynewsmagazine.com/Ancestryofprophetmuhammeds.htm)

मक्का के रहवासियों की विशेषता :-

● आज भारत में व्यापार की दुनिया में मारवाडी समुदाय का राज है। राजस्थान में ना वर्षा हैं ना खेती बाड़ी। होना तो यह चाहिए था की वहाँ के लोग भूखे मरते, मगर वहॉ के लोग तो देश पर राज करते हैं। ऐसा क्यों?

क्योंकि उन के पूर्वज कभी गरीब किसान ना थे। किसान आसमान देखता रहता है। वर्षा हुई तो पेट भरा, वरना भूखे जीवन गुज़ारते रहता है। मगर राजस्थान के लोग जिन का वर्षा से कोई लेना देना नहीं है वह अपने बाजुओं की ताकत से रोटी कमाते रहें। बुद्धी का प्रयोग करते रहें और व्यापार और सेना में बहुत उन्नति करके जीवित रहे।

● ईश्वर ने अपना घर (काबा) को धरती के केंद्र पर बनाया है। और वहाँ का वातावरण रेगिस्तान से भी ज्यादा कठिन (सख्त) कर दिया है। वहाँ खेती बाड़ी की कोई संभावना ही नहीं। और ना किसी मानसिक गुलाम और गरीब किसान के वहाँ बसने की कोई संभावना है।

इसलिए जो भी मक्का में बसे वह मारवाड़ीयों से अधिक व्यापारी और राजपूतों से अधिक बहादूर हुए। क्योंकि वहाँ जीवित रहना राजस्थान से अधिक कठिन था।

मक्का शहर कैसे बसा?

● जब हज़रत इस्माईल (अथर्वा) का जन्म हुआ तो हज़रत इब्राहीम (अबिराम-ब्रम्हा) ने हज़रत इस्माईल और उन की माता हज़रत हाजरा को ले जा कर काबा शरीफ के पास बसा दिया। और ईश्वर ने चमत्कारिक रुप से काबा शरीफ के पास एक ऐसा झरना (Spring) जारी करा दिया की उसका पानी जिस उद्देश्य से पीया जाए वह वैसा फल देता है। इस झरने को ज़मज़म कहते है। अगर कोई इसे भूख मिटाने कि नीयत से पीए तो पेट भर जाता है। धन पाने कि नीयत से पीए तो धनी हो जाता है। बीमारी अच्छी होने की नीयत से पीते तो बीमारी दूर हो जाती है। हाजी हज से आते समय यह पानी जरुर लाते है और उपहार के तौर पर मित्रों में बांटते है। तो इसी चमत्कारी आबे ज़मज़म के कारण दूर-दूर से कबीले आते गए और मक्का शहर बसता गया। हज़रत मुहम्मद (स.) के समय इस शहर की जनसंख्या लगभग ६० हजार थी।

● काबा को फरिश्तों ने धरती पर बहुत पहले बनाया था, मगर यह मनु (हज़रत नुह) के जमाने में आए बाढ़ में गिर गया था।

● जब हज़रत इस्माईल (अथर्वा) बड़े हुए तो हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत इस्माईल (अ.स.) ने मिल कर इस को फिर बना दिया। तब से हज़रत इस्माईल (अ.स.) और उनके

वंशज ही इस के विश्वस्त (Trustee) रहें।

● काबा को हज़रत इस्माईल (अ.स.) (अथर्वा) और हज़रत इब्राहीम ने फिर से बनाया था इसलिए अथर्ववेद में काबा की प्रशंसा में पांच श्लोक है (१०-२-२९ से ३३ तक) उसमें से एक इस प्रकार है।

तस्मिन हिररायये कोशे त्र यरे त्रिप्रतिष्ठते
तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रह्मविदो विदुः
(अथर्वेद १०:२:३२)

● अर्थात प्रार्थना के लायक उस ईश्वर के घर में तीन स्तंभ (Column) और तीन बीम (Beam) हैं और यह घर अमर जीवन का केंद्र है। ईश्वर की प्रार्थना करनेवाले इस बात को जानते हैं।

ऊपर का चित्र काबा शरीफ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)

Inside view

(www.youtube.com Link **http://youtu.be/dHTZbn3OZrw** पर काबा शरीफ के अन्दर का दृश्य आप देख सकते है, इसमें तीन स्तंभ साफ नज़र आते है।)

● पदम पुरान में काबा शरीफ को आदी पुष्कर तीर्थ कहा गया है और उस में लिखा है कि, ''सभी तीर्थों में आदि पुष्कर तीर्थ सब से प्राचिन तीर्थ है। आदि पुष्कर तीर्थ जाकर स्नान करने से मुक्ति मिलती है।''

(पदम पुरान, कल्यान, ऑक्टोबर १९४४, पेज नं ९६, गोरखपूर से प्रकाशित)

इस श्लोक में जो स्नान का वर्णन है यह जमजम के पानी से स्नान करने का वर्णन है।

● हज़रत इस्माईल (अ.स.) के देहांत के बाद जैसे काल व्यतीत हुआ लोगों ने एक ईश्वर को छोड़ कर अनेक देवी देवताओं को पूजने लगे। काबा शरीफ के अंदर ३६० मूर्तियाँ रखी हुई थी। लोगों के ऐसे पापों से नाराज़ हो कर ईश्वर ने अपनी कृपा उन से हटा ली और जमजम का चमत्कारी कुआ सूख गया। और एक लंबी मुददत तक सूखा रहा और उस के निशान भी मिट गए।

हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा :-

हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा का नाम आमीर था। मगर आप अब्दुल मुत्तलीब (रजि.) के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप बहुत ही समझदार, दानी और आकर्षक व्यक्तित्व वाले इन्सान थे। आप अपने कबीले के सरदार थे और हज के लिए मक्का आने वाले हाजियों के खान-पीने का इन्तेजाम करते थे। आप एक अल्लाह को मानने वाले थे। रमज़ान के महीने में हिरा गुफा में एक महीने तक एक अल्लाह की इबादत (प्रार्थना) करते रहते। और वापस आकर गरीबों को खाना खिलाते।

काबा शरीफ के पास जो जमजम का चमत्कारिक कुआँ था। और लोगों के मूर्ति पूजा से क्रोधित होकर ईश्वर ने जिस का पानी सुखा दिया। कुछ समय बाद वह कुआँ पट कर धरती के बराबर हो गया।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब (रजि.) ने अपने पुरखों से इस चमत्कारी ज़मज़म के कुँऐ के बारे में सुना था। और आप चाहते थे की अल्लाह

उनपर फिर कृपा करें और ज़मज़म का पानी फिर प्रदान करे।

एक रात अल्लाह ने उन्हें सपने में वह जगह बता दिया जहाँ ज़मज़म का कुआँ था। मगर उस समय वह दो मूर्ति 'इस्नाफ' और 'नाइला' के बीच था। और वहाँ बली के ऊँट कुर्बान होते थे। इसलिए लोगों ने इस जगह को खोदना बुरा समझा और आप की कोई मदद न की।

मजबूरन हज़रत अब्दुल मुत्तलिब (रजि.) ने अपने बड़े बेटे हारीस (रजि.) के साथ वह जगह खोदा और ज़मज़म का पानी निकल आया।

इस ज़मज़म की खोज से आप का सम्मान और बढ़ गया।

हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा :-

जब लोगों ने हज़रत मुत्तलिब (रजि.) का कुआँ खोदने में मदद नहीं किया और आप को अपने एकलौते बेटे के साथ कुआँ खोदना पड़ा, तो आप ने अल्लाह से दस बेटों के लिए दुआ किया। और यह मन्नत मांगा की अगर उन के दस बेटे जवान हुए तो एक बेटे को अल्लाह के राह में कुर्बान करेंगे।

अल्लाह ने आप को दस बेटे दिए। जब वह जवान हुए तो लॉटरी द्वारा कुर्बान होने वाले बेटे का नाम निकाला गया। तो हज़रत अब्दुल्ला का नाम निकला। हज़रत अब्दुल्ला सबसे छोटे बेटे थे, और हर तरह से अपने भाईयों में सबसे अच्छे और चहीते थे। बहनों ने रो रोकर बाप पर कुर्बानी ना करने का दबाव डाला।

विद्वानों से जब इस समस्या का उपाय पूछा गया तो उन्होंने कहा की हज़रत अब्दुल्ला और कुर्बानी के लिए दस ऊंट इन के बीच लॉटरी से नाम निकालो। अगर अब्दुल्ला का फिर से कुर्बानी के लिए नाम आए तो कुर्बानी के ऊंटों की संख्या बढ़ाते जाओ।

इस तरह कई बार लॉटरी से नाम निकाला गया आखिर १०० ऊंट की कुर्बानी पर हज़रत अब्दुल्ला का नाम नहीं आया और उनकी जान बच गई।

यही हज़रत अब्दुल्ला जिन को हज़रत इस्माइल (अ.स.) (या अथर्वा) की तरह कुर्बान होना था हज़रत मुहम्मद (स.) के पिताश्री है।

हज़रत अब्दुल्ला नेक बाप के नेक बेटे थे। बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व था। माथे से पवित्रता की ज्योती निकलती थी। जिसे देख कर एक ज्युतीश महिलाने (उम्में कताल बिन नोफी) आप से विवाह करना चाहा। मगर हज़रत अब्दुल मुत्तलीब ने आप की शादी मदीना के आदरणीय कबीले बनु जोहरा के सरदार वहब बीन अबद मुनाफ की बेटी हज़रत आमना से कर दिया।

उस समय हज़रत अब्दुल्ला २५ वर्ष और हज़रत आमना २० वर्ष की थीं।

शादी के बाद हज़रत अब्दुल्ला तीन दिन मदीना रहे फिर कुछ महीने मक्का में अपने घर पर हज़रत आमना के साथ रहे। उन्हीं दिनों एक काफिला (Carvan) व्यापार के लिए शाम (Syria) जा रहा था। हज़रत अब्दुल्ला भी उन्ही के साथ व्यापार के लिए शाम गए। वापसी में मदीना के पास तबियत खराब हुई। आप मदीना में अपने ननिहाल (बनी अदद बिन नजजार) में ठहर गए और एक महीना बीमार रहने के बाद आप का देहांत हो गया।

हज़रत अब्दुल्ला के देहांत के सात महीने बाद हज़रत मुहम्मद (स.) 20/22 अप्रैल 570 AD को पैदा हुए।

Lunar Calendar के अनुसार यह १२ रबीउल अव्वल (12th day of Moon) था।

****

हजरत मुहम्मद (स.) का परिवार

● हज़रत मुहम्मद के नौ चाचा थे।

१) हारीस २) कसम ३) अबुलहब ४) हज़रत अबुतालीब ५) हज़रत अब्बास ६) हज़रत हमज़ा ७) ज़ुबैर ८) मकुम ९) साफर/गीदाक

हज़रत अबु तालीब ने हज़रत मुहम्मद (स.) को अपने बच्चे जैसा पाला और आप (स.) के ५० वर्ष की आयु तक आप (स.) की मक्का वालों से रक्षा करते रहें।

हज़रत अब्बास आप हज़रत मुहम्मद (स.) को बहुत चाहते थे, मगर बहुत देर से मुसलमान हुए। आप बहुत अमीर थे। आप financer थे। हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बहुत दिन बाद जो अब्बासी खानदान के बहुत सारे खलीफा हुए वह आप की संतानों की संतान थे।

हज़रत हमज़ा यह हज़रत मुहम्मद (स.) के चाचा थे मगर लगभग एक ही आयु के थे। आप बहुत बहादुर थे। आप जंगे उहद में शहीद हो गए थे।

अबुलहब यह बहुत आकर्षक व्यक्तित्व वाला था। हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म की खुशखबरी देने वाली दासी को खुश होकर आजाद कर दिया। मगर आप (स.) के पैग़म्बरी के बाद यह आपका सबसे बड़ा दुश्मन हो गए।

बाकी पांच चाचाओं ने भी इस्लाम स्वीकार नहीं किया था।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के तीन बेटे और चार बेटियाँ पैदा हुईं। तिनों बेटों का बचपन में ही देहांत हो गया था। इन सात सन्तानों में से छह हज़रत खदीजा (रजि.) से पैदा हुए। और सब से छोटे बेटे हज़रत इब्राहीम हज़रत मारया (रजि.) से मदीना में पैदा हुए थे। तीन बेटों के नाम इस तरह है। १) हज़रत कासीम २) हज़रत अब्दुल्ला (ताहीर/तय्यब) ३) हज़रत इब्राहीम.

● चारों बेटियों के नाम इस तरह है।

१) हज़रत जैनब (रजि.) २) हज़रत रुकैया (रजि.) ३) हज़रत उम्मे कुलसूम (रजि.) ४) हज़रत फातिमा (रजि.)

हज़रत जैनब (रजि.) :-

हजरत जैनब (रजि.) सब से बड़ी बेटी थीं। आप का ब्याह आप के खाला के बेटे हज़रत अबुल आस से हुआ था। आप की दो संताने थी। बेटे हज़रत अली बिन अबु आस (रजि.) और बेटी हज़रत उमामा बिन्ते अबुल आस (रजि.)। मक्का से मदीना जाते समय अबुजहल के बेटे अकरामा ने आप के ऊँट को जख्मी कर दिया। आप उंट से नीचे पत्थर पर गिरी और घायल हो गई। उस समय आप गर्भवती थी। उसी दुर्घटना के कारण कुछ वर्ष बाद आप का देहांत हो गया।

हज़रत रुकैया (रजि.) :-

हज़रत रुकैया (रजि.) हज़रत जैनब (रजि.) से छोटी थीं। आप का विवाह पहले अबुलहब के बेटे उतबा से हुआ (बिदाई नहीं हुई थी)। इस्लाम के दुश्मनी में अबुलहब ने यह रिश्ता तोड़ दिया, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप का विवाह हज़रत उस्मान (रजि.) से कर दिया। आप ने पहले हज़रत उस्मान (रजि.) के साथ हब्शा (इथोपीया)

हिजरत किया। फिर मदीना आ गई। आप का एक बेटा था जिन का नाम अब्दुल्ला था। छह वर्ष की आयु में अब्दुल्ला का देहांत हो गया। 624 AD में हज़रत रुकैया (रजि.) का भी चेचक की बीमारी में देहांत हो गया।

हज़रत उम्मे कुलसूम (रजि.) :-

आप हज़रत रुकैया (रजि.) से छोटी थीं। आप का भी अबु लहब के दूसरे बेटे अतीबा से विवाह हुआ था (बिदाई नहीं हुई थी) और अबुलहब ने दुश्मनी में यह रिश्ता भी तुड़वां दिया था।

जब हज़रत रुकैया (रजि.) का देहांत हुआ तो हज़रत उस्मान (रजि.) एक पैगंबर से रिश्ता टूटने के कारण बहुत उदास रहने लगे थे। हज़रत उस्मान (रजि.) बहुत ही नेक, शर्मीले और उन लोगों में से थे जिन को धरती पर ही जन्नत की खुशखबरी मिल गई थी। आप ने हज़रत रुकैया (रजि.) का बहुत ख्याल रखा था। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत उम्मे कुलसूम (रजि.) का विवाह भी हज़रत उस्मान (रजि.) से कर दिया। विवाह के छह वर्ष बाद (631 AD) आप का भी किसी बीमारी में देहांत हो गया। आप को कोई संतान ना थीं।

हज़रत फातिमा (रजि.) :-

आप हज़रत मुहम्मद (स.) की सब से छोटी बेटी थी। (624 AD) में आप का विवाह हज़रत अली (रजि.) से हुआ। आप की छह संताने हुई जिन में से दो का बचपन में देहांत हो गया। जो चार जीवित रहे वह बहुत प्रसिद्ध हुए, उन के नाम इस तरह हैं।

१) हज़रत हसन बिन अली
२) हज़रत हुसेन बिन अली
३) हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते अली
४) हज़रत जैनब बिन्ते अली

हज़रत फातिमा (रजि.) का देहांत किसी बीमारी से 633 AD में हो गया था।

● हज़रत मुहम्मद (स.) का पहला विवाह हज़रत खदीजा (रजि.) से २५ वर्ष की आयु में (595 AD) में हुआ था। हज़रत खदीजा (रजि.) का देहांत 619 AD में हुआ। हज़रत खदीजा (रजि.) के देहांत के बाद आप (स.) ने अपने कमसिन बेटियों के देखभाल के लिए हज़रत सौदा (रजि.) से विवाह किया था। विवाह के समय हज़रत सौदा (रजि.) बहुत अधिक आयु की थी। आप का कद लम्बा और वज़न ज्यादा था। हज़रत खदीजा (रजि.) के देहांत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) चार वर्ष तक केवल एक पत्नी (हज़रत सौदा (रजि.)) के साथ रहे।

● हज़रत सौदा (रजि.) के बाद आप ने विभिन्न कारणों से जिन महीलाओं से विवाह किए उन के नाम इस तरह है।

३) हज़रत आएशा (रजि.) ४) हज़रत हफ्सा (रजि.) ५) हज़रत जैनब बिन्ते खज़िमा (रजि.) ६) हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) ७) हज़रत उम्मे हबीबा (रजि.) ८) हज़रत जैनब बिन्ते हजश (रजि.) ९) हज़रत जुवैरिया (रजि.) १०) हज़रत सूफिया (रजि.) ११) हज़रत रेहाना (रजि.) १२) हज़रत मैमूना (रजि.).

● हज़रत जैद (रजि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के गुलाम थे। आप (स.) ने उन को आज़ाद करने के बाद अपना बेटा बना लिया था। आप 'जैद बिन मुहम्मद' के नाम से पुकारे जाते। मगर ईश्वर ने असली बाप की जगह दूसरों का नाम लगाने से मना किया तो आप 'जैद बिन हारिस' के नाम से पहचाने जाने लगे। आप का एक बेटा था जिन का नाम उसामा था। हज़रत मुहम्मद (स.) इन दोनों बाप बेटों से बहुत मुहब्बत करते थे। और यह दोनों आप के परिवार के सदस्य थे।

****

हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी से पहले का जीवन

● इस जमाने में बच्चों को बोर्डींग स्कूलो में अच्छी पढ़ाई के लिए ड़ाला जाता है। उस जमाने में बच्चों को देहातो में भेजा जाता था। ताकि बच्चा साफ सुथरे माहोल में रहे। भाषा अच्छी हो। बच्चा मेहनती और बहादुर बने।

इसलिए चार महीने की आयु से पाच वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत हलीमा (रजि.) के पास देहात में रहें।

● जब आप छह वर्ष के थे आप की माता हज़रत आमना (रजि.) आप को लेकर अपने मायके मदीना गईं। आप वहाँ एक महीने रहीं, फिर मक्का वापस आते समय अबुवा के पास आप बीमार हो गई और वही आप का 576 AD में देहांत हो गया। आप की खादीमा (Maid) उम्में ऐमन (रजि.) जो आप के साथ थीं वह हज़रत मुहम्मद (स.) को लेकर मक्का आ गई और आप (स.) को आप (स.) के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलीब को सोंप दिया।

● आप (स.) के दादा आप (स.) को बहुत चाहते थे। उन्होंने आप (स.) की बहुत प्यार और मुहब्बत से परवरिश की, मगर जब आप (स.) आठ वर्ष के थे तो उनका भी 578 AD में देहांत हो गया।

● अपने देहांत से पहले उन्होंने आप (स.) को आप (स.) के सगे चाचा हज़रत अबु तालिब को सोंप दिया। हज़रत अबु तालिब भी आप को जी जान से ज्यादा चाहते थे। और चालीस वर्ष तक आप (स.) की देखभाल और रक्षा करते रहे।

● हज़रत अबुतालिब व्यापारी थे। आप का शाम और मक्का के बीच गेंहूँ और इत्तर का व्यापार था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप ही से व्यापार की कला सीखी और २५ वर्ष की आयु में ही साझेदारी (Partnership) में आप (स.) भी अपना व्यापार करने लगे।

● हज़रत अबुतालिब का परिवार बड़ा था। खर्चे ज्यादा थे, इसलिए वह आप (स.) को कारोबार के लिए अधिक पूंजी ना दे सके। इसलिए आप (स.) साझेदारी में व्यापार करते रहे। मेहनत और भागदौड़ आप (स.) की रहती और पूंजी किसी और का। और नाफ दोनों बांट लेते।

आप (स.) स्वभाविक रुप से इमानदार, सच्चे और वादे के पक्के थे। इसलिए लोग आप को अमीन (सच्चा) पुकारते। और खुद आप (स.) से साझेदारी के इच्छुक रहते।

● हज़रत खतीजा (रजि.) एक इन्तेहाई पाकदामन (Pious) समझदार और दौलतमंद (Rich) महिला थी। वह खुद तो व्यापारिक सफर नहीं करती, मगर लोगों को पूँजी दे कर साझेदारी में व्यापार करती।

जब उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) के ईमानदारी, सच्चाई और समझदारी का चर्चा सुना तो आप (स.) को भी व्यापार का सामान

दे कर अपने गुलाम मैसरा के साथ शाम (Syria) भेजा। आप (स.) का यह व्यापारिक सफर बहुत लाभदायक रहा और हज़रत खतीजा (रजि.) को अपेक्षा से अधिक लाभ हुआ।

- हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में साधारण लोग इतना तो जानते थे की आप (स.) इन्तेहाई पवित्र, सच्चे, ईमानदार, वादे के पक्के है। इसलिए वह लोग आपको सादिक और अमीन (सच्चा) कह कर पुकारते। मगर जो लोग आप (स.) के साथ दिन रात रहते थे, वह यह अनुभव भी करते थे के आप (स.) के साथ बहुत विचित्र घटनाएँ भी होती हैं। जैसे अगर आप (स.) किसी पेड़ के नीचे बैठ जाएँ और अगर आप पर धूप आती हो तो उस पेड़ की डालें अपने आप ऐसे मुड़ जाती के आप (स.) पर साया हो जाता। जब आप (स.) तप्ति धूप में रेगिस्तान में चल रहे हो तो कोई अदृश्य शक्ति आप (स.) के सर पर साया किए रहती। आप (स.) के पसीने में दुर्गंध नहीं था। इत्यादि।

हज़रत खदीजा (रजि.) के गुलाम मैसरा ने यह सारी बातें आप को बता दी।

- हज़रत खदीजा (रजि.) सिर्फ ४० वर्ष की थी, मगर इतनी कम उमर में भी तीन बार विधवा हो चुकी थीं। और आप के जीवन में एक खालीपन था। हज़रत मुहम्मद (स.) की सच्चाई, इमानदारी, आदरणीय खानदान, और यह देविक सुरक्षा को देखा तो फिर एक बार आप के मन में एक खुशहाल और संम्पूर्ण जीवन में सपने जागे और आपने अपनी सहेली नफीसा बिन्ते मनबा द्वारा विवाह का पैगाम भेजे। हज़रत खदीजा के पिता का भी देहांत हो गया था, इसलिए उनके चाचा उमरो बिन असद, हज़रत मुहम्मद के चाचा हज़रत अबुतालिब और हज़रत हमज़ा ने आपस के सलाह मशवरे से आप दोनों का निकाह 595 AD में कर दिया।

- इस के बाद आप (स.) १५ वर्ष तक लोगों के बीच एक अच्छे पति, अच्छे पिता और समाज के दु:ख सुख की चिंता करने वाले एक आदर्श पुरुष की तरह रहे। और पैगंबरो को एक आदर्श पुरुष के रुप में समाज में एक लंबे समय तक रखने की अल्लाह की यह एक परम्परा है।

इस का फायदा यह है की जब भी यह आदर्श पुरुष कहता है मैं अल्लाह का पैगंबर हूँ। तो लोग जानते है कि इस ने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला है इसलिए यह आज भी सच कह रहा हैं। जब पैगम्बर कहता है की असहाय की सहायता करो, तो लोग यह नहीं कह सकते के खुद तो इसने ४० साल तक लोगों के साथ अन्याय किया और अब हमें न्याय का पाठ पढ़ा रहा है। अर्थात वह पैगम्बर को, उस के वंश को, उसके आचरण को, या उसकी हर चीज को अच्छी तरह जानते है। और उस को ना मानने के लिए उसमें कोई दोष नहीं निकाल सकते हैं।

ऐसा ही हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ हुआ। मक्का के रहवासियों ने उनकी शिक्षा को अहंकार, घमंड, हटधर्मी, जिद में आकर स्वीकार नहीं किया। मगर वह हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण पर कभी उंगली ना उठा सके। उन्हें हमेशा मानना पड़ा के आप एक आदर्श पुरुष हैं। (सि-राते अहमद मुजताबा (स.))

****

हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी के बाद का जीवन

३७ वर्ष की आयु से ४० वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (स.) रात में सच्चे सपने देखते। आप (स.) का मन लोगों से दूर अकेले में एक ईश्वर की याद में मग्न रहने की चाह करता। और आप (स.) घर से खाने पीने का कई दिनों का सामान लेकर पहाड़ के शिखर पर एक हिरा नाम के गुफा में चले जाते और अल्लाह को याद करते रहते।

(मक्का के लोग एक अल्लाह को मानते थे मगर साथ में बहुत सारे देवी देवता की पूजा भी करते। धरती पर इस मूर्ति पूजा को रोकने के लिए ही अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बर बनाया था।)

इसी हिरा गुफा में ईश्वर की याद करते समय हज़रत मुहम्मद (स.) को ईश्वर ने हज़रत जिब्रईल (अ.स.) द्वारा ४० वर्ष की आयु में यह बताया के आप (स.) एक पैगम्बर हैं और आप को लोगों का मार्गदर्शन करना है। हज़रत मुहम्मद (स.) ४० वर्ष की आयु से ६३ वर्ष की आयु तक अर्थात २३ वर्ष तक ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाते रहे।

२३ वर्ष का यह वह काल है जिस में बहुत सारे लोग आप (स.) को समझने में गलती करते है। आप (स.) के जीवन को अच्छी तरह समझने के लिए मैं सारांश में आप (स.) को उन के पैगम्बरी के २३ वर्ष के जीवन के बारे में बताता हूँ।

● ४० वर्ष की आयु में ईश्वर ने आप (स.) को धर्म का ज्ञान देना शुरु किया। और अगले २३ वर्ष तक देते रहे। पहले तीन वर्ष तक आप को केवल अपने दोस्तों और रिश्तेदारों में ही धर्म के प्रचार की अनुमति थी। इस तीन वर्ष के धर्म प्रचार से केवल ४० लोग मुस्लिम हुए थे।

● चौथे वर्ष (614 AD) में आप को साधारण जनता में धर्म का प्रचार करने का आदेश मिला। मूर्ति पूजा ना करने की शिक्षा लोगों को पसंद नहीं आयी, और सारा शहर आप का दुश्मन बन गया।

● पांचवे वर्ष से १३ वर्ष तक आप मक्का में ही रहें। मगर आप के मानने वालो को बहुत यातनाएँ दी जाती रही, इसलिए वह सब मक्का शहर छोड़कर चले गए। उन सब की संख्या लगभग ८० थी।

● हज़रत मुहम्मद (स.) का कबीला बहुत आदरणीय और शक्तिशाली था। आप (स.) के कबीले के बहुत सारे लोग मुस्लिम नहीं हुए थे फिर भी वह आप की रक्षा करते। जब मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.) को परेशान करने का अवसर ना मिला तो उन्होंने आप (स.) के पूरे कबीले का 615 AD से 619 AD तक सामाजिक बहिष्कार कर दिया। यह तीन वर्ष आप (स.) के पुरे कबीले के लिए बहुत कठिन थे।

● तीन वर्ष बाद सामाजिक बहिष्कार खत्म हुआ मगर इसी वर्ष (619 AD) में आप की आदरणीय पत्नी हज़रत खदीजा और आप के प्रिय चाचा हज़रत अबुतालिब का देहांत हो गया।

● हज़रत अबुतालिब के बाद आप (स.) के

कबीले का सरदार अबुलहब हुआ। यह आप (स.) का पक्का दुश्मन था। इस ने अपने कबीले द्वारा आप (स.) की सुरक्षा से इन्कार कर दिया। और आप (स.) पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े।

● मक्का से निराश होकर आप ने (June 619 AD) को मक्का के पास ही दूसरे शहर ताऐफ का सफर किया और वहाँ धर्म प्रचार करना चाहा। मगर उन लोगों ने आप (स.) के साथ बहुत दुर्व्यवहार किया। और आप (स.) को इतने पत्थर मारे के आप जख्मों से चूर हो गए।

● पत्नी और चाचा का देहांत। मक्का का हर व्यक्ति आप का दुश्मन। ताऐफ में असफलता, इन कारणों से आप (स.) बहुत दु:खी रहने लगे, तो अल्लाह ने हज़रत जिब्रईल (अ.स.) द्वारा आप को (July 620 AD) की एक रात पहले एक देविक घोड़ा जिस का नाम 'बुर्राक' था उसपर सवार करके उन्हें मक्का से जेरुसलेम (इस्राईल) ले गया। वहाँ आप (स.) ने धरती के सभी पैग़म्बरों को नमाज़ पढ़ाया। फिर वहाँ से अल्लाह ने आसमान पर बुलाकर स्वर्ग लोक का सैर कराया। आप (स.) ने मरने के बाद जो होना है वह अपनी आंखो से देखा। इस से आप का मनोबल और बड़ा और आप की निराशा कम हो गई।

● अरब के लोग मूर्ति पूजा तो करते थे। मगर वह इस सत्य को जानते थे की इस सृष्टि का रचयिता केवल अल्लाह है। और जो हज़रत इब्राहीम ने हज़ का पैगाम दिया था उसके मुताबिक वह हज़ भी करते।

हज के अवसर पर सारे अरब से लोग मक्का जमा होते तो इस अवसर पर हज़रत मुहम्मद (स.) उन को अल्लाह के सच्चे धर्म के बारे में बताते। यहुदी और ईसाइयों के धर्म ग्रंथों में एक पैग़म्बर आने वाला हैं ऐसी भविष्यवाणी थी और वह उस पैग़म्बर की राह देख रहे थे। और वह अरबों को धमकी देते की उस पैग़म्बर के आने के बाद हम और शक्तिशाली हो जाएंगे और तुम सब को पराजित कर देंगे।

इसलिए अरब वासीयों को भी पता था की एक पैग़म्बर आने वाला है। 620 AD में कुछ मदीना के हाजीयों ने जब हज़रत मुहम्मद (स.) की बात को सुना तो वह पहचान गए के यही वह पैग़म्बर है जिस के आने की चर्चा यहुदी और इसाई करते थे। वह मुस्लिम हो गए। यह छह (६) लोग थे। अगले साल 621 AD में वह हज पर अपने साथ और लोग लाए, वह भी मुस्लिम हो गए। इसी तरह 622 AD को हज के अवसर पर मदीना के ७५ लोग मुस्लिम हुए। उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) से धर्म सिखाने के लिए एक शिक्षक मांगा। आप (स.) ने हज़रत मुसेब बिन अमीर (रजि.) को उन के साथ कर दिया। हज़रत मुसेब (रजि.) मदीना गए और आप के धर्म प्रचार से मदीना के बहुत सारे लोग मुस्लिम हुए।

● काबा शरीफ में ३६० मूर्तियाँ रखी हुई थी। जिस के दर्शन के लिए साल भर लोग आते रहते और मक्का वालों का व्यापार चलता रहता। इस्लाम धर्म के आते ही मूर्ति पूजा और मक्का वालों का व्यापार बंद हो जाता था। इसलिए जब मक्का के लोगों को मदीना में इस्लाम के फैलने की खबर हुई तो वह बहुत क्रोधित हुए और हज़रत मुहम्मद (स.) को ही खत्म कर देने का फैसला किया। जब आप (स.) को उन के इरादों का पता चला तो आप 12 और 13 Sep 622 AD के बीच की रात को मक्का से मदीना चले गए। यह पैग़म्बरी का तैरहवाँ वर्ष था।

● मक्का में हज़रत मुहम्मद (स.) और दो चार

मुस्लिमों को छोड़ कर सारे मुर्ति पूजा करने वाले थे। इस लिए मक्का में हज़रत मुहम्मद (स.) की सारी शिक्षा बहुत Basic होती। अर्थात इस संसार का रचयिता केवल एक ईश्वर है इसलिए उस एक ईश्वर को छोड़ कर और किसी के सामने माथा मत टेको। मगर मदीना में बहुत सारे लोग मुस्लिम हो गए थे और मुस्लिम दूसरे शहरों से भी मदीना आकर शरण ले रहे थे, इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने पैग़म्बरी के चौदहवे वर्ष मदीना में कई मस्जिदें बनाई और एक इस्लामी समाज कायम किया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) मदीने आ गए और वहाँ मुस्लिमों की संख्या बढ़ने लगी तो मक्का वालों ने मदीना से भी मुस्लिमों का सफाया करने का ठान लिया। युद्ध के खर्च को पूरा करने के लिए उन्होंने ऐसी योजना बनाई के मक्का शहर का हर व्यक्ति व्यापार में धन लगाए और उस से जो नफा हो उसे युद्ध के लिए दान करें।

● मक्का वाले शाम (Syria) और यमन से व्यापार करते थे। मदीना, मक्का और शाम के बीच रास्ते में है। जब हज़रत मुहम्मद (स.) को इन के योजना का पता चला तो इससे पहले के वह शाम से व्यापार करके धन कमाएँ और मदीने पर आक्रमण करें। आप ने उन का शाम का रास्ता बंद कर देना चाहा। मगर आप असफल रहें।

● मक्का के लोग जानते थे की शाम से आने वाले व्यापारी काफिले को मदीना से खतरा है। इसलिए रक्षा के लिए उन्होंने १३०० सैनिक भेजे थे।

जब काफिला सुरक्षित मदीना के पास से रास्ता बदल कर गुजर गया तो केवल ३०० सैनिक ही मक्का वापस हुए। और १००० सैनिकों का मदीना पर आक्रमण करने का इरादा था। हज़रत मुहम्मद ने केवल ३१३ साथियों से इनका बदर के मुकाम पर मुकाबला किया और आप विजयी रहे। यह घटना पैग़म्बरी के १५ वे वर्ष हुई।

पैग़म्बरी का सोलहवा वर्ष

● मक्का वालों ने युद्ध के लिए व्यापार से धन तो पहले से ही जमा कर लिया था और वह इस्लाम को तो पहले से ही मिटा देना चाहते थे। मगर अब उस के साथ बदर के मुकाम पर अपने पराजय का कलंक भी मिटाना था। इस लिए उन्होंने ३००० सैनिकों के साथ मदीना पर धाबा बोल दिया। उहद के मुकाम पर मुस्लिमों से मुकाबला हुआ। मुस्लिम अपनी गलती के कारण विजयी होने के बाद फिर पराजित हुए और उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

पैग़म्बरी का १८ वा वर्ष

● उहद के मुकाम पर मुस्लिम पराजित हुए थे। मगर पूरी तरह मिटे नहीं गए थे। मुस्लिमों को पुरी तरह मिटाने के लिए दो वर्ष बाद सारे अरब से १०,००० सैनिक मदीने पर टूट पड़े। मुस्लिम सब का एक साथ मुकाबला नहीं कर सकते थे। इस उन्होंने शहर की सीमा पर खाई (Trench) खोदकर अपना बचाव किया।

यह युद्ध एक महीने तक चलता रहा, मगर आक्रमक खाई पार नहीं कर पाए और आखिर में ईश्वर ने आंधी तूफान भेज कर उन के खेमें (Tent) उखाड़ दिए और वह परेशान होकर वापस चले गए।

अगर वह सफल होते तो ना एक मुस्लिम जीवित होता ना अंतिम मशाल (पवित्र कुरआन) उज्वलित रहती।

यह घटना पैग़म्बरी के १८ वे साल March

627 AD में हुई। इस युद्ध का वर्णन अथर्ववेद (२०:२१,६) में इस तरह है।

से त्वा अमदन तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पतें यत कारवे दश वृत्रायपति वर्हिष्मते नि सहस्त्रानि वर्हय: ॥६॥

(भावार्थ:- सत्यवादी वीरों ने ईश्वर की प्रार्थना के गीत गाते हुए विरता से दस हजार शत्रू की सेना को बगैर लड़े पराजित किया। Muhammed in world scripture by A.H. Vidyarthi Page no. 118)

● जब सारा अरब एकजुट होकर मदीना पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था तो हज़रत मुहम्मद और उन के साथियों को इस का ज्ञान था। मगर वह असहाय थे। वह अरब देश के हर ठिकानों पर जाकर उन्हें नहीं रोक सकते थे। इसलिए खाई खोद कर अपना बचाव किया। इस बार तो वह किसी तरह बच गए। मगर हो सकता है दूसरी बार दुश्मन और अधिक संख्या में आक्रमण करे और फिर खाई खोद कर भी बचाव ना हो पाए। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसी नीति अपनाई के जैसे ही कही सैनिकों के एकजुट होने की खबर पाते तो तुरंत अपने साथियों को भेज कर उन्हें तितरबितर कर देते। और ऐसा बहुत बार हुआ।

पैग़म्बरी का १९ वा वर्ष

● एक रात हज़रत मुहम्मद (स.) ने सपना देखा के आप (स.) उमरा कर रहे है। उमरा में काबा शरीफ, सफा-मरवा का परिक्रमा किया जाता है और सर के बाल मुँडाए जाते हैं।

जब आप (स.) ने अपने साथियों से इस सपने की चर्चा किया तो सब के दिल अपने पुराने शहर मक्का और ईश्वर के घर को देखने के लिए तड़प उठे।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और १४०० लोगों ने उमरा के इरादे से मदीना से मक्का प्रस्थान किया। मगर मक्का वालों ने उन्हें मक्का शहर में प्रवेश करने कि आज्ञा न दी और युद्ध पर उतारु हो गए। बहुत चर्चा के बाद दोनों पक्ष एक शांति संधी पर सहमत हुए। इसे सुलह हुदेबिया के नाम से याद किया जाता है।

इस संधी में इस बात को माना गया था की दोनों पक्ष एक दूसरे से और एक दूसरों के मित्र कबीलों से भी युद्ध नहीं करेगा। और हज़रत मुहम्मद (स.) अगले वर्ष उमरा के लिए आएं (इस वर्ष नहीं।)

(यह घटना पैग़म्बरी के १९ वे साल हुई।)

पैग़म्बरी का २० वा वर्ष

● यहुदी अरब देश में बहुत मालदार और पढ़े लिखे थे। वह अपने आप को अरबों से बहुत महान समझते थे। मगर जब से इस्लाम आया उन का बड़ापन खतम हो गया। इसलिए वह मुस्लिमों से बहुत नफरत करते थे। और अरबों को मुस्लिमों के खिलाफ उकसाते रहते थे। अरबों को उनके षड़यंत्रों से पाक करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हीं १४०० उमरावाले साथियों के साथ यहूदियों के खैबर के मुकाम पर जो दुर्ग थे उन को घेर लिया। वह बीस हजार थे, मगर बहुत कम लड़े। उन्होंने हार मान ली और एक शांती संधी पर हस्ताक्षर कर दिए।

संधी के बाद उन लोगों ने मुस्लिमों को खाने की दावत पर बुलाया। और खाने में जहर मिला दिया।

हज़रत मुहम्मद (स.) के एक साथी ने एक निवाला निगल लिया और उनकी मृत्यु हो गई। हज़रत मुहम्मद (स.) ने निवाला मुंह में रखकर थूक दिया। मगर फिर भी जहर का कुछ असर

आप (स.) पर हो गया। आप (स.) अगले पांच वर्ष जीवित रहे मगर कभी कभी आप (स.) इस के असर से बीमार पड़ जाते और अंत में इसी जहर के असर से आप (स.) का देहांत हो गया। (सही बुखारी Vol-2, Page-695, No-1554)

यह घटना पैग़म्बरी के २० वे वर्ष घटी।

● मक्का शहर वाले हज़रत मुहम्मद (स.) को हमेशा परेशान किए रहते थे और एक तरह से सरदर्द थे। उन से हुदेबिया के मुकाम पर शांति संधी होने के बाद एक शांति का वातावरण हो गया। तो हज़रत मुहम्मद ने अरब देश से बाहर के राजाओं को धर्म प्रचार के हेतु से पत्र लिखना शुरु किया। आप ने रोम, इरान, मिस्त्र (Egypt), इथोपिया, यामन और शाम के राजाओं को पत्र भेजा।

रोम के राजा ने आप को पैग़म्बर माना मगर मुस्लिम न हुआ। ईरान का राजा बहुत नाराज हुआ और आप के पत्र को फाड़ ड़ाला। मिस्त्र के राजा ने आप के पत्र ले जाने वाले का बहुत आदरसत्कार किया और उपहार के साथ वापस भेजा।

यामन के राजा ने लिखा की अगर आप राजपाट में मुझे साझीदार करो तो ही मैं इस्लाम कबूल करुँगा। इस्लाम राजपाट के लिए अवतरित नहीं हुआ है इसलिए हज़रत मुहम्मद ने इन्कार कर दिया।

इथोपीया के राजा ने आप के सफीर (संदेशवाहक) का बहुत आदर किया और मुस्लिम हो गया।

शाम के सीमा पर शरजील बिन उमरु नाम का सरदार राज करता था। यह रुमीयों के मातेहत था। यह हज़रत मुहम्मद (स.) का पत्र पढ़कर बहुत नाराज हुआ। आप के सफीर को कत्ल कर दिया। और मदीना पर आक्रमण के तैयारी का आदेश दे दिया।

● शरजील बिन उमर से निपट ने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ३००० सैनिक भेजे। मगर शरजील पहले से ही आक्रमण की तैयारी कर रहा था इसलिए उसने २ लाख सैनिक जमा कर लिए।

दो लाख सेना के सामने केवल ३००० मुस्लिम थे। मगर उन्होंने हिम्मत न हारी और युद्ध शुरु हो गया। मुस्लिमों के तीन सेनापति एक एक करके शहीद हो गए। दूसरे दिन खालिद बिन वलीद सेना पती बने। उन्होंने ३००० की सेना को ऐसे खड़ा किया की वह कल के घायल सैनिक नहीं बल्के अभी आए हुए नऐ सैनिक नजर आते। फिर आप (स.) ने अपनी सेना को धीरे धीरे पीछे हटाना शुरु किया। रुमी समझे के यह मुस्लिमों की चाल है। वह हमें रेगिस्तान में ले जाकर लड़ना चाहते है। और उन्होंने पीछा नहीं किया और मुस्लिमों की यह सेना सुरक्षित वापस आ गई। यह घटना मुअतता के मुकाम पर घटी थी। और आज भी वहाँ शहीदों के स्मारक है।

पैग़म्बरी का २१ वा वर्ष (630 **AD**)

● मक्का के रहवासियों से तो शांति संधी थी मगर वह इस संधी का पालन नही करते थे। मक्का शहर को ईश्वर ने शांति और सब के लिए शरण का शहर बनाया है। इस शहर में पेढ़-पौधे काटना मना है। पशु-पक्षी मारना मना है। अगर कोई व्यक्ति किसी और स्थान पर अपराध करे, और मक्का आ जाए तो जब तक वह मक्का से बाहर ना चला जाए, उस वक्त तक धार्मिक रुप से उस अपराधी को भी मक्का शहर के सीमा के अंदर मारना मना है। अर्थात मक्का एक शांति और शरण का शहर है। मगर

मक्का के रहवासियों ने ऐसे किसी धार्मिक नियम का पालन नहीं किया और ना उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) से किए अपने शांति संधी का लेहाज़ रखा। और हज़रत मुहम्मद (स.) के मित्र कबीलों के वह लोग जो मक्का आए हुए थे उन सब को काबा शरीफ के सामने कत्ल कर दिया। हज़रत मुहम्मद ने पैगाम भेजा के या तो कत्ल का जुर्माना दो या शांति संधी भंग कर दो। तो मक्का वालों ने घमंड में आकर शांति संधी को भंग कर दिया।

● शांति संधी भंग होने के बाद अब फिर मक्का वालों के आक्रमण का खतरा था। इस से पहले वह आक्रमण करते हज़रत मुहम्मद (स.) खुद दस हजार की सेना ले कर अचानक मक्का शहर को घेर लिया।

मक्का वाले इस आक्रमण के लिए बिल्कुल तैयार न थे और न वह सशस्त्र थे। इसलिए बिना लड़े अपनी हार स्वीकार कर ली। यह घटना पैग़म्बरी के २१ वर्ष घटी।

● मक्का वालों ने २१ वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) पर तरह तरह के अत्याचार किए। कत्ल करने की कोशिश की। मुस्लिमों को यातनाऐं दी। तीन बार मदीना पर आक्रमण किया। उनके मुस्लिमों के प्रति अनगिनत अपराध थे। मगर जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया तो सब को क्षमा कर दिया। इस क्षमा और दयालुता से वह इतने प्रभावित हुए के पूरे शहर ने इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ दस हजार सैनिक थे। और उन्होंने विजय प्राप्त करने के बाद किसी को हानि नहीं पहुँचायी इस लिए अथर्ववेद में इन्हें गाय के नाम से याद किया हैं। वह श्लोक इस तरह हैं,

एश इशाय मामहे शतं निष्कान् दश स्त्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्त्रादश गोनाम्॥३॥

भावार्थ:- ईश्वर ने मामेह ऋषी को १०० हार, १० स्वर्ण मुद्रा, ३०० घोड़े और १०००० गायें देगा।

इस श्लोक में १०० हार 'असहाबे सुफ्फा' को कहा गया है। १० स्वर्ण मुद्रा 'अशरा मुबशरा' (वह दस लोग जिन को धरती पर स्वर्ग मिलने की खुशखबरी मिली थी।) को कहा गया है। ३०० घोड़े उन सैनिकों को कहा गया है जो पहले युद्ध में बदर के मुकाम पर लड़े थे। और १०,००० गायें यहीं सैनिक हैं जिन्होंने किसी को गाए की तरह हानि नहीं पहुचाया।

त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः। षष्टिं सहसा।
नवर्ति नव श्रुतो नि चक्रेरा रथ्या दुष्पदावृराक ॥९॥

दूसरे श्लोक में ईश्वर ने कहा कि वह आप (स.) को ६०,०९९ दुश्मनों से बचाएगा। तो यह ६०,०९९ दुश्मन यही मक्का के रहवासी था। (उस समय मक्का की आबादी तकरीबन ६०,००० थी।)

(Mohammed in world Scriptures, Page No.127- Atherva ved- 20: 21-3)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने अचानक मक्का शहर को घेरा था। इसलिए मक्का रहवासी युद्ध की तैयारी ना कर सके और पराजित हुए। मगर आस पास के कबीलें मक्का शहर पर आक्रमण से सावधान हो गए। उन को युद्ध की तैयारी का समय मिल गया था। इसलिए उन्होंने १२,००० सैनिकों की सेना तैयार कर ली और मुकाबले के लिए निकल पड़े।

● हुनैन के मुकाम पर हज़रत मुहम्मद (स.) के साथीयों से मुकाबला हुआ। वह बहुत बहादुरी

से लड़े मगर अंत में पराजित हुए। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें पराजित करने और सब को बंदी बनाने के बाद फिर सब को क्षमा कर दिया और आज़ाद कर दिया।

इस दयालुता और उदारता ने उनका भी मन मोह लिया और वह सब भी मुस्लिम हो गए।

इस तरह सारे अरब देश से इस्लाम का विरोध करने वालों का खात्मा हो गया।

पैग़म्बरी का २२ वा वर्ष

● जब रोम ने देखा के सारा अरब क्षेत्र मुस्लिम हो गया है तो उन्हें खतरा महसूस होने लगा। और उन्होंने एक बड़े युद्ध की तैयारी शुरु कर दी। और सीमा पर सैनिक जमा होना शुरु हो गए।

जब हज़रत मुहम्मद (स.) को इस बात की सूचना मिली तो इससे पहले की वह आक्रमण करते आप (स.) खुद ३०००० हजार की सेना लेकर १००० किलोमीटर का सफर करके उनके द्वार पर पहुँच गए।

रोम की २ लाख की सेना मुअतता के मुकाम पर ३००० मुस्लिमों की सेना से लड़ चुकी थी। और वह जानते थे की केवल ३००० भी २ लाख की सेना से टकराने से नहीं ड़रें और एक दिन युद्ध करके पीछे हटे। अब तो वह तीस हजार हैं और उन का पैग़म्बर भी उन के साथ है। तो उन में मुकाबले कि हिम्मत ना हुई और वह आस पास के गांव में भाग कर छुप गए। हज़रत मुहम्मद (स.) एक महीने तबुक के मुकाम पर उन का इन्तेजार किया और बिना लड़े वापस आ गए।

यह घटना पैग़म्बरी के २२ वे वर्ष घटी।

इस तरह अरब देश में पूरी तरह शांति हो गई और अधिक तर लोगों ने इस्लाम धर्म अपना लिया।

पैग़म्बरी का २३ वा वर्ष

● अल्लाहने पैग़म्बरी के २२ वे वर्ष ही मुस्लिमों पर हज़ फर्ज कर दिया था। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) किसी कारण हज ना कर सके। इसलिए पैग़म्बरी के २३ वर्ष आप ने हज पर जाने की घोषणा की। आप से हज सीखने और आप के साथ हज का सौभाग्यपूर्ण अवसर का लाभ उठाने अरब देश से एक लाख चालीस हजार लोग मक्का में जमा हो गए। और आप के साथ हज किया।

आप (स.) ने हज के अवसर पर जो भाषण दिया वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने लायक है। उस भाषण के मुख्य उपदेश हम १४ अध्याय में लिखेंगे।

● मक्का आप का जन्म स्थान था। आप मक्का शहर से बेपनाह प्रेम करते थे। हज से वापसी के समय मक्का छोड़ते समय आप बहुत दु:खी थे और आप के आखों से आसू बह रहे थे।

● मदीना आने के ७५ दिन बाद आप को सरदर्द और बुखार हो गया। यह वही जहर का असर था जो आप को यहूदीयों ने दिया था। आप १५ दिन बीमार रहे और ८ जून 632 AD को आपका देहांत हो गया।

● आप (स.) इस धरती पर ६३ वर्ष रहे। आप के जीवन का अध्ययन किया जाए तो हम महसूस करते हैं की सुख के कुछ वर्ष जो आप को मिले वह पैग़म्बर होने के पहले के ही कुछ वर्ष है। उन वर्षों को अगर छोड़ दें तो आप का सारा जीवन एक निरंतर संघर्ष की कथा है।

● जन्म के पहले पिता का देहांत हुआ। छह वर्ष की आयु में माता का देहांत हुआ। ८ वर्ष की आयु में दादा गुजर गए। आप अनाथ थे। और २५ वर्ष

की आयु तक ऐसे परिवार के सदस्य रहे जो खुद समृद्ध ना था। आप ने पैसो के लिए मक्का वालों की रेगिस्तानों में बकरियाँ चराई और चाचा के साथ रेगिस्तानों में व्यापार का दूरदराज इलाकों का सफर किया।

● पैग़म्बरी मिलने के बाद धर्म का प्रचार एक बहुत ही मुश्किल काम था। जब पवित्र कुरआन आप पर अवतरित होता तो इतनी तकलीफ होती के सख्त ठंठी के मौसम में भी आप पसीना पसीना हो जाते।

● धर्म के दो बोल सुनते ही मित्र भी शत्रु हो जाते।

● आप (स.) के चाचा अबुतालिब के देहांत के बाद लोग इतना परेशान करते के आप (स.) ने घर से निकलना कम कर दिया था। कोई गाली देता, कोई थूकता, कोई पागल कहता, कोई जादूगर कहता, कोई सरपर मिट्टी ड़ालता, कोई रास्ते में कांटे बिछाता, कोई कपड़े फाड़ता। आप ने कहा कि, इस धरती पर जितना मुझे सताया गया उतना और किसी पैग़म्बर को नहीं सताया गया। (मुस्लिम, तिरमिजी)

● पैग़म्बरी मिलते समय आप (स.) के पास २५ किलो सोने के बराबर पूँजी थी। यह सब आप ने धर्म प्रचार में लुटा दिया।

(जादे राह पेज नं.२२७)

● जब आप (स.) मदीना आए तो अन्य स्थानो से मदीना आने वाले गरीब लोगों के खाने पीने का प्रबंध भी आप करते। और उन की सेवा में आप अपना खाना भी उनको खिला देते और आप (स.) और आप का परिवार भूखा रहता।

● तीन तीन महीने आप (स.) के घर चूल्हा ना जलता, आप (स.) और आप का परिवार खजूर और पानी पर जीवित रहते।

(बुखारी, मुस्लिम)

● पैग़म्बरी के दसवे वर्ष से आखिर तक हमेशा आप के जान को खतरा रहा।

● मदीना आने के बाद आप (स.) ने कभी पेट भर कर दो समय का भोजन ना खाया।

(बुखारी, मुस्लिम)

● मदीना आने के बाद आपने कभी गेहूँ की रोटी नहीं खाया। बस जौ की रोटी खाकर गुजारा करते। (बुखारी, मुस्लिम)

● रहने के लिए एक कच्चा मकान था। बोरी पर सोते और आप के घर में ऐश व आराम का कोई सामान ना था।

● लोग जब आप के एक ईश्वर को मानने का उपदेश ना मानते तो आप को बहुत दु:ख होता। क्योंकि ऐसा व्यक्ति १०० प्रतिशत नरक में जाएगा। किसी का नरक में जाना आप को इतना दु:ख देता के आप रातरात भर अल्लाह के सामने खड़े होकर नमाज़ पड़ते और रोते रहते। ज्यादा देर तक खड़े रहने से आप के पैर सूज जाते।

● हज़रत मुहम्मद (स.) को ईश्वर ने पुरे विश्व के लिए पैगम्बर बनाया था। आप (स.) के दिल में लोगों के कल्याण की ऐसी तड़प थी कि वह ईश्वर जिस ने आप को पैग़म्बर बनाया और लोगों को धर्म की शिक्षा देने का आदेश दिया, उसे खुद कहना पड़ा कि, ''यह कुरआन हमने इसलिए नहीं अवतरित किया की आप तकलीफ में पड जाए। (पवित्र कुरआन २०:२)

ईश्वर ने यह भी कहा कि, ''ऐ पैग़म्बर! शायद तुम इस गम में अपनी जान खो दोगे कि ये लोग ईमान नहीं लाते।'' (पवित्र कुरआन २६:३)

● ईश्वर आप पर और आप के परीवार पर अपनी कृपा करें।

****

हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण कैसे थे?

● किसी ने हज़रत आएशा (रजि.) से पूछा के हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण कैसे थे? तो आप ने फरमाया ''आप (स.) का आचरण पवित्र कुरआन था।'' (हदीसः मुस्लिम)

अर्थात जैसे आचरण का आदेश ईश्वर ने मानवजाति को अपनाने के लिए पवित्र कुरआन में दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण बिल्कुल वैसे थे।

● ईश्वर ने इन शब्दों में हज़रत मुहम्मद के आचरण की प्रशंसा की है,

''ऐ मुहम्मद आप के आचरण सर्वश्रेष्ठ हैं''
(पवित्र कुरआन ६८-४)

● हज़रत इमाम मालिक ने अपनी किताब मुअतता में लिखा है की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की ईश्वर ने मानवजाति को सर्वश्रेष्ठ आचरण सिखाने के लिए ही मुझे पैगंबर बनाया है। (मुअतता)

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत नम्र स्वभाव के थे।

● हज़रत अनस (रजि.) कहते हैं की मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) की दस वर्ष सेवा की। मगर इस अवधि में आप (स.) ने मुझ से कभी कोई नाराज़गी वाला या डांट फटकार वाला वाक्य नहीं कहा। अगर मुझ से कोई गलती हो गई तो आप ने मुझ से कभी ना पूछा कि यह गलती तुम ने क्यों की? और जो काम मुझे करना चाहिए था अगर मैंने वह काम नहीं किया तो आप (स.) ने कभी मुझ से यह ना पूछा के आप ने यह काम क्यों नहीं किया?
(बुखारी, मुस्लिम, जादेराह-३१४)

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है, ''हज़रत मुहम्मद (स.) ने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा। ना किसी पत्नी को मारा ना किसी नौकर को मारा, और ना किसी और को। हाँ ईश्वर के आदेश अनुसार युद्ध करते हुए दुश्मनों को जरुर मारा। और आप (स.) को कष्ट पहुँचाने वालों से आप (स.) ने कभी बदला नहीं लिया।'' (मुस्लिम, जादेराह-३४६)

हज़रत मुहम्मद (स.) की भाषा बहुत मधुर थी।

● हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरु बिन आस (रजि.) कहते हैं की, हज़रत मुहम्मद (स.) ना तो बद-मिजाज़ (Hot-Temper) थे और ना ही बुरी बातें जबान से निकालते थे।
(बुखारी, मुस्लिम, जादेराह -७४)

● आप (स.) अधिक समय चुप रहते।
(सरह अल सना)

● जब भी आप (स.) बात करते तो ऐसे अंदाज़ से ठहर ठहर कर बात करते की अगर कोई एक एक शब्द गिनना चाहे या लिखना चाहे तो लिख ले।
(बुखारी, मुस्लिम, मारुफूल हदीस Vol-8, Page-238)

● आप (स.) ने जो वाक्य कहे वह साहीत्यिक दृष्टिकोण से इतने अच्छे थे की आज भी लोग उन को दोहराते है। ऐसे वाक्यों के संग्रह का नाम 'जामावाउल कलाम' है।

हज़रत मुहम्मद (स.) में बहुत आत्मसंयम था।

एक बार एक देहाती मदीना आया और हज़रत मुहम्मद (स.) की चादर (शाल जिसे आप (स.) ने ओढ़ रखा था) को पकड़ कर इतनी ज़ोर से खींचा के आप (स.) की गर्दन पर रगड़ के निशान पड़ गए। और उसने कहा, ''ऐ मुहम्मद (स.) ईश्वर ने जो तुम को दिया है, उस में से मुझे भी कुछ दे दो।'' उस के इस दुर्व्यवहार पर कोई भी उसे एक थप्पड़ मार सकता था। मगर आप ने संयम से काम लिया। आप केवल मुस्कुरा दिए और अपने साथियों को उसे कुछ अनाज देने के लिए कहा।

(बुखारी, मारुफूल हदीस, Vol-8-Page 232)

एक बार किसी गरीब मुसलमान की मदद के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक यहूदी से कुछ पैसे उधार लिया। जब वह यहूदी अपना पैसा मांगने आया तो उस समय हज़रत मुहम्मद (स.) के पास देने के लिए कुछ ना था। मगर यहूदी ने कहा मैं तो अपना पैसा लिए बगैर ना जाऊंगा। इसलिए वह मस्जिद में ही बैठ गया। वह यहुदी दोपहर के पहले आया था और दूसरे दिन सुबह तक बैठा रहा। हज़रत मुहम्मद (स.) चूँकि उसके कर्जदार थे। इसलिए आप (स.) भी लगातार उस के साथ मस्जिद में बैठे रहे। आप (स.) के साथी खुद वह कर्जा चुकाना चाहते थे मगर आप (स.) ने मना किया। आप (स.) के साथी उस यहूदी को वहाँ से चले जाने के लिए कहना चाहते थें। मगर आप (स.) ने किसी को उससे दुर्व्यवहार करने ना दिया। उस यहूदी ने अपने धर्म ग्रंथ में पढ़ा था की अंतिम पैगंबर में बहुत संयम और धीरज होगा। जब उसने अपनी आंखो से देख लिया तो कहा ''आप सच्चे पैगम्बर है। मेरा सारा माल आप के चरणों में है। इसे आप जैसा चाहें खर्च करें। (मिश्कातः मारुफूल हदीस, Vol-2, Page-109)

हज़रत मुहम्मद (स.) वादे के बहुत पक्के थे।

एक व्यापारिक सौदे में हज़रत मुहम्मद (स.) और एक यहूदी (अब्दुल्लाह बिन अबील हामा) ने वादा किया कि एक जगह मिलेंगे। निर्धारित समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पहुंच गए, लेकिन यहूदी उस मुलाकात के वादे को भूल गया। हज़रत मुहम्मद (स.) तीन दिन तक वादे के अनुसार उस जगह पर जाते रहे। तीसरे दिन यहूदी को अपनी मुलाकात का वादा याद आया और वह उस जगह दौड़ता हुआ पहुंचा और देखा कि हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पर यहूदी की प्रतिक्षा कर रहे हैं। उसने अपनी गलती की माफी मांगी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी नाराज़गी प्रकट करते हुए बस इतना फरमाया, ''तुमने मुझे बहुत कष्ट पहुँचाया क्यूंकि पिछले ३ दिनों से मैं तुम्हारा इंतेजार कर रहा हूँ।'' (शिफा, पृ. ५६)

गैर मुस्लिमों से आप (स.) का व्यवहार

- एक बार हज़रत आसमा बिन्ते अबुबकर (रजि.) की माँ जो की गैरमुस्लिम थी और मक्का में रहती थी, आप से मिलने मदीना आई। हज़रत आसमा (रजि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा मेरी माँ मुसलमान नहीं है मैं उनसे कैसा व्यवहार करुँ? आप (स.) ने कहा अच्छा व्यवहार करो जैसे एक बेटी को माँ से करना चाहिए। हाँ अगर वह इस्लाम के विरुद्ध कहें तो कहना ना मानना।

(बुखारी मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब, Vol-1-No-981)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि अगर कोई सत्ताधारी मुसलमान एक गैर-मुस्लिम के साथ अन्याय करता है तो कयामत के दिन ईश्वर के दरबार में मैं उस मुसलमान के खिलाफ और गैर-मुस्लिम की तरफ से मुकदमा लढूंगा।

(अबु दाऊद, सफिना निजात-१५१)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की जब किसी दूसरे समाज का कोई आदरणीय व्यक्ति तुम्हारे पास आए तो उसका आदर करो
(जवामुल कलाम)

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है कि एक बार एक यहूदी हज़रत मुहम्मद (स.) से मिलने आया। आप (स.) ने उससे बहुत आदरपूर्वक बातचीत की। जब वह चला गया तो आप ने हज़रत आएशा (रजि.) से कहा ''यह व्यक्ति सज्जन नहीं था'' हज़रत आएशा (रजि.) ने आश्चर्य से पूछा कि फिर आप ने उस से इतना आदरपूर्वक बातचीत क्यों की? तो आप (स.) ने कहा, ''अल्लाह के नज़दीक सब से बुरा व्यक्ति वह है जिस के र्दुव्यवहार के कारण लोग उससे दूर रहते है। और मैं ऐसा व्यक्ति बनना नहीं चाहता। (तिरर्मिजी, बेहकी)

हज़रत मुहम्मद (स.) कट्टरवादी नहीं थे।

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है, कि हज़रत मुहम्मद (स.) अपने अनुयायीयों के लिए आसानी चाहते थे। इसलिए जब दो कामों में से किसी एक को चुनना होता, तो अगर वह गुनाह ना हो तो आसान काम ही चुनते।
(बुखारी, हदीसे नबवी पेज नं. ३१)

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है, की हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे कमरे में तशरीफ लाऐ तो एक महिला बैठी हुई थी। आप (स.) ने पूछा यह कौन है? मैंने कहा ''यह वही हैं जिन की नमाज़ प्रसिद्ध है'' (अर्थात वह साधारण लोगों से अधिक नमाज़ पढ़ती थीं) हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा ऐसा मत करो। तुम उतना ही करो जितना कर सकती हो। अल्लाह तआला पुण्य देने से नहीं उकताऐगा, मगर तुम नमाज़ पढ़ने से उक्ता जाओगी। अल्लाह तआला को वहीं पसंद है जो तुम हमेशा कर सको। (बुखारी, मुस्लिम)

अर्थात आप आसानी और मध्यम (Middle path) मार्ग को अधिक पसंद करते थे।

● इस्लाम में पांच बार नमाज़ उस के निश्चित समय पर पढ़ना अनिवार्य है।

एक महिला ने हज़रत मुहम्मद (स.) से शिकायत की के मेरे पति सफवान बीन मुअत्तल सुबह सवेरे की नमाज़ जो सूर्योदय के पहले पढ़नी चाहिए वह नमाज़ सूर्योद्य के बाद पढ़ते है। उन के पति भी उस सभा में उपस्थित थे। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे पूछा ''क्या यह सच है?''

उन सहाबी ने कहा हाँ यह सच है। और इस का कारण यह है की मैं एक किसान हूँ। मेरे खेत कुएँ से बहुत दूर है। सिंचाई का पानी पहले कुंए से नज़दीक वाले के खेत में जाता है। आधी रात के समय मेरे खेत में सिंचाई का पानी आ पाता है। खेत सींचने के बाद जब मैं आधी रात को सोता हूँ तो थकान के कारण सूर्योदय से पहले मेरी नींद नहीं खुलती और मेरी सुबह की नमाज़ छूट जाती है। उन सहाबी का कारण सुनने के बाद आप ने केवल इतना कहा, ''अच्छा सुबह जब भी उठो तो तुरंत नमाज़ पढ़ लिया करो।

● हजरत मुहम्मद (स.) ने फरमाया धर्म को अपनी तरफ से कठिन बनाने वाले बर्बाद (हेलाक) हो गए। (मुस्लिम, रियाजुस स्वालेहीन)

हज़रत मुहम्मद (स.) और उनका परिवार बहुत दानी था:-

● हज़रत सुहैल कहते है की मैंने देखा की एक सहाबी ने वह चादर (शाल) आप (स.) से मांगी जिसे आप (स.) ने ओढ रखी थी। आप (स.) को उस चादर की आवश्यकता थी फिर भी आप (स.) ने वह चादर उस सहाबी को उतार कर दे दिया।

लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के चले जाने के बाद उस सहाबी को फटकारा के तुम देख रहे थे की हज़रत मुहम्मद (स.) को उस चादर की आवश्यकता थी फिर तुम ने उन से चादर क्यों मांगी। तो उन्होंने कहा की यह पवित्र चादर मैंने अपने कफन के लिए माँगी है।

(सहीह बुखारी, मारुफूल हदीस Vol-2, Page-194)

● मदीना और खैबर के इलाके में हज़रत मुहम्मद (स.) की कुछ खेती थी जिस से इतना अनाज पैदा हो जाता की वर्ष भर आप (स.) के परीवार का गुजारा हो सकता था। मगर आप (स.) और आप (स.) की पत्नियाँ इतनी दानी थीं के वह सारा अनाज मांगने वाले गरीबों को बांट देती। और खुद खजूर और पानी पर जीवित रहते।

● आप ने किसी मांगने वाले को ना नहीं कहा। अगर कोई गरीब आप से कुछ मांगता और अगर आप (स.) के पास देने के लिए कुछ ना होता तो आप उधार ले कर उसकी जरुरत पूरी करते। जब आप (स.) का देहांत हुआ तो आप की जररह (युद्ध में पहना जाने वाला कवच) एक यहूदी के पास गिरवी रखी हुई थी।

(बुखारी मुस्लिम, मारुफूल हदीस, Vol-8 Page-233)

आप (स.) बहुत न्यायप्रिय थे।

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत न्याय करने वाले थे। इसलिए यहूदी और गैरमुस्लिम अपने विवाद आप के पास न्याय के लिए लाते। आप ने कई बार निर्णय मुसलमानों के विरुद्ध दिया है। ऐसे ही आप के एक न्याय का वर्णन पवित्र कुरआन में हैं। (पवित्र कुरआन ४:६२)

प्राचीन काल में स्थायी सरकार और कारागार (जेल) ना थे। इसलिए इस्लाम के सारे दण्ड तुरंत देने वाले है। इस्लाम में चोरी का दण्ड हाथ काटना है। एक बार एक फातिमा मकजूनिया नाम की महिला जो आदरणीय खानदान से थी। उसने चोरी की और वह पकड़ी गईं। न्यायालय ने उसे हाथ काटने का दण्ड दिया। कुछ लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सिफारिश की के यह आदरणीय कबीले की महिला हैं इसे माफी दे दें। इस बात पर हज़रत मुहम्मद (स.) नाराज हुए और कहा की अगर मेरी बेटी फातिमा (रजि.) ने भी यह कार्य किया होता तो उसे भी यहीं दण्ड मिलता।

(मिश्कात शरीफ)

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत बहादुर थे।

● 'रकाना' मक्का का सबसे बड़ा पहलवान था। उसने हज़रत मुहम्मद (स.) को कहा की अगर तुम मुझे हरा दो तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा। आप (स.) ने उसे तीन बार हराया।

(सिराते-अहमद मुज्तिबा)

● हज़रत बरा बिन आज़ीब (रजि.) कहते हैं की युद्ध में आप (स.) सब से आगे रहते थे। आप (स.) पर हमले भी अधिक होते इसलिए जो बहुत बहादुर होता वही आप (स.) के साथ रहता था। और घमासान युद्ध में कभी किसी जख्मी मुसलमान को बचना होता तो वह आप (स.) के पीछे हो जाता।

(बुखारी, जादे राह पेज नं.२३६)

● हुनैन के युद्ध में शत्रु ने जब तिरों की वर्षा कर दी तो मुस्लिम सेना को तीरों से बचने के लिए पिछे हटना पड़ा। मगर ऐसी गंभीर स्थिती में भी हज़रत मुहम्मद (स.) और आठ-दस साथी पिछे नहीं हटे और आगे पढ़ते ही रहे। हज़रत अब्बास (रजि.) ने उमरा वाले १४०० साथियों को आवाज दिया। जब वह पलटकर आए और फिर से हमला किया तो मुसलमान सेना फिर संभल गई और विजयी हुई।

(सिराते मुज्तबा)

● एक बार मदीना शहर की एक तरफ से बहुत ज़ोर की आवाज आई और लोग समझे के आक्रमण हो गया। जब तक लोग अपने हथियार सजाकर घर से निकलते, हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत तलहा (रजि.) के घोडे की नंगी पीठ पर सवारी करते और तलवार लटकाऐ उस तरफ से वापस आ रहे थे और लोगों को बताया की चिंता की कोई आवश्यकता नहीं हैं। (बुखारी)

आप (स.) अन्न का बहुत आदर करते थे।

● हज़रत अबु हुरैरा (रजि.) कहते है कि जब आप (स.) के सामने भोजन रखा जाता तो अगर आप (स.) को वह पसंद होता तो भोजन करते और अगर नापसंद होता तो वहाँ से उठ जाते मगर आप (स.) ने खाने को कभी बुरा नही कहा। (बुखारी)

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है की एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे कमरे में तशरीफ लाए, और आप (स.) ने एक रोटी का टुकड़ा जमीन पर पडा देखा तो आप (स.) ने उसे उठा लिया और साफ करके खा लिया और फरमाया, ''आएशा, अच्छी चीज़ का आदर करो, क्योंकि (ईश्वर के इस उपकार के अपमान के कारण) यह जिस समुदाय से चली गई फिर लौट कर न आयीं। (सनन, इब्ने माज़ा)

(अर्थात भोजन का अपमान करने से जो लोग गरीब हो गए वह फिर समृद्ध नहीं हुए।)

आप (स.) बहुत हसमुख थे।

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है ''ऐ मुहम्मद! हमने यह पवित्र कुरआन इसलिए अवतरित नहीं किया के तुम कठिनाई में पड़ जाओ। (पवित्र कुरआन, सूरह ताहा-२)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है की हम मानवजाती के लिए सुविधा चाहते है, कठिनाइ नहीं। (पवित्र कुरआन २:१८५)

● हज़रत मुहम्मद (स.) खुशमिज़ाज (हसमुख) थे। हज़रत अबुहुराह कहते है की लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! (आप पैगम्बर होकर) हमस हँसने हँसाने वाली बात करते है। आप (स.) ने जवाब दिया, ''हाँ! लेकिन मैं कोई गलत बात या धर्म के विरुद्ध कोई बात नहीं कहता।''
(तिरमिजी, जादे राह ३२०)

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस कहते मैंने हज़रत मुहम्मद से अधिक किसी को मुस्कुराते नहीं देखा। (तिरमिजी, मुन्तख़ब अबवाब-८२७)

● हज़रत अबुजर कहते है की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया अपने भाई के सामने (उससे दोस्ती और प्रेम से मिलने के लिए) मुस्कुराना भी दान देने जैसा पुण्य का काम है।
(तिरमिजी १९५६, हदीसे नबवी ११०)

● हज़रत मुहम्मद (स.) की हंसी मुस्कुराने तक रहती। हज़रत आएशा (रजि.) कहती है की मैंने आप को कभी इतनी जोर से हंसते नहीं देखा की आप का हलक (मुंह के अंदर का भाग) नज़र आ जाए।

आप (स.) अपना आदर करवाना नहीं चाहते थे।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के साथी शाम (Syria) इराक, मिस्त्र इत्यादि से व्यापार करते थे। आप लोग जब वहाँ जाते तो देखते कि वह लोग अपने धार्मिक गुरु का आदर सिजदा करके या उनके आदर में खड़े होकर यह उनके हाथ पैर चूम कर करते है। तो आप (स.) के साथियों ने आप (स.) से कहा के ''या रसूल अल्लाह! हम भी ऐसा ही आदरपूर्वक व्यवहार आप (स.) से भी करना चाहते है।'' तो आप

(स.) ने इस से मना कर दिया।

हज़रत मुहम्मद (स.) इस बात को ना पसंद करते थे की जब वह सभा में आएं तो लोग उनके आदर में खड़े हो जाए।

(तिरमिजी, मुन्तख्ब अबवाब-Vol-1, No-778)

● आप (स.) ने यह भी फरमाया की जो खुद से लोगों से ऐसा आदर करवाना चाहता है उस का ठिकाना जहन्नम (नर्क) होगा।

(तिरमीजी, मुन्तख्ब अबवाब-Vol-1, No-778)

● आप (स.) ने इस बात से भी मना किया था की उन की कब्र पर कोई स्मारक बनाई जाए। या उनकी कब्र को सजदा किया जाए।

(बुखारी, मुस्लिम, मारुफूल हदीस-Vol-8, No-246)

● हज़रत उमर (रजि.) कहते है की हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की एक हद (एक सीमा) से अधिक मेरी प्रशंसा मत करो, जैसे ईसाईयों ने हज़रत ईसा के साथ किया। (उन को पैगम्बर से उठाकर ईश्वर का बेटा बना दिया) मैं खुदा का बंदा (दास) हूँ। इसलिए मुझे केवल अल्लाह का बंदा और पैगम्बर कहो।

(बुखारी, मुस्लिम, मुन्तख्ब अबवाब Vol-1, No-965)

आप (स.) समाज में प्रेम और शांति चाहते थे।

● ईश्वर ने पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) द्वारा आदेश दिया की, ''ऐ ईमानवालों! कोई कौम (समुदाय) किसी कौम का मज़ाक ना उड़ाए, संभव हैं कि वह उनसे अच्छी हों। और आपस में एक दूसरे पर ऐब (दोष) ना लगाओ, और ना किसी को बुरे नाम से पुकारो। ईमान लाने के बाद बुरे नाम से पुकारना गुनाह है और जो तौबा ना करें वह जालिम लोग हैं।''

(सूरह हुजूरात आयत ११)

● आप (स.) ने अपने साहबियों (साथियों) को इस बात से मना किया था की आप (स.) से कोई किसी की बुराई बयान करें। आप (स.) ने कहा कि मैं चाहता हूँ मेरा हृदय मेरे साथियों के लिए एक दम साफ हो।

(अबुदाऊद जादेराह पेज नं. २३७)

● आप (स.) ने इस बात से मना किया कि कोई किसी कि बुराई जानने के टोह में रहें।

(बुखारी, मुस्लिम, मारुफुल हदीस Vol-2, No-212)

● आप (स.) ने कहा हर एक की जान, माल और सम्मान दूसरे के लिए सम्मानीय है। हर एक दूसरे व्यक्ति के जान माल की रक्षा करें और किसी को अपमानित ना करें। (खुत्बा हज्जतुल विदा)

● हज़रत आएशा (रजि.) कहती है, ''जब हज़रत मुहम्मद (स.) को किसी की बुराई की जानकारी होती, तो वह उसे बुलाकर सब के सामने नहीं ड़ाँटते थे। बल्कि आप (स.) मस्जिद में इस तरह बगैर किसी का नाम लिए उपदेश देते (तकरीर करते) की सभी लोग उस बुराई से बचे रहे, और वह व्यक्ति भी अपने आप को सुधार ले। (शिफा-५२)

● हज़रत हन्जला (रजि.) कहते है की हज़रत मुहम्मद (स.) चाहते थे की हर व्यक्ति को अच्छे और उस के पसंद के नाम से पुकारा जाए।

(आदाबुल मुफरद)

● समाज में एक दूसरे के प्रति प्रेम और सदभावना बढ़ाने के लिए आप (स.) ने सब को सलाम करने का आदेश दिया।

(मुस्लिम मुन्तखब अबवाब Vol-2 Page 391)

● आप (स.) खुद पहले सलाम करते और कहते जो पहले सलाम करता है उस में घमंड नहीं होता है। (बैहकी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब Vol-1 Page 403)

● आप (स.) महिलाओं और बच्चों को भी सलाम करते थे। (अहमद, मुन्तखब अबवाब V-1, P-402)

हज़रत मुहम्मद (स.) के प्रति हमारा कर्तव्य

• हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपना और अपने परिवार का जीवन हम तक ईश्वर का सच्चा आदेश पहुँचाने में कुर्बान कर दिया। और इस के बदले में आप ने हम से अपने लिए और अपने परिवार के लिए कुछ ना मांगा। और ना हम आप (स.) और आप (स.) के खानदान वालों को कुछ दे सकते है। इसलिए हम जब भी आप (स.) का नाम सुने तो ईश्वर से उन के लिए प्रार्थना करें की "हे ईश्वर! हज़रत मुहम्मद (स.) और उन के परिवार पर अपनी कृपा कर।"

• हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ऐसी प्रार्थना करने को अरबी में दरुद पढ़ना कहते है।

• ईश्वर ने पवित्र कुरआन में भी हम सब को हज़रत मुहम्मद के लिए दरुद पढ़ने का आदेश दिया है। (पवित्र कुरआन ३३:५६)

• फरिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल (अ.स.) ने उन सब नाशुक्रों को बद्दुआ दी हैं जो आप (स.) का आभार नहीं मानते और आप (स.) का नाम सुनने के बाद चुप रहते है और आप (स.) के लिए प्रार्थना नहीं करते। (दरुद नहीं पढ़ते।)

• आप (स.) के लिए सब से सरल प्रार्थना है,

सल ल्ल लाहु वा अलैही वा सल लम

अर्थात, ईश्वर आप (स.) और आप (स.) के परीवार पर कृपा करें।

इसलिए जब भी आप हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम सुने इसे पढ़ लें।

ईश्वर ने पवित्र कुरआन में लोगों को आदेश दिया था की वह जब भी हज़रत मुहम्मद से बात करे तो आदरपुर्वक और मध्यम आवाज में बात करें वरना उन के सत्कर्म नष्ट हो जाएंगे। (पवित्र कुरआन ४९:२-३)

इसलिए आज भी हमें आप (स.) का नाम आदरपुर्वक लेना चाहिए।

आप (स.) सर्वश्रेष्ठ शिक्षक थे।

Michael H. Hart ने एक विश्वप्रसिद्ध पुस्तक लिखी है जिस का शिर्षक है, "The 100 ranking of the most influencial persons in history" लेखक खुद ईसाई है मगर उन्होंने विश्व के सब से प्रभावशाली व्यक्ती के रुप में हज़रत ईसा (अ.स.) के बदले हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम लिखा है। उस का कारण उन्होंने लिखा है की हज़रत मुहम्मद (स.) के पास धन, सत्ता, शिक्षा, सेना इत्यादी कुछ भी ना था। मगर केवल २३ वर्ष के संघर्ष से जो प्रभाव उन्होंने मानवजाति के जिवन पर छोड़ा है वह आश्चर्यजनक है।

हज़रत मुहम्मद (स.) के बातों में असर था। लोग उन के आदेश और उपदेश तुरंत सुनते, मानते और अपनाते। क्योंकी वह जो कहते पहले वह उसे खुद परीपूर्ण तरीके से करते थे। उन के कथना और करनी में अंतर ना था। इसलिए उनके शिक्षा में असर था। इस के कुछ उदाहरण निम्नलिखीत है।

• आप (स.) सब को पांच समय नमाज पढ़ने के लिए कहते, मगर आप (स.) खुद आँठ समय नमाज पढ़ते। तहज्जूद, इशराक और चाशत यह आप (स.) के तिन अतिरिक्त नमाज थें।

• आप (स.) सब को दान करते समय अपने परिवार के लिए भी बचाकर रखने कहते। मगर आप (स.) अपना सब कुछ दान कर देते।

• आप (स.) सब को एक महीने का उपवास

रखने कहते मगर आप (स.) कई महीने उपवास रखते।

- जब आप (स.) मदीना में मस्जिद बना रहे थे तो सब के साथ आप (स.) भी मट्टी पत्थर लाद कर ला रहे थे।

- मक्का के १००० सैनीकों का आक्रमण रोकने के लिए जब आप (स.) बदर जा रहे थे तो आप (स.) के सभी साथियों की सवारी के लिए उंट उपलब्ध नहीं थे। इसलिए तिन साथी एक उंट पर बारी बारी सवारी करते और कुछ दुर पैदल चलते। हज़रत मुहम्मद (स.) भी सब की तरह बारी बारी पैदल चले और सवारी की। साथियों के आग्रह पर भी आप (स.)ने अकेले सवारी करना पसंद नही किया।

(मिश्कात, जादे राह Page 235)

- ६२७ AD के युद्ध में जब खाई खोदी गई तो जितना सामान्य मुसलमान सैनिक ने खाई खोदी उतनी ही हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी खाई खोदी।

यह युद्ध जो एक महीने तक चला और खाना पानी खत्म हो गया तो जैसा सारे सैनिक भुखे रहते, वैसे आप (स.) भी उनके साथ भुखे रहते।

अर्थात आप (स.) ने मानवजाति को जो शिक्षा दी पहले आप (स.) ने खुद उसे करके दिखाया फिर लोगों से उस पर चलाने के लिए कहा।

हज़रत मुहम्मद (स.) कैसे नज़र आते थे।

- आप (स.) का कद ना बहुत ऊँचा था और ना बहुत छोटा था मगर आप (स.) अपने सहाबियों (साथियों) के बीच होते तो सब से ऊँचे नजर आते। (तिरमिजी Vol-1)

- आप (स.) का रंग गंदूमी (गेहूँ/Wheat) था। (तिरमिजी Vol-1)

- हज़रत अली (रजि.) कहते है की आप (स.) का रंग सुर्ख (लाल) और सफेद (गोरे रंग) का सुंदर मिश्रण था।

(मस्नद इमाम अहमद-944)

- आप (स.) के बाल ना एकदम सीधे थे ना एक दम घुंघराले थे। बल्कि हल्के घुंघराले थे। आप कान की लौ तक (कंधे से कुछ ऊपर) लंबे बाल रखते। आप सर में तेल लगाते थे।

(तिरमिजी)

- आप (स.) के ६३ वर्ष की आयु में केवल २० बाल सफेद हुए थे।

- आप (स.) की आंखे बड़ी थी। पुतली काली थी। सफेद हिस्से में लाल घारी थी। भवे लंबी। आप (स.) सुर्मा लगाते थे। (तिरमिजी)

- आप (स.) के हाथ पैर भरे हुए थे और रेशम की तरह नर्म थे। (तिरमिजी)

- आप (स.) का चेहरा बिल्कुल गोल नहीं था। मगर कुछ गोल था। (तिरमिजी)

- आप का सीना चौडा और कन्धे भरे हुए मजबूत थे। पेट सीने के बराबर था। (तोंद निकली हुई नहीं थी) (तिरमिजी)

- आप के चाल में तेजी थीं। आप मज़बूत कदम के साथ तेज़ चलते जैसे कोई उँचाई से नीचे ढलान की तरफ चला रहा हो।

(तिरमिजी नं. 386)

ईश्वर हर पैगंबर को बहुत आकर्षक व्यक्तित्व देता है। ईश्वर ने आप (स.) को भी बहुत आकर्षक व्यक्तित्व दिया था। लोग एक नज़र देखते ही प्रभावित हो जाते। और जो आपके निकट रहता वह अपनी जान से भी अधिक आप से प्रेम करता। (मिश्कात नं Vol 5, 373)

****

हजरत मुहम्मद (स.) के उपदेश

हज़रत मुहम्मद (स.) के उपदेश

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने जो कुछ कहा था उन्होंने जो जिवनशैली अपनाया था। उन सब को विद्वानों ने लिख लिया था। उन विद्वानों ने जो पुस्तकें लिखी वह उनके नाम से प्रसिद्ध हैं जैसे बुखारी, मुस्लिम, इब्ने माजा, तिरमिजी, अबु दाऊद इत्यादी। हज़रत मुहम्मद (स.) की कही हुई बातों को हदीस कहते है। हम यहाँ हदीस का सारांश या भावार्थ लिख रहे है और संदर्भ उन पुस्तकों का दे रहे है जहाँ से हमने उन्हें लिया है।

वैयक्तीक जीवन के लिए उपदेशः -

● अपने बच्चों का अच्छा नाम रखों क्योंकि कयामत के दिन ईश्वर के दरबार में सब नाम से पुकारे जाऐंगे। (मस्नद अहमद, अबुदाऊद)

● हर एक मुसलमान को शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है। (इब्ने माजा)

● शिक्षा प्राप्त करो। चाहे इस के लिए तुम्हें चीन जाना पड़े। (जईफ हदीस)

(३०० BE से १००० AD तक चीन विज्ञान का केंद्र था)

● स्वस्थ (Healthy) बनों। (मुस्लिम)
(क्योंकि तंदुरुस्त व्यक्ति समाज की सेवा कर सकता है।)

● अपने माता पिता की ऐसी सेवा करो के ईश्वर तुम को मुक्ति दे दे। जो ऐसा नहीं करता वह जीवन में अपमानित हो। (बुखारी)

● अगर तुम अपने माँ बाप से अच्छा व्यवहार करोगे तो तुम्हारे बच्चे भी तुम से अच्छा व्यवहार करेंगे। (मुसतदरक-७२५८)

● ईश्वर माता पिता की आज्ञापालन और सेवा करने से आयु बड़ा देता है।
(कन्जुमल आमाल-४५४६८)

● अगर माता पिता नाराज हुए तो ईश्वर भी नाराज़ होगा। (शोएबुल इमान-७८३०)

● आप (स.) बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। आप (स.) की सब से छोटी बेटी हज़रत फातिमा (रजि.) जब भी आप (स.) से मिलने आती आप (स.) उनके माथे को चूमते थे।

● आप (स.) ने कहा की जो छोटों से प्रेम और बड़ों का आदर ना करें वह मुसलमान नहीं।
(तिरमिजी, अबुदाऊद)

● युवाकों को चाहीए के अगर विवाह करना उन के लिए संभव हो तो विवाह कर लें। विवाह नज़रें निची रखता है और अश्लिलता से बचाता है। (इब्ने माजा Vol-2, Page 20)

● सब से शुभ विवाह वह है जिस में खर्चा कम से कम हो। (मस्नद अहमद-२४५२९)

● जो जानबूझकर जैसी जीवनशैली अपनाएगा। उसे उसी अवस्था में मौत आएगी।
(तिरमिजी)

(अर्थात कोई पाप करता रहे और सोचे के बुढापे में सज्जन हो जाऊंगा तो ऐसा नहीं होगा। वह व्यक्ति पाप करते ही मरेगा। इसलिए पाप

छोड़ने में देरी नहीं करनी चाहिए।)

● पुरुष अपनी निगाहें निची रखें। (पराई स्त्री को ना देखें।) (पवित्र कुरआन २४:३०)

● अपने आप को ऐश और आराम वाले जीवन से बचाओ क्योंकि ईश्वर के खास बंदे ऐश-व-आराम वाली जिंदगी नहीं गुज़ारतें। (मस्नद अहमद, मुन्तख्ब अबवाब Vol-2, No. 1317)

● किसी नशे वाली चिज़ और बुद्धी भ्रष्ट करने वाली चिज़ का उपयोग मत करो

(अबुदाऊद-३६८६)

● हमेशा सच बोलो, चाहे उस में नुकसान नज़र आता हो। क्योंकी सच्चाई में ही सफलता (बचाव) है। (कन्जुल आमाल ६९५६)

● ईश्वर का नाम लेकर एक साथ बैठ कर भोजन खाओ। इस से तुम्हारे लिए बरकत (संतुष्टी, समृद्धी) होगी। (अबुदाऊद-३७६४)

● सबसे बड़ा खतरा जबान से है।

(तिरमिजी-२४१०)

(लोग सब से अधीक नरक में अपनी गलत बातचित के कारण जाएंगे।)

● व्यक्ति को झुठा होने के लिए इतनी काफी है की वह सुनी सुनाई बात को जाचने और परखने से पहले लोगों से कहता फिरे।

(मुसलिम-८)

● पाप वह है जो तेरे दिल में खटके और तुझे अच्छा ना लगे की लोगों को इस की खबर हो।(मुस्लिम-६६८०)

● जो व्यक्ति ऐसा रास्ता चले जिस का उद्देश्य सत्य का ज्ञान प्राप्त करना हो, तो ईश्वर उसके लिए स्वर्ग का रास्ता आसान कर देंगे।

(मुस्लिम-६८५३)

● अगर तुम दुसरों के लिए भी वही पसंद करोगे जो अपने लिए पसंद करते हो तो पुरे पुरे मुसलमान हो जाओगे।

(मस्नद अहमद/तिरमिजी/मारुफूल हदीस Vol-2, Page 148)

सामाजिक जीवन के लिए उपदेश :-

● यह संसार ईश्वर का परिवार है। जो मानवजाति की सेवा करता है ईश्वर उस से प्रेम करता है। (मिश्कात, तर्जुमाने हदीस Vol-2, 239)

● कुछ लोगों को ईश्वर लोगों की सेवा के लिए ही बनाता है। जब लोगों को उन की आवश्यकता होती है तो उनकी तरफ दौड़ पड़ते है। ऐसे जनता की सेवा करने वालों को कयामत के दिन कोई चिंता ना होगी।

● आप (स.) ने कहा तुम धरती वालों से प्रेम और उपकार करो तो जो आकाश पर है (ईश्वर) वह तुम से प्रेम करेगा और तुम पर उपकार करेगा। (अबुदाउद, तिरमिजी)

● वह व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता है जिस से उस का पड़ोसी परेशान हो। (बुखारी)

● ईश्वर, पैगम्बर और शासक के आदेश का पालन करो। (पवित्र कुरआन ४:५९)

● व्यक्ती अपने मित्र के धर्म का पालन करता है। इसलिए हर एक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए के वह किस से मित्रता करता है।

(अबुदाऊद, तिरमिजी)

(अर्थात दृष्ट और अपराधीयों से मित्रता मत करों।)

● जिस समाज में न्याय नहीं होगा उस समाज में हिंसा की घटना बहुत होगी। (मुअत्ता-१६७०)

● तुम्हारे कर्म ही तुम्हारे शासक है। तुम्हारे जैसे कर्म होंगे, वैसे ही शासक तुम पर राज करेंगे। (जवाहीरे हिकमत)

● लोग कंघी के दानों की तरह है।

(जवाहिर हिकमत)

(सारे लोग एकदम बराबर है। जात-पात का कोई भेदभाव नहीं।)

● ऐ लोगो ईश्वर की प्रार्थना किया करो तो ईश्वर तुम्हें आसान (बगैर कठीनाई के) और पाकीज़ा (पवित्र) जीवन देगा। और तुम्हारे हृदय को धनवान (गनी/Rich) कर देगा। और अगर तुम लापरवाही करोगे तो ना तुम्हारी व्यस्तता (मसरुफीयत) कम करेगा और ना तुम्हारी पैसों की तंगी दूर करेगा।

(इब्ने माजा ४१०-तिरमिजी-२४६६)

(जो ईश्वर की प्रार्थना नहीं करते उन्हें काम से कभी फुरसत नहीं मिलेगी। और श्रीमंत होने के बावजुद उन के पास दान-धर्म या खुशी से खर्चा करने के लिए कभी Extra पैसा नहीं होगा।)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की, ''पैगंबरों में मैं सब से आखरी पैगंबर हूँ। अब कोई पैगंबर नहीं आएगा। और इस युग के बाद (कयामत तक) सब को मुझे आखरी पैगंबर मानने और ईश्वर को एक मानने पर ही मुक्ती मिलेगी।''

(मुस्लिम,मुन्तखब अबवाब Vol-1, Page-70)

● अगर सागर में उंगली डाल कर निकालो तो जो पानी उंगली में लगा रहता है वह उस सागर कि पानी कि तुलना में जितना कम है उतना ही कम हमारी इस धरती का जीवन परलोक के जीवन की तुलना में है। (मुस्लिम, तिरमिजी, तर्जुमाने हदीस, Vol-1, Page-26)

(अर्थात परलोक का जीवन अंनत है।)

● इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर ईश्वर उस दिन से पहले किए हुए सभी पापों को क्षमा कर देता है।

(मुस्लिम, मुन्तख्ब अबवाब, Vol-1, Page-80)

(बाद में किए हुए पापों का हिसाब किताब होगा।)

व्यवसाय से सम्बधीत उपदेश :-

● हमेशा सकारात्मक सोचो। यहाँ तक के अगर तुम को विश्वास हो के अभी कयामत आने वाली है। और तुम्हारे पास कोई पौधा (Plant) है और इतना समय है की उसको लगा सकों तो उसे लगा दो।

(आदाबे मुफ़ारद-उर्दु ४७९)

● ईश्वर की अनिवार्य प्रार्थना के बाद अपने परिवार के पालन पोषन के लिए धन कमाना भी अनिवार्य है। (तिबरानी कबीर ९७५१) (अर्थात नमाज, रोज़ा, जकात, हज़ यह तो करना ही है। इस के साथ आदरनीय माध्यम से धन कमाना भी अनिवार्य है। कोई बाबा बन कर धन कमाए तो यह गलत है।)

● जो आदरणीय जीवन बिताने अपने माता पिता की सेवा करने और अपने पत्नी और बच्चों के पालनपोषण के लिए उचित माध्यम से रोज़ी रोटी कमाता है तो उस का यह कर्म ईश्वर की प्रार्थना है। (तिबरानी)

● ईश्वर ने उन्नती (बरकत) के बीस भाग किए हैं। उस में से १९ भाग व्यापार को दिया है और नौकरी करनेवालों को एक भाग दिया है।

(कन्जुल आमाल १६/४, रकमुल हदीस ९३५४)

● ईश्वर जिस माध्यम (Source of income) से तुम को रोजी रोटी दे उस को उस समय तक मत छोड़ो जब तक उस से Income होना बंद ना हो जाए या और कोई दूसरी समस्या ना हो जाए। (इब्ने माज़ा, कन्जूल अममाल ९२६६)

(नया व्यवसाय तलाश करते रहो मगर पुराना मुख्य व्यवसाय को बंद मत करो।)

- जो दास है (इस युग में यह कामगार हैं) यह तुम्हारे भाई है। इन्हें ईश्वर ने तुम्हारे सेवा में रखा है। अगर ईश्वर ने एक भाई को दूसरे भाई की सेवा में रखा है तो उस धनवान भाई को अपने सेवक से सबसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए। उन्हें वही खिलाओ जो तुम खाते हो। उन्हें वही पहनाओं जो तुम पहनते हों। उन से कठिन काम लेना पड़े तो उन की सहायता करों। (बुखारी, मुस्लिम, अबुदाऊद, तिरमिजी)
- धरती के गुप्त खज़ानों में अपनी रोजी तलाश करों। (कन्जूल अनमाल- Vol-2, Page 197)
- मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो। (इब्ने माज़ा)
- जो काम करो उत्तम तरीके से करो। (मुस्लिम, हदीसे नबवी नं.३६५)
- हलाल तरीके से रोज़ी कमाओ। (मुसमदरक हाकीम-२१४)
- धोखा मत दो। (इब्ने माजा-२२५०)
- दूसरी बार धोखा मत खाओ। (बुखारी, मुस्लिम)
- झूठ मत बोलों। (बुखारी, मुस्लिम)
- अपने बेचे हुए सामान की गारंटी दो। (इब्ने माजा-२२६५)
- किसी का नुकसान मत करों। (इब्ने माजा २२४८)
- किसी का शोषण मत करों। (इब्ने माजा २२५३)
- अपने वचन को पूरा करों। (पवित्र कुरआन ५:१)
- जब सामान का वज़न करों तो झुकता तौलो। (थोड़ा सा अधिक दो।) (तिरमिजी-२३०५)
- भाव बढ़ाने के लिए माल को रोक कर मत रखों। (इब्ने माजा-२२२९)
- ना ब्याज़ लो और ना ब्याज़ दों। ना किसी के ब्याज के लेनदेन में सहायता करो। (मिश्कात)
- अपने लेनदेन का लिखित रेकोर्ड रखों। (तिरमिजी, पवित्र कुरआन २:२९२)
- पेड़ पर फसल आने से पहले उस फसल के सारे फलों का Advance में सौदा मत करों। (इब्ने माजा-२२६५/२२९४)
- सामान बेचते समय Fixed Rate वाली पॉलीसी अपनाओ। (इब्ने माजा-२२८१)
- किसी की मज़बूरी का लाभ मत उठाओं। (इब्ने माजा-२२६९)
- जो चीजें तुम्हारे ताबें में है केवल उनका सौदा करो। (इब्ने माजा)
- नाई (हजाम) मत बनों। (इब्ने माजा-२२४२)
- चित्रकार मत बनों। (इब्ने माजा-२२२७)
- अभिनेता मत बनों। (तिरमिजी, सफिना निजात-२३७)
- लैंगीकता (Sex) से जुड़े सारे कारोबार मत करो। (मुताफिका अलेह)
- दारु, जुआ, ज्योतिष शास्त्र से जुड़े कारोबार मत करों। (मुताफिका अलेह)
- नाच गाने से ज़ुड़ा कोई कारोबार मत करो। (मुताफिका अलेह)
- जो व्यक्ति चोरी का माल खरीदे और उसे

मालूम हो के वह माल चोरी का है तो वह उस चोरी के पाप में साझीदार है। (मुसतदाक-२२५३)

● कारोबार में बिल्कुल मत डूब जाओ। (तिरमिजी)

(परिवार, समाज और धर्म के लिए भी समय दो।)

● पाप करने से ईश्वर रोज़ी छीन लेता है।
(मुस्लिम ३७२१, इब्ने माज़ा मस्नद अहमद २१८८१)

● सुबह देर तक सोने से रोजी कम हो जाती है। (मस्नद अहमद Vol-1, 73)

● जिस धन से दान (जकात) नहीं निकाला जाता वह धन बर्बाद हो जाता है।
(मिश्कात, सफिना निजात -60)

● कर्ज लेने से बचो, क्योंकि यह रात में चिंता और दिन में अपमान का कारण है।
(जवाहीर हीकमत)

● जो व्यक्ति लोगों से कर्जा ले और उस का इरादा कर्जा चुकाने का होगा तो ईश्वर उस की कर्ज चुकाने में मदद करेगा। और कोई व्यक्ति दूसरो से कर्ज ले और उसकी नियत पहले से ही कर्ज ना चुकाने की हो तो ईश्वर उस को बरबाद कर देगा।
(बुखारी, मारुफूल हदीस, Vol-2, Page 99)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने रिश्वत लेने वाले और देने वाले दोनों पर लानत की है। (श्राप दिया है।)(अबुदाऊद, तर्जुमाने हदीस, Vol-1, No-299)

महिलाओं के बारे में आप (स.) के उपदेश:

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की बेटियों से नफरत (घृणा) मत करो। क्योंकि वह बहुत प्रेम करने वाली और मुबारक (शुभ) होती है।
(मस्नद अहमद-१७३७३)

● आप (स.) ने फरमाया के महिलाओं से आदरपूर्वक और नम्रता से व्यवहार करो।
(जवामाउल कलम)

● आप (स.) ने फरमाया के तुम सब में सब से अच्छा वह व्यक्ती है जो अपनी पत्नी से व्यवहार में सब से अच्छा हो। (तिरमिजी ११६२)

● आप (स.) ने फरमाया की जिस ने दो बेटियों को अच्छी तरह से परवरिश की, वह स्वर्ग में मेरे निकट होगे। (इब्ने माजा ३६७०)

● हज़रत अब्दुल बिन अब्बास कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की, जिस की कोई बेटी हो या बहन हो और वह उस से अपने बेटों जैसा अच्छा व्यवहार करें तो अल्लाह उसे स्वर्ग देगा। (अबु दाऊद-५१४६)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की यह तुम्हारे लिए अनिवार्य है की तुम अपनी पत्नी के लिए अच्छे तरीके से खाने और कपड़े की व्यवस्था करो। (मुस्लिम ३७२१)

● महिलाओं का (पुरुषों को आकर्षित करने के लिए) आभुषण सजा कर और खुशबु लगा कर सड़क पर चलना पाप है। (अबुदाऊद, तिरमिजी)

● महिलाएं अपनी निगाहें निची रखें। अपने आभुषनों का प्रदर्शन ना करें। अपने सिनों पर ओढनी ड़ालें रखें। और अपने असमत (Chastity) की रक्षा करें। (पवित्र कुरआन २४:३१)

● महिलाएं जब घर से बाहर निकले तो अपने उपर चादर डाल लें। इस से उनकी पहचान होगी और कोई उन को कष्ट नहीं देगा।
(पवित्र कुरआन ३३:५९)

● अपने समाज की विधवाओं का विवाह कर दिया करों। (पवित्र कुरआन २४:३२)

****

हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में विद्वानों के विचार

महाऋषी व्यास जी की भविष्यवाणी

महाऋषी श्री वेद व्यास जी हिंदू धर्म के सब से बड़े विद्वान है। महाभारत आप ही ने लिखा है। श्री कृष्ण जी के आदेश जो उन्होंने अर्जुन को दिए थे उन को भी पुस्तक के रुप में आप ही ने लिखा है। इसी पुस्तक को गीता कहते है। चारों वेदों में ऋचा और सुक्त की तरतीब आप ही ने दी है। आप ने १७ पुराण लिखे है। उन में से एक पुराण का नाम भविष्य पुराण है। विद्वान मानते है की भविष्य पुराण के बोल (ज्ञान) ईश्वरी है। केवल लिखा श्री व्यास जी ने है।

श्री व्यास जी आज से ४००० वर्ष पहले गुज़रे है। हज़रत मुहम्मद (स.) आज से १५०० वर्ष पहले गुज़रे है। श्री व्यास जी ने हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म के २५०० वर्ष पहले ही उन की भविष्यवाणी भविष्यपुराण में लिख दिया था।

भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व ३, अध्याय ३, खंड ३, कलियुगी इतिहास समुच्चय में २७ श्लोक इस्लाम धर्म और हज़रत मुहम्मद के बारे में है। उन भविष्यवाणी का सारांश निम्नलिखित है,

- भारत वर्ष में धर्म की शिक्षा लोग भूल जाऐंगे।
- भारत से दूर अरब देश (रेगिस्तान) में मुहम्मद (स.) पैदा होंगे।
- ईश्वर उन्हें ब्रम्हा की पदवी देगा और वह मानवजाति को फिर से धर्म की शिक्षा देंगे।
- भारत में आर्या धर्म का सुधार होगा और सारे लोग मुसलमान हो जाऐंगे।
- श्री व्यास जी ने महान आचार्य हज़रत मुहम्मद के चरणों में शरण लेने की इच्छा व्यक्त की है।

भविष्यपुराण के कई श्लोकों में हज़रत मुहम्मद (स.) के नाम के साथ भविष्यवाणी की गई है उन में से कुछ श्लोक निम्नलिखित है।

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येरा समन्वितः।
महामद इति रव्यात शिष्यशाखासमन्वितः।।५।।

अयोनिः स वरो मत्तः प्राप्तवान्दैत्यवर्द्धनः ।
महामद इति ख्यात पैशाचकृनितत्परः।।१२।।

इति श्रुत्वा नृपश्चैव स्वदेशानपु नरागमतः।
महामदश्च तैः सार्द्धे सिंधुतीरमुपाययौ।।१४।।

तच्छू त्वा कालिदासस्तु रुषा प्राह महामदम।
माया ते निर्मिता धूर्त नृपमोहनहेतवे ।।१८।।

विना कौलं च पशवस्तेषां भक्षया मता मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति।।२६।।

(Ref. Muhammed in world Scripture by A.H.Vidyarthi. Page No. 35-43, Bhavishya puran printed by venkateshwar press-Mumbai)

महाकवी गोस्वामी तुलसीदासजी की भविष्यवाणी

संग्राम पुराण की गणना पुराणों में की जाती है। इस पुराण में भी ईश्वर के अंतिम ईशदूत और पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (स.) के आगमन की पूर्व-सूचना मिलती है। पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने अपनी मशहूर किताब ''अंतिम ईश्वरदूत'' में लिखा है : ''कागभुसुन्डी और गरुड़ दोनों श्री राम जी की सेवा में दीर्घ अवधि तक रहे। वे उनके उपदेशों को न केवल सुनते ही रहे, बल्कि लोगों को सुनाते भी रहे। इन उपदेशों की चर्चा तुलसीदास जी ने 'संग्राम पुराण' के अपने अनुवाद में की है, जिसमें शंकर जी ने अपने पुत्र षण्मुख को आनेवाले धर्म और अवतार (ईशदूत) के विषय में पूर्व-सुचना दी है।'' अनुवाद इस प्रकार है;

यहां न पक्षपात कछु राखहुं।
वेद, पुराण, संत मत भाखहुं ।।
संवत विक्रम दोऊ अनङ्गा ।
महाकोक नस चतुर्पतङ्गा ।।
राजनीति भव प्रीति दिखावै।
आपन मत सबका समझावै।।
सुरन चतुसुदर सतचारी।
तिनको वंश भयो अति भारी।।
तब तक सुन्दर मद्दिकोया।
<u>बिना महामद पार न होया</u>।।
तबसे मानहु जन्तु भिखारी।
समरथ नाम एहि व्रतधारी।।
हर सुन्दर निर्माण न होई।
तुलसी वचन सत्य सच होई।।

(संग्राम पुराण, स्कन्द १२, कांड ६ : पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास)

● पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने इनका भावानुवाद इस प्रकार किया है-''(तुलसीदास जी कहते हैं:) मैंने यहाँ किसी प्रकार का पक्षपात न करते हुए संतो, वेदों और पुराणों के मत को कहा है। सातवीं विक्रमी सदी में चारों सूर्यों के प्रकाश के साथ वह पैदा होगा। राज करने में जैसी परिस्थितियाँ हों, प्रेम से या सख्ती से वह अपना मत सभी को समझा सकेगा। उसके साथ चार देवता (प्रमुख सहयोगी) होंगे, जिनकी सहायता से उसके अनुयायियों की संख्या काफ़ी हो जाएगी। जब तक सुन्दर वाणी (क़ुरआन) धरती पर रहेगी महामद (हज़रत मुहम्मद (स.)) के बिना मुक्ति (निजात) नहीं मिलेगी। इन्सान, भिखारी, कीड़े-मकोड़े और जानवर इस व्रतधारी का नाम लेते ही ईश्वर के भक्त हो जाएँगे। फिर कोई उसकी तरह का पैदा न होगा (अर्थात, कोई रसूल नहीं आएगा) तुलसीदास जी ऐसा कहते हैं कि उनका वचन सत्य सिद्ध होगा।

● कोष्ठक में दिए गए शब्द व्याख्या के लिए लिखे हैं।

यहाँ एक और संदर्भ स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा कि संग्राम पुराण की गणना भले ही अर्वाचीन पुराणों में की जाती हो, लेकिन इसका आधार प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथ ही हैं, जैसा कि अन्य पुराणों व ग्रंथो एवं विचारों के आधार पर अर्थात भूतकालिक प्रमाणों की रौशनी में हज़रत मुहम्मद (स.) के आगमन की सूचना दी गई है। अत:पुराण के अर्वाचीन अथवा प्राचीन होने से संबधित तथ्य के निरुपण में कोई गतिरोध नहीं पैदा होता।

● ''अंतिम ईश्वरदूत'' यह किताब १९२७ में नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, दरियागंज, दिल्ली से सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी।

● 'हज़रत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रंथ' लेखक डॉ.एम.ए श्रीवास्तव.

संत तुकाराम (१५७७-१६५०) यह महाराष्ट के एक महान संत है। आप देहू (पूने के करीब) पैदा हुए। आप समाज में गरीबों पर हो रहें अत्याचार के सख्त खिलाफ थे। आप के लिखे हुए अभंग बहुत प्रसिद्ध है। उन में से एक हम यहाँ लिख रहे है।

अल्ला देवे अल्ला दिलावे
अल्ला दारु (दाता)।
अल्ला खिलावे।
अल्ला बिगर नहीं कोय।
अल्ला करे सोहि होय।।

भावार्थ :- ईश्वर देता है। ईश्वर दिलाता है। ईश्वर खिलाता है। ईश्वर की आज्ञा के बिना कुछ नहीं हो सकता है। जो ईश्वर चाहता है वही होता है।

अव्वल नाम अल्ला बडा
लेते भूल न जाये।
इलाम त्याकालजमुपरताही तुंब बजाये।।१।।

भावार्थ:- सब से पहला नाम ईश्वर का है जो महान है। उस का नाम लेना मत भूलो। उसकी तुंब बजाते हुए प्रार्थना करो।

अल्ला एक तुं
नबी एक तुं।
काटतें सिर पावों हातें
नहीं जीव डराये।।२।।

भावार्थ:- ईश्वर एक ही है। उसके नबी (आखरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद (स.)) भी एक ही है। ईश्वर और पैगम्बर को मानने के बाद सत्य के मार्ग पर चलते समय सर पाँव कटने का भी ड़र नहीं रहता।

प्यार खुदाई प्यार खुदाई प्यार खुदाई।
प्यार खुदाई बाबा जिकिर खुदाई ।।२।।

भावार्थ:- (यह संसार ईश्वर का कुटुम्ब है इसलिए) लोगों से प्रेम करना यह ईश्वर के इच्छा के अनुसार है।

(ईश्वर ने मनुष्य को अपने प्रार्थना के लिए पैदा किया इसलिए) ईश्वर के नाम का जिक्र करना या जाप करना यह भी ईश्वर के इच्छा अनुसार है।

अल्ला करे सो होय
बाबा करतारका सिरताज।
जिकर करो अल्लाकी
बाबा सबल्यां अंदर भेस।
कहे तुका जो नर
बुझे सो हि भया दरवेस।।३।।

भावार्थ:- अगर ईश्वर चाहते तो किसी भी व्यक्ति का आदर सर पर पहने वाले मुकुट की तरह होता है। इसलिए (इस बात को समझो और) मन की गहराई से ईश्वर की प्रार्थना करो। और जो इस सत्य को जान लेता है वह ही ज्ञानी (दरवेश या संत) होता है।

बाट खाना
अल्लाह कहना एकबारा तो ही।
अपना नफा देख
कहे तुका सो ही सखा
हाक अल्ला एक ।। ६।।

भावार्थ:- ईश्वर ने जो दिया है उसमें से गरीबों को दान करो। और कम से कम दिन में एक बार तो ईश्वर को याद करो।

तुकाराम महाराज जो आपके मित्र है, वह कहते है की, ईश्वर एक है ऐसा (पुकारने) कहने में ही नफा (दोनों लोक की सफलता) है।

संदर्भ:- सार्थ श्री तुकारामाची गाथा
संपादक:- विष्णुबुवा जोग महाराज पान नं. ८९२/८९३/८९४

महामति प्राणनाथी जी की शिक्षा

हिन्दुओं के वैष्णव समुदाय में प्राणनाथी सम्प्रदाय उल्लेखनीय है। इसके संस्थापक एवं प्रवर्तक महामति प्राणनाथ थे। आपका जन्म का नाम मेहराम ठाकुर था। प्राणनाथजी का जन्म १६१८ ई. में गुजरात के जामनगर शहर में हुआ था। आपने इन्सानों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी और एक ही निराकार ईश्वर की पूजा-उपासना पर बल दिया। आपने नबूवत अर्थात ईशदूतत्व की धारणा का समर्थन किया और इसे सही ठहराया। प्राणनाथ जी कहते हैं-

कै बड़े कहे पैगंबर,
पर एक महामद पर खतम।

अर्थात, धर्मग्रंथों में अनेकों पैगम्बर को बड़ा कहा गया है। किन्तु हज़रत मुहम्मद (स.) पर ईशदूतों की श्रंखला समाप्त हुई। हज़रत मुहम्मद (स.) आखिरी पैगम्बर हुए।

प्राणनाथ जी ने एक स्थान पर लिखा-

रसूल आवेगा तुम पर,
ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अरस की,
देखी सब पेहेचान।।

अर्थात, (ईश्वर ने कहा;) मेरा रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) तुम्हारे पास मेरा संदेश लेकर आएगा। जिसने मेरे अर्श (तख्त) को अच्छी तरह पहचाना हुआ है। अर्थात जो मेरे आदेशों और धर्म को अच्छी तरह जानता है।

(मारफत सागर, पृ. १९, श्री प्राणनाथ मिशन नई दिल्ली)

(हज़रत मोहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ, डा. एम.ए.श्रीवास्तव)

इति अल्लोपनिषद के श्लोक

आदल्ला बुक मेककम
अल्लबूक निखादकम ।।४।।
इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।

अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला सुर्य चंद्र सर्व नक्षत्रा।।५।।
अल्लाह की युगों युगों से प्रार्थना हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।

अल्लों ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्रायपूर्व माया परमन्तरिक्षा।।६।।
अल्लाह संतो का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से पहले है और सारे ब्रम्हांड से अधिक विलक्षण (Mysterious) है।

अल्ल पृथिव्या अन्तक्ष्रिं विश्वरुपम् ।।७।।
अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सोर्य मंडल की सभी वस्तुओं में होता है।

इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।
अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।

ओम अल्ला इल्लला अनदि।
ऊँ (Om) अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।

दे स्वरुपाय अथर्वण श्यामा हुही जनान पशून सिद्धान। जलवरान् अदृश्टं कुरु कुरु फट।

ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लोगों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों का नाश कर, और पानी के नुकसान पहुँचाने वाले किटाणुओं (Bacteria और Virus) से हमारी रक्षा कर।

असुरसंहारिणी हुं ही अल्लो रसुल महमदरकबरस्य अल्लो।
अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स.) अल्लाह के पैगंबर हैं।

अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला।
अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं।
(अल्लोपनिषद ४-१०)

संत तुकडोजी महाराज

संत तुकडोजी महाराज (सन १९०९-१९६८) उनका जन्म यावली (महाराष्ट) में हुआ था। उन्होंने पारखेड ग्राम के समर्थ अडकोजी महाराज से आध्यात्मिक दिक्षा प्राप्त की थी। वह एक महान अध्यात्मिक संत थे। उन्होंने मराठी और हिन्दी भाषा में ३००० से अधिक भजन (अध्यात्मिक कविता) रची थी। उनके धार्मिक योगदान के लिए उन्हें डा. राजेंद्रप्रसाद (उस समय के राष्ट्रपति) द्वारा राष्टसंत यह पदवी मिली थी।

संत तुकडोजी महाराज की लिखी हुई एक मराठी भाषा की कविता इस तरह है।

मुहम्मदाने केली प्रार्थना।
विखुरला इस्लाम कराया शहाणा।।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने परीश्रम किया जिस के कारण इस्लाम विश्व में फैल गया और लोक जागृत (ज्ञानी) हो गए।

संघटित केले त्याने स्वजना
तया काळी।।९०।।
लोक प्रतिमापूजक नसावे।
त्यांनी एका ईश्वरासि प्रार्थावे।।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस समय के सभी लोगों को इस शिक्षा पर जमा (सहमत) किया कि मूर्ति पूजा ना करो और केवल एक ईश्वर की प्रार्थना करो।

हा मुहम्मदांचा उपदेश।
नव्हे एकाच देशासाठी।।९।।

हज़रत मुहम्मद (स.) का यह उपदेश केवल अरब के लिए नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए है।

राष्टसंत तुकडोजी महाराज विरचित ग्रामगीता: अध्याय क्र. २७, ओवी ९० पृष्ठ २९४ अध्याय क्र. २८, ओवी ९ पृष्ठ २९७

बाईबल में हज़रत मोहम्मद (स.) का उल्लेख

● हज़रत मुहम्मद (स.) केवल अरबों में धर्म का प्रचार करने या केवल मुसलमानों को मुक्ति दिलाने नहीं आए थे। बल्कि ईश्वर ने उन्हें सारी दुनिया के लिए भेजा था। और यही बात (Jesus Christ) हजरत ईसा (अ.स) ने बरनाबास बाइबल में कहा था।

बरनाबास बाइबल क्या हैं?

● बाइबल छ: तरह के हैं। पहले बाइबल को Old Testament कहते है। इसे ईश्वर ने हज़रत मुसा (अ.स.) पर अवतरित किया था। यह हज़रत ईसा (अ.स.) के जन्म से पहले अवतरित हुआ था इसलिए इस में हज़रत ईसा (अ.स.) के बारे में कुछ नहीं है। इस के बाद Mark, Matthew, Luke और युहाना इन चार लोगों ने हज़रत ईसा (अ.स.) के पृथ्वी से चले जाने के ७० वर्ष या उस से अधिक समय बाद जो हजरत ईसा (अ.स.) की जीवन कथा लिखा वह 'बाईबल' कहलाता है। और उनकी लिखी हुई बाईबल उन चारों के नाम से है। फिर चारों बाईबल को एक पुस्तक बना दिया गया और New Testament नाम दिया गया। इन चारों बाईबल में हज़रत ईसा (अ.स.) को अल्लाह का बेटा कहा गया है। (ईश्वर हमें ऐसा कहने पर क्षमा करें।) छटे बाइबल को हजरत ईसा (अ.स.) के एक साथी (Apostle) बरनाबास ने लिखा था। मगर इस बाईबल में उन्होंने ईश्वर को एक और हज़रत ईसा (अ.स.) को पैगम्बर बताया है। जो के इसाई धर्म के शिक्षा के विरुद्ध है। इसलिए पोप Athanasins ने 367AD में, पोप Damasius ने 382AD में और Pop Gelasius ने 495AD में यानि हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म के ७५ वर्ष

पहले इसे Apocryphal अर्थात गलत घोषित किया। धर्म के विरुद्ध पुस्तक घर में रखना भी पाप समझा जाता और दण्ड दिया जाता था। इसलिए यह बाइबल १७०० वर्ष लोगों की नज़रों से छुपी रही। १७०९ में इस की एक कॉपी Italian भाषा में ऐमस्टराडेम के एक लाईब्रेरी में मिली। अठरावी शताब्दी के आरंभ में एक और कॉपी स्पॅनिश भाषा में मिडली के मुकाम पर डॉ.महेलममेन को मिली। उसके बाद इस का फिर बहुत प्रचार, भाषांतर और छपाई हुई। इस बाइबल में केवल एक ईश्वर की प्रार्थना का उपदेश है और हज़रत मोहम्मद (स.) की स्पष्ट भविष्यवाणी है। इस बाइबल के कुछ अध्याय निम्नलिखित है।

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं १२ :-

हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा हम ईश्वर के पवित्र नाम की प्रशंसा करते हैं, जिस ने सभी महापुरुषों और पैगम्बरों के सरताज (हजरत मुहम्मद) को सभी प्राणियों के पहले पैदा किया। ताकि उसे सभी लोगों के कल्याण (मुक्ति) के लिए भेजे।

(अध्याय १२ बरनाबास की बाइबल)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ३९ :-

● जब ईश्वर ने मनुष्य (हज़रत आदम) के शरीर में आत्मा को प्रवेश कराया तो फरिश्तों ने (खुशी से) कहा ''ऐ हमारे ईश्वर! तेरा पवित्र नाम महान है।''

जब आदम खड़े हुए तो उन्होंने हवा में सूर्य की तरह उज्जवलित एक लेख देखा जिस में लिखा था। ''ईश्वर एक है और मुहम्मद ईश्वर के पैगम्बर है''

आदम ने ईश्वर से कहा ''ऐ मेरे मालिक! मेरे खुदा, मुझे इस लेख का अर्थ बता। क्या मुझ से पहले भी तूने किसी मनुष्य को बनाया है?'' तब ईश्वर कहेगा, ''ऐ मेरे बन्दे आदम! मैं तुझे बताता हूँ की तू ही पहले मनुष्य हो जिसे मैंने बनाया है। और जिस का नाम तूने लिखा देखा वह तेरा बेटा है। जो पृथ्वी पर बहुत वर्ष बाद आएगा। वह मेरा पैगम्बर होगा। उसी के लिए मैंने इस सृष्टि का निर्माण किया है। जब वह आएगा तो विश्व को प्रकाशित करेगा। उस की आत्मा मैंने इस सृष्टि को बनाने के साठ हजार वर्ष पूर्व बनाया था और अपने दैविक खज़ाने में रखा था। (अध्याय ३९ बरनाबास की बाइबल)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ४४ :

● हजरत ईसा (अ.स.) ने कहा मैं तुम से कहता हूँ के यह रसूल (हज़रत मुहम्मद (स.)) ईश्वर की एक शान (Splendor) है। जो उन सभी को प्रसन्नता (मुक्ति) प्रदान करेंगे जिनको ईश्वर ने बनाया है। क्योंकि ईश्वर ने उन्हें बुद्धि, शक्ति, न्याय, शराफत, साहस इत्यादि सभी प्राणियों से तीन गुना अधिक दिया है।

क्या ही शुभ दिन होगा वह जब पृथ्वी पर जन्म लेंगे। मेरा विश्वास करो मैंने उन्हें देखा है और उन का आदर-सम्मान किया है। जैसे हर पैगम्बर उन्हें देखते है। क्योंकि उन्हीं की आत्मा से ईश्वर ने सभी को पैगम्बरी दी है। जब मैंने उन्हें देखा तो यह कह कर के मेरी आत्मा संतुष्ट हो गई की, ''ऐ मुहम्मद! ईश्वर तेरे साथ हो, और मुझे इस लायक बनाए की मैं तेरे जूते का फिता बांध सकु। क्योंकि ऐसा करके में एक बड़ा पैगम्बर और ईश्वर का प्रिय हो जाऊँगा।'' ऐसा कहकर हज़रत ईसा ने ईश्वर का आभार माना (शुक्र अदा किया)

(अध्याय ४४ बरनाबास की बाइबल)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ९७/B :-

● तब पुरोहितों ने पुछा ''वह मसीहा किस नाम से जाना जाएगा और उस के आने की क्या निशानी है। हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा, ''उस मसीहा का नाम 'प्रशंसा के योग्य' होगा।''(इस नाम का अनुवाद संस्कृत में नराशंस और अरबी में माहम्मद होता है) क्योंकि खुद ईश्वर ने उसका यह नाम उस समय रखा था जब ईश्वर ने उसे पैदा किया था और दैविक खजाने में रखा था।

(उसे पैदा करने के बाद) ईश्वर ने कहा, मुहम्मद प्रतिक्षा करो, क्योंकि मैं तेरे लिए स्वर्ग, धरती और अधिक संख्या में प्राणी पैदा करना चाहता हूँ, जिन को मैं उपहार में तुझे दूंगा। इन में से जो तुझे शुभ कहेगा वह खुद भी शुभ होगा। और जो तुझे बुरा कहेगा वह खुद बुरा (प्रकोपित) होगा। जब मैं तुझे पृथ्वी पर भेजूंगा तो सब को मुक्ति दिलाने वाला पैगम्बर बनाकर भेजूंगा। तेरा कथन (शिक्षा) इतनी सच्ची होगी के धरती आकाश जगह से हिल जाऐंगे मगर तेरी शिक्षा (धर्म) ना हिलेगा। ऐसे पवित्र अस्तित्व (पैगम्बर) का नाम मुहम्मद है।

तब हज़रत ईसा (अ.स.) की सभा के सभी सदस्यों ने ऊँचे स्वर में कहा, ''हे ईश्वर हमारे पास अपना पैगंबर भेज। ऐ मुहम्मद (स.)! मानवजाति के उद्धार के लिए जल्दी आइए।

(अध्याय ९७/B बरनाबास की बाइबल)

सारांश

● महाऋषी श्री वेद व्यास जी जो के महाभारत और सतरा (१७) पुराणों के लेखक है, और Jesus Christ (अ.स.) जीन के अनुयायी इस समय विश्व में सब से अधिक है, इन दोनों और बड़े-बड़े पैगम्बरों और आचार्यांने ईश्वर से हज़रत मुहम्मद (स.) के अनुयायी बनने की इच्छा व्यक्त की थी। मगर उनकी इच्छा पूरी ना हुई क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद (स.) से पहले जन्में थें। यह हमारा सौभाग्य है की हम उन के बाद पैदा हुए और हमें उनका अनुयायी बनने का अवसर मिला।

अगर हम उनको ना पहचाने और उनके आदेशों को मानने से इन्कार करें तो यह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य होगा।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और इस्लाम के बारे में जिन लोगों ने अपने नेक विचार व्यक्त किए हैं अगर हम उन सब की सूची बनाएँ तो वह इस पुस्तक से भी अधिक हो जाएंगे। इसलिए हम इस अध्याय का यही अंत करते है। आप ३० से अधिक गैर-मुस्लिम महापुरुषों के इस्लाम प्रति नेक विचार निम्नलिखित पुस्तक में पढ़ सकते है। यह पुस्तक हमारी वेबसाईट www.freeeducation.co.in से भी मुफ्त पढ़ी और डाऊनलोड की जा सकती है।

१) ''संत, महात्मा, विचारवंत और इस्लाम संदेश प्रकाशन पुणे-४११००५

२) पैग़म्बरें इस्लाम गैर-मुस्लिमों की नज़र में (फरीद बुक डेपो, नई दिल्ली.)

● हम इस अध्याय का अंत अथर्ववेद के ईश्वर की प्रार्थना (दुआ) वाले श्लोक से करते हैं।

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिर शीमहि। (अथर्ववेद- १८:३:६७)

अर्थात :- परमेश्वर इस (सत्य के) मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दें। ताकि हम जीते जी प्रकाश (सत्य के ज्ञान) को पायें।

****

पैग़म्बरों के दुश्मन कौन?

हज़रत जकरिया (अ.स.)

● हज़रत जकरिया (अ.स.) एक महान पैग़म्बर थे। उनकी यह शिक्षा के ईश्वर एक है लोगों को अच्छी नहीं लगी। और लोगों ने उन्हें मार डालना चाहा। वह जान बचाकर भागे मगर दुर्भाग्य से वह ऐसी जगह पहुँचे जहाँ छुपने की कोई जगह ना थी। उन्होंने एक पेड़ से शरण मांगी। पैग़म्बर की बात पेड़ कैसे टाल सकता था। उस का तना बीच से फट गया और हजरत जकरिया उस में समा गए। शैतान यह दृश्य देख रहा था। जब लोग पीछा करते हुए वहाँ पहुँचे तो शैतान ने इशारा करके हज़रत जकरिया (अ.स.) के छुपने की जगह लोगों को बता दी। और लोगों ने आरी से पेड़ को हज़रत जकरिया (अ.स.) के साथ बीच से चीर ड़ाला। इस तरह एक महान पैग़म्बर का अंत हुआ।

हज़रत याहया (अ.स.):-

● हज़रत याहया (अ.स.) यह भी एक बुजुर्ग पैग़म्बर गुजरे है। यह जिस प्रांत में पैग़म्बर हुए वहाँ का राजा (Hairo Antipass) अपनी भतीजी से शादी करना चाहता था। पैग़म्बर का काम ही है कि जब कुछ गलत हो तो लोगों को उससे सावधान कर दें। इस लिए उन्होंने राजा से कहा की आप का अपनी भतीजी से शादी करना उचित नहीं है। यह बात भतीजी और उस की माँ (Hairo Dias) को बहुत बुरी लगी और उन्होंने राजा से उपहार के रुप में हज़रत याहया का सर मांगा, और उस राजा ने उन दोनों को खुश करने के लिए हज़रत याहया (अ.स.) का सर तन से जुदा कर के उन्हें पेश कर दिया।

हज़रत ईसा (अ.स.) :-

हज़रत ईसा (अ.स.) भी एक महान पैग़म्बर थे। ईश्वर ने उन्हें अपनी कुदरत से बगैर बाप के पैदा किया था। वह जब पालने में थे, तब ही से लोगों से बात करते और ईश्वर का आदेश उन तक पहुँचाते थे।

ईश्वर ने इन्हें बहुत सारी चमत्कारी शक्ति दी थी। वह अंधो और कोढ़ी को अच्छा करते, मट्टी की चिड़िया बना कर फूँक मारते और वह जीवित हो कर उड़ जाती। यहाँ तक की वह मुर्दा व्यक्ति को भी ईश्वर के आज्ञा से जीवित कर देते।

बाइबल का एक श्लोक है कि, हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा की तुम ऐसे मत समझो के मैं पुराने धर्म को नष्ट करने आया हूँ बल्कि में तो उसी धर्म को स्थापित करने आया हूँ।

(बायबल St. Matew 5:17)

अर्थात हज़रत ईसा (अ.स.) से पहले हज़रत मूसा (अ.स.) ने लोगों को जो धर्म सिखाया था, हज़रत ईसा (अ.स.) ने वही शिक्षा लोगों को दी और धर्म में आए बिगाड को दूर किया। हज़रत ईसा (अ.स.) ३२ साल की आयु तक लोगों को निरंतर धर्म की शिक्षा देते रहे। मगर समाज के कुछ लोगों को उन कि शिक्षा अच्छी नहीं लगी। उन्होंने एक षडयंत्र रचा और विद्रोह के झूठे आरोप में आप को गिरफ्तार करवा कर जान से मारने की पूरी

कोशिश की।

पैग़म्बरों से लोग दुश्मनी क्यों करते है?

● हमने तो सिर्फ तीन पैग़म्बरो का यहाँ वर्णन किया है मगर वास्तव में लोग हजारों पैग़म्बरों का कत्ल कर चुके हैं।

मगर पैग़म्बरों की हत्या क्यों की जाती है?

क्या पाप किया था उन महान और पवित्र पैग़म्बरोने?

आईए हम इस विषय में कुछ जानने की कोशिश करते है।

● जैसे राजनिति एक व्यवसाय है। लोग नेता करोड़ों रुपया कमाने और सत्ता में रहने के लिए बनते है। इसी तरह धार्मिक गुरु बनना भी एक व्यवसाय है। इस में भी बहुत अधिक धन सत्ता और सम्मान मिलता है।

ईसाईयो के पोप का एक हजार वर्ष तक यूरोप पर राज रहा। उन का आदेश टालने की या उनके विरुद्ध एक शब्द भी कहने की किसी यूरोपियन राजा में हिम्मत न थी।

यही हाल हर धर्म और हर प्रांत में धार्मिक गुरुओं का रहा है।

किसी भी पैग़म्बर के आते ही इन धार्मिक गुरुओं की दुकान एक दम से बंद हो जाती है। इसलिए ऐसे लोगों ने हमेशा पैग़म्बरो का विरोध किया।

● समाज के धनवानों में बहुत से ऐसे होते है जिन्होंने धन गरीबों का शोषण करके कमाया होता है। पैग़म्बर आता ही इसलिए है की गरीबों का शोषण बंद हो, अत्याचार खत्म हो, हर तरफ न्याय और शांति हो। धनवान अपनी सत्ता और शोषण के व्यवसाय को बंद नही होने देना चाहता है इसलिए यह धनवान वर्ग भी हमेशा से पैग़म्बरों का शत्रु रहा है।

● पैग़म्बरो को सताने और बदनाम करने का यह काम उन पैग़म्बरों के जीवन के समाप्त होते ही खत्म नहीं हो जाता था, बल्कि उन पैग़म्बरो के धर्म और शिक्षाओं पर से लोगों का विश्वास कम करने के लिए लोग उन के मृत्यु के पश्चात भी उनको बदनाम करने का काम जारी रखते थे।

उनके बदनाम करने के दो तरीके थे। एक तो वह उस पैग़म्बर की अवतरित ग्रंथ में गलत बाते शामिल करने का प्रयास करते थे। दूसरे वह उस पैग़म्बर के चरित्र को बदनाम करने की कोशिश करते थे।

● जो कुछ शिक्षा हज़रत मूसा (अ.स.) ने लोगों को दिया था उसी का पालन हज़रत ईसा (अ.स.) खुद भी करते और लोगों को भी करने का उपदेश देते।

हज़रत मूसा (अ.स.) ने खुद भी विवाह किया था और वैवाहिक जीवन उनकी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग था। अगर हज़रत ईसा (अ.स.) विवाह करते तो यह कोई पाप न था। ना उनकी बदनामी होती। मगर हज़रत ईसा (अ.स.) ने पूरी तरह अपने आप को धर्म की पुन: स्थापना के लिए अर्पित कर दिया था। ३२ साल की उम्र तक वह अविवाहित रहे फिर स्वर्ग चले गए।

आज उन के धरती से चले जाने के २००० साल बाद भी लोग उनके बारे में झूठी कहानियाँ गढ रहें है। और इस बात का प्रचार कर रहे है की उन की एक गुप्त पत्नी थी जिसका नाम ST. Mary Magdalene था। और उन का एक गुप्त पुत्र भी था जिसका नाम ST. Michael था।

इस विषय पर Dan Brown ने The Da Vinci Code नाम की पुस्तक लिखी है और इस विषय पर फिल्म भी बन चुकी है।

कॅथोलिक चर्च ने लोगों से इस फिल्म को ना देखने का आग्रह किया था। मगर जिस काम से लोगों को रोका जाए उसे लोग और अधिक करते है।

इसी तरह हज़रत ईसा (अ.स.) के दुश्मनों ने उनकी शिक्षा को भी बदलने की भरपूर कोशिश की। बाईबल हज़रत ईसा (अ.स.) के धरती से चले जाने के लगभग १०० वर्ष बाद पुस्तक के रुप में लिखा गया। पुस्तक के रुप में बाईबल को लिखते समय इस में ऐसी बातें भी शामिल की गई जिस का एक धार्मिक आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता है।

उदाहरण के तौर पर बाईबल में लिखा है, हज़रत लूत (अ.स.) Sodom शहर के लिए पैग़म्बर थे। वहाँ की अधिकतर जनता Homosexual थी। इसलिए ईश्वर ने दो फरिश्तों को भेजा जिन्होंने हज़रत लूत (अ.स.) और उनके परिवार को बचा लिया (सिवाय उनके पत्नी के)। और सारे शहर को जलती गंधक की वर्षा कर के मार डाला।

इस घटना के बाद हज़रत लूत (अ.स.) और उनकी दो लड़कियाँ जंगल में रहने लगी। उन की दो लड़कियों को जब इस बात का अनुमान हुआ के उन से विवाह करने के लिए अब कोई पुरुष नहीं बचा है तो उन्होंने अपने बाप हज़रत लूत (अ.स.) को ही खूब शराब पिलाई और उन के साथ रात गुजारी। इस तरह दोनों गर्भवती हो गई।

(बाईबल Genesis Chp. 19, Verses-30)

यह जो बाईबल में लिखा है क्या यह संभव है? नहीं!

क्योंकि फरिश्तोंने केवल एक शहर को खत्म किया था। सारे संसार को नहीं। इसलिए दूसरे शहरों में पुरुष थे जिन से हज़रत लूत (अ.स.) की लड़कियों का विवाह हो सकता था। और हर धर्म में शराब पीना हराम था। इसलिए कोई पैग़म्बर शराब पीकर ऐसा मदहोश नहीं हो सकता कि उसे पता ही ना चले की वह किससे संभोग कर रहा है।

● इसी तरह बाईबल में लिखा है की हज़रत दाऊद (अ.स.) को उन के एक सैनिक की पत्नी बहुत पसंद आ गई तो उन्होंने उस सैनिक को युद्ध पर भेज दिया और उस की पत्नी से संभोग किया। (समोएल २-११, नूर सरमदी Page - 191)

हज़रत दाऊद (अ.स.) (David) एक महान पैग़म्बर गुजरे है। वह एक दिन खाना खाते और एक दिन उपवास (रोजा) रखते। ईश्वर ने जबूर ग्रंथ उनपर अवतरित किया था। उनकी आवाज इतनी अच्छी थी कि जब वह जबूर पढ़ते तो पहाड़ (पर्बत) भी उनके साथ जबूर पढ़ते थे। वह फिलिस्तीन के राजा भी थे। उनका बेटा हज़रत सुलैमान (अ.स.) भी पैग़म्बर और फलस्तिन शहर के राजा हुऐ, और हज़रत सुलैमान (अ.स.) की ९९ पत्नीयां थी। हज़रत दाऊद (अ.स.) चाहते तो २०० पत्नियाँ रख सकते थे। यह कैसे हो सकता है कि एक पैग़म्बर जो राजा भी है और तपस्वी भी है वह अपने एक सैनिक से धोखा करे। यह असंभव है मगर बाईबल में लिखा हुआ है।

इस का क्या कारण है?

इसका कारण समाज के सलमान रश्दी जैसे लोग है। सलमान रश्दी में क्या खास बात है?

उसकी सोच में सेक्स और धर्म से नफरत भरा पड़ा है। इस लिए जो सेक्स से प्यार और धर्म से नफरत करते है वह उन का हीरो है। उसे ब्रिटिश सरकार ने (Sir) की पदवी दी है। आज वही अगर हज़रत मुहम्मद (स.) कि तारीफ में कुछ कहे या लिखने लगे तो वही लोग उसे आतंकवादी घोषित कर देंगे।

तो सलमान रश्दी जैसे लोगों ने बहुत कुछ गलत लिखा। और सत्ताधारी समाज ने उसे स्वीकार किया और जानबूझ कर पवित्र ग्रंथों मे उसे शामिल करवा दिया।

हज़रत ईसा (अ.स.) को बदनाम करके लोगों को क्या मिलेगा?

अगर हज़रत ईसा (अ.स.) के चाल चलन पर लोगों को शक हुआ तो उन की ईसाई धर्म से भी आस्था उठ जाएगी।

जब आदमी ईश्वर पर विश्वास करता है तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है और वह अन्याय के विरुद्ध लड़ने से भी नहीं ड़रता। जब आदमी को मरने के बाद ईश्वर के सामने अपने कर्मों का हिसाब किताब देने का यकीन होता है तो वह पाप नहीं करता है और जीवन में एश व आराम कम करता है।

नास्तिक डरपोक होता है। वह मरने से बहुत ड़रता है। और जब मरने के बाद स्वर्ग की कल्पना नहीं रहती है तो लोग इसी जीवन में हर प्रकार का ऐश करना चाहता है। चाहे इसके लिए उन्हें गलत काम ही क्यों ना करना पड़े। और एक तरह से वह जानवरों की तरह जीते है।

यहूदी सारे संसार पर राज करना चाहते है। अपने चाह को वास्तविकता में बदलने के लिए उन की एक गुप्तलिखित योजना है जिसे Protocol कहा जाता है।

इस प्रोटोकॉल में लिखा है की अगर तुम संसार पर राज करना चाहते हो तो लोगों का धर्म से विश्वास उठा दो। और ऐसी ही योजना कई कट्टर धार्मिक संस्थाओं और प्रगतिशील देशों की भी है।

अधर्मी जानवरों की तरह और डरपोक होता है। सिर्फ नास्तिक पर ही राज करना संभव है। क्योंकि ईश्वर को मानने वाला कितना भी गरीब हो मगर अन्याय के सामने वह दीवार बन कर खड़ा रहता है।

तो पैग़म्बरो को बदनाम करना उन लोगों की साजिश है जो संसार पर राज करना चाहते है। या अन्य धर्म वालों को बर्बाद करना चाहते हैं।

और इसी साजिश का शिकार हज़रत मुहम्मद (स.) और मुसलमान भी है। क्योंकि ईसाई लोगों की संख्या के बाद सबसे बड़ी संख्या विश्व में मुसलमानों की है।

● यह पुस्तक हज़रत मुहम्मद (स.) का परिचय देने के हेतु लिखी गई है। मगर उनका परिचय देने के साथ हम उन गलतफहमियों को भी दूर करने का प्रयास करेंगे जो दुश्मनों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में फैला रखा है।

मुख्य रुप से दुश्मनों ने दो विषयों पर हज़रत मुहम्मद (स.) को बदनाम किया है। एक तो उनकी वैवाहिक जीवन और दूसरी उन की दुश्मनों से युद्ध की शिक्षा।

अगले अध्याय में हम इन्हीं दोनों विषयों पर चर्चा करेंगे।

****

● Protocol यह पुस्तक आप निम्नलिखित प्रकाशन से प्राप्त कर सकते है।

अर-रहमान प्रिंटर व पब्लिशियर, १८, ज़करिया स्ट्रिट कोलकत्ता-७०००७३

क्या हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे?

• लोगों का यह आरोप है की हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे। आईए हम देखते है की हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे या खुद हिंसा बर्दाश्त करके अहिंसा की शिक्षा देते थे।

• हज़रत मुहम्मद (स.) को ईश्वर ने ४० वर्ष की आयु में अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने का आदेश दिया था। वह ६३ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। मगर ५५ वर्ष की आयु तक अर्थात पैग़म्बर बनने के शुरु के १५ वर्ष उनको और अन्य मुसलमानों को हथियार से किसी से बदला लेने की ईश्वर की आज्ञा नहीं थी। हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके अनुयायी या तो हिंसा सहन करते, या मक्का शहर छोड़ कर किसी अन्य देश या शहर चले जाते।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने जो हिंसा और अन्याय बर्दाश्त किया है उसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित है।

• हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बर नियुक्त करने के बाद तीन वर्ष तक ईश्वर ने उन्हें केवल व्यक्तिगत स्तर पर लोगों में धर्म का प्रचार करने का आदेश दिया था। और चौथे वर्ष से उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर भाषणों के माध्यम से प्रचार करने का आदेश दिया।

चौथे वर्ष जैसे ही हज़रत मुहम्मद (स.) ने काबा शरीफ के पास धार्मिक भाषण दिया, लोगों ने उन्हें घेर लिया। हज़रत मुहम्मद (स.) को बचाने के प्रयास में हजरत खदीजा (रजि.) के बड़े बेटे हज़रत हारिस बिन अबी हाले (रजि.) शहीद हो गए।

• अबु लहब और उक्बा बिन अबी मुईत यह दोनों हज़रत मुहम्मद (स.) के पड़ोसी थे। यह दोनों हमेशा हज़रत मुहम्मद (स.) के घर में गंदगी फेंकते रहते। हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत सबेरे ही नमाज़ पढ़ने काबा शरीफ जाते। जिस रास्ते से हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ जाते अबु लहब की पत्नी उस रास्ते में कांटे बिछा देती ताकि हज़रत मुहम्मद (स.) को तकलीफ पहुँचे।

• अबु लहब हज़रत मुहम्मद (स.) का सगा चाचा था। और हज़रत मुहम्मद (स.) की दो बेटियों का रिश्ता अबु लहब के दो बेटों से हुआ था। (बिदाई नहीं हुई थी) अबु लहब के दबाव में आकर दोनों बेटों ने हज़रत मुहम्मद (स.) की दोनों बेटियों को तलाक दे दिया। अरब देश में इसे बहुत बुरा और अपमान समझा जाता था।

• पैग़म्बरी के पांचवे साल एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ में नमाज पढ़ रहे थे। जब आप सज़दे में गये तो उक्बा बिन अबी मुईत ने हज़रत मुहम्मद (स.) की गर्दन पर ऊँट की ओझडी (आंत) लाकर रख दिया। जो इतनी वज़न थी की आप (स.) सज़दे से सर ना उठा सके। जब आप (स.) के घर वालों को मालूम हुआ तो हज़रत फातिमा (रजि.) दौडते आईं और आप (स.) की गर्दन से ओझडी उतारी।

• एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ में नमाज़ पढ़ रहे थे की उक्बा बिन अबी मुईत आया और हज़रत मुहम्मद (स.) की गर्दन में चादर का फंदा ड़ाल कर पेंच देने लगा। गला घुटने से आप (स.) की आँखे निकल पड़ी।

जब हजरत अबु बकर (रजि.) ने बीच में पड़कर आप (स.) को फंदे से आज़ाद किया तो उन्होंने हज़रत अबु बकर (रजि.) को भी बहुत मारा।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के एक साथी सहाबी कहते है। मुसलमान होने से पहले मैंने मक्का में देखा कि एक खुबसूरत नौजवान है और वह लोगों को इस्लाम की बात समझा रहा है। 'मैंने पूछा यह कौन है?' किसी ने कहा यह कुरेश कबीले का एक नौजवान मुहम्मद (स.) है जो बेदीन (अधर्म) हो गया है। सुबह से वह नौजवान लोगों को धर्म की बात समझाता रहा यहाँ तक कि सूरज सिर पर आ गया। इतने में एक आदमी ने आकर उसके मुंह पर थूक दिया। दूसरे ने गिरहबान फाड़ दिया, तीसरे ने सिर पर मिट्टी डाल दी और चौथे ने चेहरे पर थप्पड मारा। लेकिन नौजवान की जबान से बददुआ (श्राप) का एक शब्द न निकला।

इतने में एक लड़की फूटफूट कर रोती हुई पानी का प्याला लेकर आयी। लड़की को रोता हुआ देखकर हज़रत मुहम्मद (स.) की आंखे भर आई और कहा "बेटी अपने बाप का गम न कर। तेरे बाप की अल्लाह रक्षा करता है। और इस्लाम धर्म हर कच्चे पक्के मकान में पहुँचेगा।" उन सहाबी ने किसी से पूछा यह लडकी कौन है? किसी ने जवाब दिया की इसकी बेटी जैनब (रजि.) है।

(बसीरत अफरोज़ वाक्यात, सफा नं २२)

● हज़रत मुहम्मद (स.) की यही बड़ी बेटी कुछ वर्ष बाद मक्का से मदीना जा रही थी। रास्ते में अकरमा बिन अबु जहल और उस के साथियों ने रास्ता रोक लिया और आप (रजि.) के ऊँट को जख्मी कर दिया। जिस से आप उंट की पीठ से जमीन पर आ गिरी। आप गर्भवती थी। आप जख्मी हो गई, हमल गिर गया और इन्ही जख्म के कारण कुछ वर्षों बाद आपका देहांत हो गया।

● पैग़म्बरी के सांतवे साल जब मक्का के सरदारों को लगा की इस्लाम तो फैलता ही जा रहा है और इसे रोकना असंभव हो गया है तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) के सारे कबीले का सामाजिक बहिष्कार कर दिया और आप के सारे कबीले को शहर से बाहर दो पहाड़ी के बीच रहने पर मज़बूर कर दिया।

इस सामाजिक बहिष्कार के कारण कबीले का सारा अनाज़ खत्म हो गया। छोटे छोटे बच्चे जब भुख से रोते तो उन की आवाज़ घाटी के बाहर तक सुनाई देती। कुछ नौजवान तो पुराने चमड़े भी भूख मारने के लिए उबाल कर खा जाते। हज़रत मुहम्मद (स.) और सारा कबीला तीन साल तक ऐसी तकलीफ उठाता रहा। आप (स.) की पत्नि हज़रत खतिजा (रजि.) जो लगभग ६५ साल की थी और आप (स.) के चाचा अबु तालिब जो लगभग ८० साल के थे, इस सामाजिक बहिष्कार से इतने कमजोर और बीमार हो गए थे की बहिष्कार समाप्त होने के एक वर्ष के अंदर ही दोनों का देहांत हो गया।

● पैग़म्बरी मिलने के दसवें साल हज़रत मुहम्मद (स.) ने तायफ़ का सफर किया ताकि वहां भी इस्लाम की रोशनी फैलायें। वहां के तीनों सरदार, अब्दिया लैल, मसऊद और हबीब का जवाब बहुत अपमानित करनेवाला था। न वह ख़ुद सुनना चाहते थे और न यह चाहते थे, कि हज़रत मुहम्मद (स.) इनकी क़ौम में इस्लाम का प्रचार करें। इसलिए शहर के बदमाश और गुंडों को हज़रत मुहम्मद (स.) के पीछे लगा दिया कि आप (स.) जहां जायें आप (स.) की हंसी उड़ायें और आप (स.) जिधर से भी गुज़रे आप पर पत्थर फेंकें। हज़रत मुहम्मद (स.) दस या बीस दिन तक ये मुसीबतें

झेलते रहे और सब्र करते रहे। आख़िरी दिन उन्होंने ज़ुल्म की हद कर दी। वह अपने हाथों में पत्थर ले कर लाईन से खड़े हो गये। हज़रत मुहम्मद (स.) कदम उठाते और ज़मीन पर रखते तो वह बद-बख़्त आप (स.) के टख़्नों (Ankle) पर पत्थर मारते। चूंकि उनका कत्ल का इरादा न था सिर्फ यातना देना था। इसलिए तीन मील तक वह आप (स.) का इसी तरह पीछा करते रहे और पत्थर बरसाते रहे। भागते-भागते जब आप (स.) थक कर और ज़ख्मों से चूर होकर बैठ जाते तो फिर वह गुंडे आप (स.) का बाजू पकड़कर खड़ा कर देते, गालियां देते, तालियां बजाते, आवाज़ कसते और चलने पर मजबूर करते और फिर पत्थर की बारिश करते। पत्थरों से इतनी चोंटें आयीं कि हज़रत मुहम्मद (स.) के जूते ख़ून से भर गए। जिस्म ज़ख्मों से चूर हो गया और फिर आप (स.) बेहोश होकर गिर पड़े। हज़रत ज़ैद (रजि.) ने आप (स.) को अपनी पीठ पर उठा कर आबादी से बाहर लाये।

(सि-सबे अहमद मुजतबा)

● मक्का में तकरीबन तेरह साल तक हज़रत मुहम्मद (स.) तकलीफ़ उठाते रहे। लोग ज़लील हरकतें करते, गुन्डों के झुण्ड हज़रत मुहम्मद (स.) के पीछे आवाज़ें कसते। रास्ते में गंदगी ऊपर डाली जातीं, रातों में चलने वाले रास्ते में कांटे बिछाये जाते। गालियां दी जाती, सर पर मिट्टी फेंकी जाती। अबू जहल ने खुद एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) को पत्थर से मार ड़ालने की कोशिश कर डाली। इस तरह ऐसी हज़ारों तकलीफ़ें आप (स.) बर्दाश्त करते रहे। पैग़म्बरी के तेरहवे वर्ष कुरैश के चालीस दरिन्दों ने हज़रत मुहम्मद (स.) को शहीद करने के इरादे से रात भर आप (स.) के घर को घेरे रखा। मगर आप (स.) सुरक्षित मक्का से मदीना हिजरत (Migration) कर गये।

● ग़ज़्वे-ए-अहद के दिन अब्दुल्लाह इब्न कुमैय्या ने इस ज़ोर का हमला किया कि हज़रत मुहम्मद (स.) का गाल ज़ख़्मी हो गया। खुद (Helmet) के दो हल्के (Ring) गाल में धंस गये और होंठ कट गया। उत्बा अबी वकास ने पत्थर फेंक कर मारा जिससे नीचे के दात टूट गये और होंठ कट गया। अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ौहरी ने पत्थर मारकर पेशानी लहूलुहानकर दिया। हज़रत अबु उबैद इब्न जर्राह ने ख़ुद के एक रिंग को दांतों से पकड़कर इतनी ज़ोर का खींचा कि जब वह गाल से निकला तो हज़रत अबु उबैद इब्न जर्राह का दांत भी टूट गया और हज़रत अबु उबैद (रजि.) पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़े। इसी तरह जब दूसरा रिंग दांत से पकड़कर खींचा तो इतना ज़ोर लगाना पड़ा कि रिंग निकालते वक़्त दूसरा दांत भी टूट गया। हज़रत मुहम्मद (स.) के ज़ख्मों से ख़ून किसी तरह बंद न होता था। ज़ख़्मी हालत में कुछ दूर चले ताकि सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाए। कि अबु आमिर फ़ासिक़ के खोदे हुए गड्ढे में गिर गए। जिसे उसने पत्तों से ढांक रखा था। हज़रत अली (रजि.) और हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह (रजि.) की मदद से बड़ी मुश्किल से गड़ढे से निकल कर ऊंचाई पर तशरीफ ले गये।

(सि-सबे अहमद मुजतबा)

● इतनी हिंसा बर्दाश्त करने के बाद भी कभी आप (स.) ने अपने दुश्मनों को श्राप नहीं दिया। मक्का से मदीना जाने के आठ साल बाद जब आप (स.) अपने दस हजार साथियों के साथ मक्का पहुँचे, तो मक्का के जिन लोगों ने पिछले २१ साल तक आप (स.) और आपके साथियों को हर प्रकार कि यातनाए दी, कई बार मदीना पर हमला किया, और जान से मार डालना चाहा, मगर उन पर पूरी तरह विजय पाने के बाद भी आप (स.) ने किसी एक भी आदमी से बदला नहीं लिया, और सब

को माफ कर दिया। क्या इन्सानी इतिहास में और किस व्यक्ति का ऐसी दयालुता का उदाहरण मिलता है?

कोई नहीं!

● अथर्ववेद ने हज़रत मुहम्मद (स.) के इस दयालुता की तारीफ की है, और आप (स.) के दस हजार सैनिकों को जिन्होंने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। उन्हें गाय कहा है वह श्लोक इस तरह है।

एश इसाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रज:।
त्रीणी शतान्यर्वता सहस्रादश गोनाम्।।
(अथर्ववेद २०, १२७:३)

अहिंसा की इस्लामिक शिक्षाः -

● यह तो वह उदाहरण थे जिस में हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिंसा को बर्दाश्त किया। अब हम इस्लामी शिक्षा का अध्ययन करते हैं।

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, जिसने किसी इन्सान को कत्ल के बदले या धरती पर बिगाड़ फैलाने के दंड के सिवा किसी और कारण से कत्ल कर ड़ाला, तो (यह इतना बड़ा पाप है जैसे) उसने मानो सारे ही इन्सानों को कत्ल कर दिया। और जिसने किसी बेगुनाह की जान बचाई उस ने मानो सारे इन्सानों को जीवनदान दिया। (पवित्र कुरआन ५:३२)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है देश में दंगे होने की चाह ना करो। क्योंकि ईश्वर दंगे करने वालो को पसंद नही करता।
(पवित्र कुरआन २८:७७ का सारांश)

हज़रत मुहम्मद (स.) का आदेशः -

● हज़रत अबु हुरैरा (रजि.) कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, दुश्मन से युद्ध की इच्छा ना करो। और जब युद्ध शुरु हो जाए तो सब्र करो। (बुखारी किताबुल जिहाद ५३)

● हज़रत अब्दुल्ला बिन अफी (रजि.) कहते है कि एक बार युद्ध के मोर्चे पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने शाम तक दुश्मनों के हमले का इंतेजार किया, लेकिन दुश्मन ने हमला नहीं किया। (और हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी पहले हमला नहीं किया।) सूरज डूबने के बाद हजरत मुहम्मद (स.) ने अपने फौजीयों को संबोधित किया और कहा युद्ध की इच्छा मत करो और शांति और समृद्धि की प्रार्थना करो। लेकिन जब तुमपर हमला हो तो सब्र से इंतेजार करो और बहादुरी से लड़ो। (बुखारी १५६-५६)

● हज़रत अबु सईद (रजि.) फरमाते है की हज़रत मुहम्मद से किसी ने पूछा के 'कौनसा बंदा (व्यक्ति) सर्वश्रेष्ठ और कयामत (प्रलय) के दिन अल्लाह के नज़दीक बुलंद दर्जे (High Status) वाला होगा?' हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया 'अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरतें!' हज़रत मुहम्मद से फिर पूछा गया कि 'या रसूल अल्लाह! क्या यह अल्लाह के रास्ते में शहीद होने से भी और बुलंद दर्जा (High Status) दिलाने वाला है?' हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा, 'अगर कोई व्यक्ति अल्लाह के दुश्मनों पर तलवार चलाए यहाँ तक कि (अनथक तलवार चलाते रहने के कारण) वह तलवार टूट जाए और वह खुद भी खून में रंगीन हो जाए (शहीद हो जाए) फिर भी अल्लाह तआला की याद करने वाले का (प्रार्थना करने वाले का) दर्जा (Status) उस व्यक्ति (शहीद) से बड़ा होगा।'
(अहमद तिर्मिजी Vol-१, मुन्तखब अबवाब, हादीस ४२९)

● हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रजि.) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया कि, "सबसे ज़्यादा बईज्जत

(सम्मानित) व्यक्ति कौन है?'' (इसका मतलब यह है कि कौनसा व्यक्ति कयामत के दिन सफल और सम्मानित होगा?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फरमाया, ''जिस बंदे ने लंबी आयु पायी और नेक (पुण्य के) कर्म किए।'' फिर उस व्यक्ति ने सवाल किया, ''सबसे ज्यादा बुरा आदमी कौन है?'' (इसका मतलब यह है कि कौनसा व्यक्ति नर्क में रहेगा और कयामत के दिन सज़ा पाऐगा?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फरमाया, ''जिस बंदे ने लंबी आयु पायी और बुरे कर्म करता रहा।'' (मसनद अहमद, मारुफूल अहादीस-८२)

● हज़रत उबेद बिन खालिद (रजि.) कहते हैं कि दो व्यक्ति मदीना आकर मुसलमान हो गए। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन दोनों का एक अन्सारी सहाबी (स्थानीय मुसलमान साथी) के साथ रहने का इंतेजाम कर दिया। फिर यह हुआ की उनमें से एक साहब (कुछ ही दिनों में युद्ध में शहीद हो गए) फिर एक ही हफ्ते बाद दूसरे साहब का भी देहांत हो गया। (यानि उनकी मृत्यु किसी बीमारी से घर ही पर हुई), तो हज़रत मुहम्मद के साथियों ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफना दिया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले उन साथियों से पूछा कि आप लोगों ने (नमाजे जनाज़ा) में क्या कहा (यानी मरनेवाले भाई के हक में तुमने अल्लाह से क्या दुआ की?) उन्होंने कहा कि हमने उसके लिए यह दुआ की कि अल्लाह तआला उन को मुक्ति दे और उन पर कृपा करें और अपने उस भाई और साथी के साथ कर दे जो पहले शहीद हो गए थे। यह जवाब सुनकर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, फिर उसकी (बाद में मरने वाले की) वह नमाज़े कहाँ गयी जो उस शहीद होने वाले भाई की नमाजों के बाद उन्होंने पढ़ीं। और दूसरे वह नेक कर्म कहाँ गए जो उस शहीद के आमाल के बाद उन्होंने किए, उसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''उन दोनों के मुकामात (Status) में उससे भी ज्यादा अंतर है जितना कि ज़मीन और आसमान के दरम्यान अंतर है।''

व्याख्या: हज़रत मुहम्मद (स.) के इरशाद (कहने) का मतलब यह था कि तुमने बाद में साधारण मौत मरने वाले उस भाई का दर्जा पहले शहीद होने वाले उस भाई से छोटा (कम) समझा, इसीलिये तुमने अल्लाह से दुआ की कि अल्लाह तआला अपने फज़्ल और करम से बाद में साधारण मौत मरने वाले को भी शहीद भाई के साथ कर दे। जबकि बाद में मरने वाले भाई ने शहीद होनेवाले भाई की शहादत के बाद भी जो नमाज़ें पढ़ीं, और जो रोज़े रखे और जो दूसरे नेक काम किए, उस से उस का दर्जा पहले शहीद होने वाले भाई से ज़्यादा बुलंद (ऊँचा) हो चुका है। यहाँ तक कि दोनों के मकामात (Status) और दर्जात में ज़मीन और आसमान से ज़्यादा अंतर है।
(अबू दाऊद, निसाई, मआरिफुल हदीस जिल्द २, हदीस ८३)

इन हदीसों पर विचार कीजिये। इस्लाम की शिक्षा यह नहीं है की धर्म के लिए जान देना और जान लेना बहुत पुण्य का काम है। बल्कि इस्लाम की शिक्षा है कि लंबी आयु तक जीवित रहो और ईश्वर की प्रार्थना करते रहो तो सब से श्रेष्ठ हो जाओगे।

● हज़रत इब्ने मसऊद (रजि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''सारी मखलूक (प्राणी) अल्लाह का परिवार है और अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा वह पसंद है जो उसकी मखलूक से नेक व्यवहार (सुलूक) करता है।''
(मिश्कात, तर्जुमानुल हदीस, जिल्द २, हदीस २३९)

● हज़रत अबू हूरैरा (रजि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''अल्लाह तआला कयामत के दिन एक व्यक्ति से पूछेगा, ''ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार था भूखा और प्यासा था, मगर तूने मेरी देखभाल नहीं की और मुझे ना खाना खिलाया ना पानी पिलाया।''

वह व्यक्ति कहेगा, ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपकी देखभाल करता। आप तो सारे ब्रम्हांड के मालिक हो। अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या तू नहीं जानता मेरा फलाँ बंदा बीमार और भूखा प्यासा था। अगर तू उसकी देखभाल करता और खाना खिलाता, पानी पिलाता तो मुझे उसके पास पाता।

(तरजुमाने हदीस, Vol-2 हदीस 245)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, कि एक आदमी को रास्ता चलते हुए बहुत प्यास लगी। वह एक कुंए के करीब पहुँचा। कुंए के अंदर उतरकर अपनी प्यास बुझायी और बाहर आया। बाहर आकर उसने देखा की एक प्यासा कुत्ता गीली मिट्टी चाट रहा था। उसने अपने दिल में कहा कि कुत्ता अपनी प्यास की अधिकता से तड़प रहा है। जैसा में तड़प रहा था। इसलिए वह दुबारा कुऐं में उतरा। अपने जूते में पानी भरा। अपने दाँतों से उस जूते को पकड़कर कुंए से बाहर आया और कुत्ते की प्यास बुझायी। अल्लाह तआला को यह अदा (काम) पसंद आयी और उस बंदे को माफ कर दिया।

यह सुनकर लोगों ने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! क्या हमें जानवरों की सेवा करने पर भी पुण्य मिलेगा?'' हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''हर जानदार (प्राणी) की सेवा करने पर पुण्य मिलेगा।'' (यानि हर जानदार की सेवा करने पर सवाब (पुण्य) मिलेगा।) (बुखारी जिल्द ३, किताब ६४६ नं. /४३)

● हजरत अनस (रजि.) कहते है की, हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझ से कहा, 'ए मेरे प्यारे बेटे। अगर तुम्हारे लिए संभव हो कि ऐसा जीवन गुज़ारो जिस में किसी के लिए तुम्हारे ह्रदय में कोई गलत भावना ना हो तो जरुर ऐसा जीवन गुजारो। और यह मेरे जीने का तरीका है। जो मेरे जैसा जीएगा तो इस मैं कोई संदेह नही कि वह मुझ से प्रेम करता है। और जो मुझ से प्रेम करेगा वह मेरे साथ स्वर्ग में रहेगा।' (हदीस मुस्लिम)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि, 'मुसलमानों के शासन में मुसलमान शासकों का यह कर्तव्य है की वह गैर-मुस्लिम जनता के जान, माल और सम्मान की रक्षा करें। अगर कोई मुसलमान एक गैर-मुसलमान की जायदाद जबरदस्ती ले लेता है। या उनका शोषण करता है। या उनको कोई तकलीफ देता है तो कयामत के दिन जब ईश्वर के सामने सब को अपने कर्मों का हिसाब किताब देना होगा, उस दिन मैं (हज़रत मुहम्मद) उस गैर-मुस्लिम की तरफ से ईश्वर के न्यायालय में उस मुसलमान के विरुद्ध मुकदमा लडूँगा।'

(अबु दाऊद, सफिना निजात १५१)

पवित्र कुरआन में युद्ध की शिक्षा क्यों?

● आप ने देखा की इस्लाम में कही हिंसा की शिक्षा नहीं है।

तो फिर कुरआन में वह आयतें क्यों है जिस में काफिरों से युद्ध करने के लिए कहा गया है? इस के कारण निम्नलिखित है।

● हजरत मुहम्मद (स.) ने जब ईश्वर का पैगाम लोगों तक पहुँचाना शुरु किया तो हजरत सुमाईया (रजि.) ने इसे स्वीकार किया और वह

मुसलमान हो गई।

मक्का के लोग और खास करके धनवान और सरदार यह नहीं चाहते थे कि कोई भी इस्लाम धर्म स्वीकार करे। और जो मुसलमान होता उसे भयानक यातनाएँ देते।

उन लोगों ने हजरत सोमाईया (रजि.) के दोनों टांगे दो ऊँट को बांध दिए और दोनो ऊँट की ताकत से उन को बीच से चीर देना चाहा। जब ऊँटों की शक्ति चीरने के लिए कम पड़ी तो अबुजहल ने हजरत सोमाईया (रजि.) के पेशाब की जगह पर ऐसा तलवार मारा और हजरत सोमाईया (रजि.) दो टुकडों में फट गई।

● इन्हीं लोगों ने एक सहाबीया को एक ऊँट की चमड़ी में बंद करके सिल दिया और धूप में फेक दिया और वह उस में तीन दिन तक तड़पती रही और अंत में मर गई।

● इन्ही लोगों ने हजरत बिलाल (रजि.) को तपती धूप मे आग के अंगारो पर लिटा कर सीने पर पत्थर रख दिया। वह आग उनके पिघलती चर्बी से बुझ गयी। हजरत बिलाल (रजि.) की जान तो बच गई मगर बाकी उमर तक पीठ पर केवल चमड़ी और हड्डी थी मांस तो जल चुका था।

● ऐसे हजारों लोग थे जिन्हें लोग बहुत यातनाऐं देते और अत्याचार करते, ऐसे लोगों के लिए ईश्वर ने पवित्र कुरआन में निम्नलिखित आदेश दिए।

● और जो लोग ज़ुल्म होने के बाद बदला ले तो उनकी निन्दा नहीं की जा सकती, निन्दनीय तो वे हैं जो दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। अलबत्ता जो व्यक्ति सब्र से काम ले और माफ़ करे, तो यह बड़े साहसपूर्ण कामों में से है।

(पवित्र कुरआन ४२: ४१-४३)

● पवित्र कुरआन के इन आयतों को फिर से पढ़कर विचार करो। इन आयतों में ऐसा नहीं कहा गया है कि तुम जरुर बदला लो। बल्कि ऐसा कहा गया है की अगर कोई बदला ले ले तो कोई बात नहीं वरना व्यक्तिगत स्तर पर मुसलमानों को यातनाएँ देने वालों को क्षमा करने की शिक्षा यह कह कर दी गई है की क्षमा करना यह बहुत साहस का काम है।

● जब हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का से मदीना चले गए तब भी मक्का वालों ने दो बार मदीना पर हमला किया, और तीसरी बार सारे अरब देश से १०,००० सैनिक जमा करके मदीना पर धावा बोल दिया। मुसलमान केवल ३००० थे। वह इतनी बड़ी सेना का सामना नहीं कर सकते थें, इसलिए उन्होंने शहर की सीमा पर गहरी खाई (Trench) खोद कर मदीना शहर का बचाव किया। मगर इन सब कबीलों को जो एक साथ जुट कर मदीना पर हमला कर दिया था, अगर उन्हें बाद में एक-एक करके पराजित ना किया जाता तो यह उससे भी बडी सेना लेकर फिर हमला कर देते। इसलिए ईश्वर ने मुसलमानों को उन से लड़ने का आदेश इस प्रकार दिया।

● 'ऐ इमान लाने वालो (एक ईश्वर को मानने वालो)! उन काफिरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं, और चाहिए कि वे तुममें सख़्ती पायें, और जान रखों कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो अ़ल्लाह से ड़र रखने वाले हैं।'

(पवित्र कुरआन ९-१२३)

● इस आयत में काफिरों (इन्कार करने वालों) से ईश्वर युद्ध करने इसलिए कह रहा है की वह मुसलमानों को शक्तिशाली समझें और हमला करने या उन्हें सताने और यातनाएँ देने की

हिम्मत ना करें। यह आत्मरक्षा (Self Defense) का एक तरीका है।

मगर यह हर गैर मुस्लिम पर आम हमला करने का आदेश नहीं था उस के साथ निम्नलिखित आदेश भी थे।

● (ईश्वर पवित्र में कहता है की तुम युद्ध करो मगर) 'सिवाय उन गैर-मुस्लिमों के जिनसे तुमने सन्धि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की सहायता की। तो उनके समझौते को उनके नियमित समय तक पूरा करो। नि:संदेह अल्लाह डर रखने वालों से प्रेम रखता है।' (अर्थात जिन्होंने अपने शांति संन्धि को ना तोड़ा उन से मत लड़ो।) (पवित्र कुरआन ९-४)

● (ईश्वर पवित्र में यह भी कहा कि) 'और यदि गैर-मुस्लिमों में से कोई व्यक्ति तुमसे शरण का इच्छुक हो, तो उसे शरण दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का क़लाम (पवित्र कुरआन) सुन ले, फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह इसलिए कि ये ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।' (इन्हें ज्ञान नहीं है।) (पवित्र कुरआन ९-६)

● (ईश्वर पवित्र में यह भी कहा कि) लड़ो अल्लाह की राह में उन से जो तुम से लड़ते है। और ज़्यादती (अत्याचार) ना करो। अल्लाह तआला ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता। (पवित्र कुरआन, २:१९०)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने साथियों को सख्ती से हुक्म दिया था कि जो हथियार न उठाऐ और जो बूढ़ा है उससे न मारें। ना औरतों और बच्चों को मारें और ना फल देने वाले पेड़ को काटें। और ना किसी को जला दें। (इब्ने कसीर)

● कुछ अरब के वैहशी कबीले ऐसे थे, जो किसी धर्म का पालन ना करते और ना किसी संधी (Peace agreement) का पालन करते। यह हर तरह से मुसलमानों को मार ड़ालने के फिक्र में रहते। एक बार कबीला अज़ल वकारा मदीना आकर हज़रत मुहम्मद (स.) से कहा के हम मुसलमान हो गए है। हमारी शिक्षा के लिए बहुत सारे मुसलमान हमारे कबीले में भेज दो। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन की बातों को सच माना और अपने १० साथी उनके साथ भेज दिए। उन लोगों ने रास्ते में राज़ीया के पास आठ को मार ड़ाला। और दो को मक्का वालों के हाथ बेच दिया।

इसी तरह अबु बरा आमीर ने नज़द के इलाके में इस्लाम की शिक्षा के लिए ७० मुसलमानों को मांग कर ले गया और बिर माउना के मुकाम पर कबीला रिगल और कबीला ज़ाकुवान के साथ मिल कर ६९ को धोके से शहीद कर दिया। सिर्फ एक सहाबी किसी तरह बच आए।

तो जिन का ना कोई धर्म था ना कर्म। जो बिल्कुल जानवर थे उन के लिए ईश्वरने निम्नलिखित आदेश दिया,

● 'क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जो अपनी प्रतिज्ञा भंग करते रहे हैं और जिन्होंने रसूल को देश से निकाल देने का निश्चय किया था और ज़्यादती का आरंभ करनेवाले वही थे? क्या तुम उनसे डरते हो? अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरो।' (पवित्र कुरआन ९:१३)

● फिर जब हराम (पवित्र) महीने (ऐसे महीने जिन में युद्ध नहीं किया जाता है।) बीत जायें, तो मुशरिकों को जहाँ-कहीं पाओ कत्ल करों, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे

तौबा (पाप न करने की प्रतिज्ञा) कर लें और नमाज क़ायम करें और ज़कात दें, तो उनका मार्ग छोड़ दो। नि:संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

(पवित्र कुरआन ९:५)

● ईश्वर ने इन आयतों में भी गैर मुस्लिम को हमेशा मारते रहने का आदेश नही दिया। बल्कि उसी समय तक जब तक वह वहशी (हिंसक/आक्रमक) है। सुधर जाने के बाद उनका पीछा छोड़ देने के लिए कहा है।

तो ऐसी जो भी आयते पवित्र कुरआन में हैं उन के कुछ कारण है उन का कुछ सकारात्मक उद्देश है। वरना इस्लाम ने किसी निर्दोष की हत्या करने की शिक्षा कभी नहीं दी है।

● पहले विश्वयुद्ध में २ करोड़ लोग मारे गए। दूसरे विश्वयुद्ध में ६ करोड़ लोग मारे गए। सन २००० में अमेरिका के इराक पर किए हमले में २० लाख लोग मारे गए।

हर वर्ष महाराष्ट में १५०० किसान आत्महत्या करते है। हर महीने में मुंबई में ४५० लोग ट्रेन से कट कर मरते है।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने जीवन काल में जितने युद्ध किए उस में केवल १०१८ लोग मारे गए। इस से अधिक तो हर वर्ष महाराष्ट के किसान आत्महत्या करते है। तो आप हजरत मुहम्मद (स.) ने जो लड़ाई लड़ी उसे युद्ध कहेंगे?

● हज़रत मुहम्मद (स.) को ईश्वर ने ४० वर्ष की आयु में पैग़म्बरी का काम सौपा। वह ६३ वर्ष की आयु तक जीवित रहें। मगर ५५ वर्ष की आयु तक (अर्थात पैगंबरी के पहले १५ वर्ष) हज़रत मुहम्मद (स.) और अन्य मुसलमानों को हथियार उठाने की अनुमति नहीं थी।

अगर ईश्वर उन्हें और आठ साल हथियार उठाने की अनुमती ना देता तो इस धरती पर केवल एक ईश्वर की प्रार्थना करने वाला एक भी व्यक्ति जीवित ना होता। और वह धर्म जिस की शिक्षा आदम (अ.स.), नूह (मनु) (अ.स.), इब्राहीम (अ.स.), मूसा (अ.स.) और अन्य पैग़म्बरों ने मानवजाति को दी थी कब का खत्म हो गया होता।

काफिर कौन?

काफिर यानि ना मानने वाला। जो भी ईश्वर के आदेश को गलत कहेगा वह काफिर कहलाएगा। काफिर मुसलमान भी हो सकते है। उदाहरण के तौर पर ईश्वर ने कहा हज़रत मुहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर नहीं आऐगा। उसके बाद अगर मुसलमानों का कोई समुदाय यह कहे कि अब भी पैग़म्बर आ सकते है। तो वह लोग भी काफिर (ना मानने वाले) कहलाऐंगे। पाकिस्तान के कुछ लोग कादयानी को पैग़म्बर मानते है। वह लोग खुद को मुसलमान कहते है मगर विश्व के सारे मुसलमान उन्हें काफिर समझते है।

मुशरिक कौन?

मुशरिक यानि ईश्वर के साथ किसी और को भी पुजनिय और शक्तिशाली मानने वाला। यह केवल गैर-मुस्लिम ही नहीं बल्कि मुसलमान भी हो सकते है।

जो भी यह कहे की ईश्वर तो दुआ सुनता है और हमारी मुराद (इच्छा) पूरी करता है मगर यह पैग़म्बर या बाबा भी हमारी दुआ सुनता है और हमारी मुराद (इच्छा) पूरी करता है तो वह मुसलमान भी मुशरिक है।

तो कुरआन में जिसे काफिर और मुशरिक कहा गया है वह इसाई या यहूदी या हिन्दू नहीं बल्कि हर वह व्यक्ति है जो ईश्वर को ना माने या उस के साथ किसी को मिला दे। हिन्दुस्तान में ऐसे लाखों मुसलमान है जो वास्तव में काफिर या मुशरिक है।

हज़रत अबु बकर (रजि.) और हजरत उमर ने हज़रत मुहम्मद (स.) के निधन के बाद ऐसे हजारों मुसलमानों से भी युद्ध किया जो काफिर थे (वह काफिर जकात ना देने या झूठे पैग़म्बर को मानने से हो गए थे)। तो काफिर और मुशरिक इन शब्दों को कोई खास समुदाय अपने लिए गाली ना समझे।

श्री कृष्ण जी का आदेश :-

● कर्ण एक सज्जन पुरुष थे। वह अर्जुन के सबसे बड़े भाई थे। वह पापी न थे, और श्री कृष्ण जी का बहुत अधिक आदर करते थे। मगर महाभारत के युद्ध में वह दुर्योधन के पक्ष से लड़े जो कि गलत रास्ता था।

● महाभारत के युद्ध में एक बार कर्ण के रथ का पहिया मिट्टी में धस गया। कर्ण शस्त्र रख कर रथ का पहिया मिट्टी से निकालने लगे। उसी समय श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को कर्ण की हत्या करने का आदेश दिया। कर्ण ने अपने भाई अर्जुन से कहा, ''नियम से युद्ध करों'' (निहत्थे पर हमला करना नियम के खिलाफ था) अर्जुन को लगा के शायद श्री कृष्ण जी ने उसे युद्ध के नियम के खिलाफ निहत्थे कर्ण की हत्या करने का आदेश दिया है। जब अर्जुन कुछ देर रुक कर सोचने लगे तो श्री कृष्ण जी ने कहा की,

''क्या धर्म है और क्या अधर्म है इस का फैसला कौन करेगा? यह वह नहीं करेगें जो खुद गलत है और गलत मार्ग पर चलते हैं। यह वह करेगे जो खुद सत्य के मार्ग पर चलते है जो सत्य धर्म की स्थापना के लिए जीते है। तुम्हारा अपने शत्रु का युद्ध में हत्या करना उचित है, और तुम ऐसा ही करो।''

''एक क्षत्रीय की जो जिम्मेदारी होती है, उस को याद रखते हुए तुम को समझना चाहिए की तुम्हारे लिए जो सब से अच्छा काम है वह है सत्य धर्म की स्थापना के लिए युद्ध करना। इसलिए ऐ अर्जुन इस काम के करने से पीछे मत हटो।'' (Geeta chapter 2- Verse 31)

और अर्जुन ने अपने निहत्थे और बड़े भाई कर्ण की हत्या कर दी।

''सत्य धर्म की स्थापना के लिए युद्ध करो'' यह उपदेश या यह शिक्षा बहुत सारे धर्म में रही है, और यह आतंकवाद नहीं हैं। आतंकवाद यह अन्याय के कारण पैदा होता है और बढ़ता है। विश्व में सब से पहले आतंकवाद की शुरुआत स्कॉटलैंड से हुई। क्योंकी स्कॉटलैंड के रहवासियों को लगा के इंग्लैंड उन के साथ न्याय नहीं कर रहा है। फिर फिलिस्तीन के लोगों ने आतंकवाद को अपनाया। उन्हें लगा की अमरिका, इंग्लैंड और इस्त्राईल उन से न्याय नहीं कर रहा हैं। फिर आतंकवाद को श्रीलंका के तमिल लोगों ने अपनाया क्योंकि उन को भी सिंहाली सरकार से यही शिकायत थी।

● (Terrorism) आतंकवाद को खत्म करने का एक ही उपाय है वह है समाज में सब के साथ न्याय। ना स्कॉटलैंड वे ईसाई को, ना श्रीलंका के हिंदू को, और ना फिलिस्तीन के मुसलमानों को, उन के धर्म ने आंतकवाद की शिक्षा दी थी। धर्म आतंकवाद नहीं सिखाता। यह तो सत्ता के लालची राजनेताओं के दुष्कर्म है जिन के कारण आतंकवादी पैदा होता है।

****

हज़रत मुहम्मद (स.) की १२ पत्नियाँ क्यों थीं?

● अब हम हज़रत मुहम्मद (स.) पर लगे दूसरे आरोप के बारे में जानने की कोशिश करेंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) पर दूसरा आरोप उनके विवाह से संबधित है।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने १२ विवाह क्यों किए?

● एक से अधिक पत्नी रखने की सभी धर्मों में अनुमति है। इस युग में जो केवल एक पत्नी रखने का कानून है वह हिंदू या ईसाई या यहूदी धर्म का नही है बल्कि यह नेताओं के बनाए हुए नियम है।

● श्री कृष्ण जी की १६,००० से अधिक पत्नियाँ थीं।

हज़रत सुलैमान (अ.स.) की ९९ पत्नियाँ थीं।
(इब्ने माज़ा Vol-2 Page-22)

राजा दशरथ जी कि चार पत्नियाँ थीं।

ऐसे अनगिनत पैग़म्बर या राजा महाराजे हुए हैं जिन की एक से अधिक पत्नियाँ थीं।

● हज़रत मुहम्मद (स.) की बारह पत्नियाँ होगी यह हज़रत मुहम्मद (स.) का भाग्य था। और यह भविष्यवाणी ईश्वर ने ४००० वर्ष पूर्व अथर्ववेद में कह दिया था। वह श्लोक इस प्रकार है;

उष्टा यस्य प्रवाहिणो वधुमन्तों द्विर्दश।

वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।
(अथर्ववेद, कुन्ताप सूक्त: २०-२)

अर्थात जिस की सवारी में दो सुंदर ऊँटनियाँ है। या जो अपनी १२ पत्नियों के साथ ऊँट पर सवारी करता है। उसकी इज्जत-व-एहतराम (आदर और महानता) की बुलंदी अपनी तेज़ गति से आकाश को छू कर नीचे उतरती है।
(भाषांतर डा. एम. ए. श्रीवास्तव 'हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ' पेज नं. १५)

● जब कोई व्यक्ति बहुत सेक्सी होता है तो बचपन से उस के व्यवहार में उस सेक्सीपन के लक्षण होते है। या उस के कर्मों में अश्लीलता होती है।

आज मुसलमानों से अधिक गैर मुस्लिम हज़रत मुहम्मद (स.) के चरित्र को जानते है। क्योंकि मुसलमान वही पुस्तक पढ़ते है जो मुसलमान लेखक लिखता है। और मुसलमान लेखक अपने पैग़म्बर की बुराई क्यो लिखेगा। जब के इसाई और यहूदी लेखक अगर वह सज्जन है तो सच लिखेगा। और संप्रदायिक है तो ज़हर उगलेगा और हज़रत मुहम्मद (स.) को बदनाम करने की हर कोशिश करेगा।

मगर आज तक का यह इतिहास है कि चाहे कोई लेखक मुसलमान हो या ईसाई या यहूदी या किसी धर्म का हो और कितना ही संप्रदायिक हो और मुसलमानों के लिए उस के दिमाग में कितना ही ज़हर भरा हो। तब भी वह सब मिलकर हज़रत मुहम्मद (स.) के पैग़म्बर होने से पहले के खराब चरित्र या आचरण का एक भी उदाहरण नहीं दे सकते।

अगर हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण सही

नही थे तो उन के अश्लील आचरण का एक भी उदाहरण इतिहास में क्यों नहीं है? क्या इतिहासकारों से भुल चूक हो गई है या ऐसे उदाहरण है ही नहीं?

● हज़रत मुहम्मद (स.) पैग़म्बर तो इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले भी थे। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) इन्सान के रुप में जब पैदा हुए तो 'आप पैग़म्बर है' ऐसा ईश्वर ने आप को ४० वर्ष की आयु में बताया था। ४० वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) लोगों के बीच एक साधारण व्यक्ति की तरह रहे।

मगर इस साधारण जीवन में भी हज़रत मुहम्मद (स.) को लोग मुहम्मद नहीं पुकारते थे, बल्कि आदर से सादिक (सच्चा) और अमीन (जो कभी धोखा नहीं देता) पुकारते थे।

ऐसे युवक पर जिस पर बहुत सेक्सी होने का आरोप है उसे लोग सादिक और आमीन क्यों पुकारते थे?

● हज़रत मुहम्मद (स.) का विवाह हज़रत खदीजा (रजि.) से २५ वर्ष की आयु में हुआ। ५० वर्ष की आयु तक (अर्थात २५ वर्ष तक) आप ने हज़रत खदीजा (रजि.) के साथ एक खुशहाल जीवन बिताया। आप दोनों को ईश्वर ने दो बेटे और चार बेटियाँ दी थी।

● जब हज़रत मुहम्मद (स.) ५० वर्ष के थे तब हज़रत खदीजा (रजि.) का देहांत हो गया। उनके देहांत के बहुत समय बाद तक हज़रत मुहम्मद (स.) ने विवाह नहीं किया। हज़रत मुहम्मद (स.) की बड़ी बेटी (हज़रत जैनब (रजि.)) का विवाह हो गया था और वह अपने ससुराल में थी। हज़रत मुहम्मद (स.) के मुँह बोले बेटे हज़रत जैद (रजि.) का भी विवाह हो गया था और वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहते थे। इस तरह हज़रत खदीजा (रजि.) के देहांत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) के घर में केवल तीन कम उमर बेटियाँ थी। सारा मक्का शहर हज़रत मुहम्मद (स.) का दुश्मन था। इसलिए आप (स.) के साथियों ने आप (स.) से दूसरे विवाह के लिए आग्रह किया। आप (स.) ने उनकी बात मान ली और एक विधवा जिस की आयु ६५ वर्ष से अधिक और जो बहुत मोटी और उचे कद की थी उन से विवाह कर लिया। उन का नाम हज़रत सौदा (रजि.) था। और उन के साथ बगैर किसी दूसरी पत्नी के चार साल तक रहे। (अर्थात हज़रत सौदा (रजि.) अकेले ही आप के साथ रहती और कोई दूसरी पत्नी उन के साथ न थी।)

मेरा हज़रत मुहम्मद (स.) पर आरोप लगाने वालों से प्रश्न है की अगर हज़रत मुहम्मद (स.) का आचरण सही नहीं था, तो आप (स.) की पहली पत्नि के देहांत के बाद आप (स.) ने तुरंत दूसरा विवाह क्यों नहीं किया? और जब आप (स.) ने विवाह भी किया तो एक बूढ़ी विधवा से क्यों किया? और चार वर्ष अकेले उनके साथ क्यों रहें?

● पैग़म्बर के सपने ईश्वर के आदेश होते है। जैसे हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने सपना देखा और अपने बेटे की कुर्बानी देने का प्रयास किया। इस घटना का वर्णन अथर्ववेद में 'पुरुषमेधा' के नाम से किया है। (अथर्ववेद १०-२-२६) (आप इसे मेरी पुस्तक 'पवित्र वेद और इस्लाम धर्म' में भी पढ़ सकते हैं।)

● इसी तरह ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (स.) को हज़रत आएशा (रजि.) को रेशम के कपड़े पहने हुए उनकी पत्नि (दुल्हन) के रुप में दिखाया था। यह ईश्वर का आदेश था। (ऐसा आदेश क्यो दिया था इसके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे।) तो जब लोगों ने हज़रत मुहम्मद को हज़रत आएशा (रजि.) का रिश्ता पेश

किया तो आप (स.) ने इन्कार नहीं किया। (आप ने खुद रिश्ता नहीं मांगा था।)

● हज़रत मुहम्मद (स.) का निकाह हज़रत आएशा (रजि.) से हो गया। उस समय हज़रत आएशा (रजि.) की आयु १६ वर्ष की थी। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत आएशा (रजि.) को बिदा कर के अपने घर नहीं लाए। हज़रत आएशा (रजि.) विवाह के बाद भी तीन वर्ष तक अपने माता-पिता के घर पर ही थी।

● हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत आएशा (रजि.) के पिता हज़रत अबु बकर (रजि.) के गहरे मित्र थे। और अक्सर उनके घर आया जाया करते थे।

मेरा प्रश्न है की अगर हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत सेक्सी थे तो उन्होंने एक जवान पत्नि को उस के माता पिता के घर तीन वर्ष क्यों छोड़े रखा। होना तो यह चाहिए था की विवाह के तुरंत बाद उन्हें विदा कर घर ले आते। क्योंकि घर में जो पत्नी थी वह एक बूढी, मोटी और ऊँचे कद की महिला थी। मगर ऐसा ना हुआ।

आखिर क्यों?

● हज़रत आएशा (रजि.) से विवाह के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने और ९ विवाह उचित कारणों की बुनियाद पर किये। अगर आप का आरोप है कि वह सब सेक्स कि बुनियाद पर थे तो फिर बताईए के उन पत्नियों से ढ़ेर सारी संताने क्यों नहीं हुई? हज़रत खदीजा (रजि.) से हज़रत मुहम्मद (स.) को छह संताने थी। अर्थात आप (स.) में कोई बीमारी ना थी। (हज़रत मुहम्मद (स.) Infertile न थे) इसी तरह आप (स.) की पत्नियों में एक को छोड़कर कोई भी कुवांरी ना थी और कुछ के पहले पति से संताने भी थीं। अर्थात वह भी बांझ नहीं थीं। मगर केवल हज़रत मारीया (रजि.) को एक पुत्र हुआ और किसी पत्नी को कोई संतान न हुई। हज़रत मुहम्मद (स.) के पुत्र जीवित ना रहते थे। मगर बेटीयाँ तो जीवित थी। फिर सब को ढेर सारी संताने क्यों नहीं हुई?

● आप मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते हो। हज़रत मुहम्मद (स.) पर लगने वाले सारे आरोप बेबुनियाद और गलत है। यह 'सलमान रश्दी' जैसे लोगों ने लगाए है जिन का खुद का कोई चरित्र नहीं है और जिन के सर पर सेक्स का भूत सवार रहता है और दिमाग में धर्म और ईश्वर के विरुद्ध ज़हर भरा हुआ है।

● हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह भी आरोप है कि, जब आप (स.) ने हज़रत आएशा (रजि.) से विवाह किया तो उनकी आयु केवल ६ वर्ष थी।

यह आरोप भी गलत है। इस आरोप का कारण यह है की यह बात हदीस की एक पुस्तक में लिखी हुई है। पैग़म्बर कोई गुनाह और गलत काम नहीं कर सकता है। क्योंकि ईश्वर उसका कदम-कदम पर मार्गदर्शन करता है। जैसे बाईबल में पैग़म्बर के खिलाफ अगर कुछ लिखा है तो वह सच नहीं हो सकता। इसी तरह अगर हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में हदीस में भी कुछ गलत लिखा है तो वह सही नहीं हो सकता।

● इस्लाम धर्म में केवल एक ही पुस्तक है जिसे हम १००% परिपूर्ण, उचित और विश्वसनीय कह सकते है और वह है पवित्र कुरआन। क्योंकि पवित्र कुरआन को खुद ईश्वर ने अवतरित की है। और इस में बदलाव ना हो इस की जिम्मेदारी भी ईश्वर ने ली है।

● हदीस शरीफ ९९.९९% सही हो सकती है। १००% इसलिए नहीं की यह एक इन्सान ने लिखा है। इन्सान कितना भी विद्वान क्यों ना हो

वह ईश्वर की तरह परिपूर्ण नहीं हो सकता।

हदीस की पुस्तकें हज़रत मुहम्मद (स.) के निधन के १०० वर्ष बाद लिखी गई है। हज़रत बुखारी (रह.) और अन्य विद्वानों ने कुल ३ लाख हदीसे जमा की। उन में से तकरीबन ७५०० हदीसों को उचित पाया और बाकी को रद्द (Reject) कर दिया। यानी उन्होंने २.५% हदीसों को चुना और ९७.५% हदीसों को अस्वीकार किया। हज़रत बुखारी (रह.) बड़े विद्वान थे। आप (रह.) ने जो चुना वह ९९.९९% उचित था। ०.१% की जो हदीस है यह वही हदीस है जो एक महान पैग़म्बर को अपमानित करती हैं। ६ वर्ष वाली हदीस उसी में से एक है।

● जो लोग कहते है की जो बुखारी में लिखा है वही सच है तो उन से मेरा प्रश्न है की हज़रत आएशा (रजि.) 'इलमे-निसाब' की माहिर (Expert) थी। 'इलमे-निसाब' इतिहास जैसा ही एक विषय (Subject) है। मगर इस में व्यक्ति को हजारो लोगों के वंश और उन के पूर्वजों का पूरा ज्ञान होता है। उन्हें हजारों लोगों के नाम उनके पूर्वजों के साथ याद होते हैं। आज हम हज़रत मुहम्मद (स.) से हज़रत आदम (अ.स.) तक उनके वंश के सभी लोगों का नाम जानते है, वह इसी 'इलमे-निसाब' के कारण जानते है।

हज़रत आएशा (रजि.) साहित्य में भी माहिर थी। आप को बहुत से शेर (Poem) याद थे।

● ६ साल की आयु में बच्चा स्कूल में पहली कक्षा में होता है और उसे ठीक से १०० तक गिनती गिनने भी नहीं आती है। तो ६ वर्ष की आयु में हज़रत आएशा (रजि.) 'इलमे-निसाब' और साहित्य की विद्वान कैसे हो गई?

क्या विवाह के बाद उन को कोई टयुशन पढ़ाता था? क्योंकि 'इलमे-निसाब' यह हज़रत मुहम्मद (स.) ने किसी को नहीं पढ़ाया। तो उन को यह ज्ञान कहाँ से मिला।

विवाह के समय वह १६ वर्ष और बिदाई के समय १९ वर्ष की थी। उनके पिता हज़रत अबु बकर (रजि.) इस ज्ञान में माहिर (Expert) थे और उन्होंने ही इसे अपनी बेटी को सिखाया था।

● हज़रत आसमा (रजि.) यह हज़रत आएशा (रजि.) की बड़ी बहन हैं और उन से १० वर्ष बड़ी थीं। हज़रत आसमा का निधन १०० वर्ष की आयु में हुआ उस समय इस्लामी वर्ष ७३ हिजरी था। इसलिए जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने ७३ वर्ष पहले मक्का से मदीना हिजरत किया उस समय हजरत आसमा (रजि.) की आयु २७ वर्ष थी। हज़रत आएशा (रजि.) हज़रत आसमा (रजि.) से १० वर्ष छोटी थी, इसलिए उस समय आप की आयु १७ वर्ष हुई।

● हज़रत सलमान नदवी ने अपनी पुस्तक (सिरते आएशा-पेज नं १५३) में लिखा है की हज़रत आएशा (रजि.) का निधन इस्लामी वर्ष ६७ हिजरी में हुआ। और आप ४० वर्ष तक विधवा थी। इन अंको से भी हमे पता चलता है की विधवा होते समय आप की आयु २७ वर्ष थी इसलिए विवाह के समय आप की आयु १६ वर्ष थी।

● अगर हम हजरत आएशा (रजि.) का विवाह के समय आयु १६ वर्ष मान भी ले तो तब भी यह बहुत कम है। हज़रत मुहम्मद (स.) जो उस समय ५० वर्ष के थे तो उन्होंने एक १६ वर्ष की कन्या से विवाह क्यों किया?

● पहली बात तो यह है की यह हज़रत मुहम्मद (स.) ने खुद रिश्ता नहीं मांगा था। लोगों ने Propose किया था। दूसरी बात यह है

की सपने में आप ने जो देखा वह एक तरह का हजरत आएशा (रजि.) के साथ विवाह करने का ईश्वर का आदेश था। जो आप टाल न सके।

● ईश्वर ने एक १६ वर्ष की कन्या का ५० वर्ष के पैग़म्बर के साथ विवाह करने का आदेश क्यों दिया था?

● बच्चा ३ वर्ष की आयु में Jr. KG.

५ वर्ष की आयु में 1 Std.

१५ वर्ष की आयु में 10 Std

१७ वर्ष की आयु में XII Std.

२१ वर्ष की आयु में Graduate.

२४ वर्ष की आयु में Post Graduate

२७ वर्ष की आयु में Ph.D पास कर सकता है।

Ph.D करने के बाद वह जीवन भर किसी भी विद्यालय में कुशल तरीके से छात्रों को शिक्षा दे सकता है।

● जो बाते १५ से २७ वर्ष की आयु में सीखी जाती है, वह ४० वर्ष बाद ६७ वर्ष की आयु में भी अच्छी तरह याद रहती है और किसी को सिखाई जा सकती है। क्योंकि कम आयु में मस्तिष्क में याद रखने की क्षमता अधिक होती है।

अगर कोई ४५ वर्ष की आयु में कोई बात याद करने का प्रयास करे तो ना तो वह अच्छी तरह याद होगा और ना ४० वर्ष बाद अर्थात ८५ वर्ष की आयु में वह किसी को उस की शिक्षा दे सकता है।

● इसी कारण ईश्वर ने एक १६ साल की छात्रा (हज़रत आएशा (रजि.)) का दाखला विश्वविद्यालय (हज़रत मुहम्मद (स.)) के पास कर दिया।

हज़रत आएशा (रजि.) ने १६ वर्ष की आयु से २७ वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (स.) को अच्छी तरह पढ़ा। और फिर हज़रत मुहम्मद (स.) के निधन के बाद भी ४० वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) की एक एक बात लोगों को बताती रही। इस तरह निधन के बाद भी हज़रत मुहम्मद (स.) के दिन रात का जीवन अगले ४० वर्ष तक लोगों के सामने जीवित था।

● जो कुछ इस्लाम धर्म के हदीस की किताबों में लिखा है। उस का ३० प्रतिशत शिक्षा विद्वानों को हज़रत आएशा (रजि.) से मिली है।

इसी कारण ईश्वर ने हज़रत आएशा (रजि.) का कम आयु में हज़रत मुहम्मद (स.) से विवाह करा दिया।

● मौलाना मोहम्मद फारुख खान ने अपनी पुस्तक (हज़रत आएशा की शादी और असल उमर) में इस बात का पक्का सबूत दिया है की हज़रत आएशा (रजि.) की आयु विवाह के समय १६ वर्ष की थी।

(Firdaus Publication. 1781, Hauz Suiwalan, New Delhi-110002)

● हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह भी आरोप है की उन्होंने अचानक अपने मुँह बोले बेटे हज़रत जैद (रजि.) की पत्नी हज़रत जैनब (रजि.) को देखा। जो उनको बहुत अच्छी लगी। इसलिए जैद (रजि.) ने अपनी पत्नि को तलाक दे दिया और हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे विवाह कर लिया।

● यह आरोप भी गलत है। इस के कारण निम्नलिखित है।

● हज़रत जैनब (रजि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के फुफ्फी की लड़की थी। जब हज़रत मुहम्मद (स.) २० वर्ष के थे तो वह पैदा हुई थी।

● हज़रत जैनब (रजि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने ही खेलीकूदी और जवान हुई।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के एक गुलाम थे जिनका नाम हज़रत जैद (रजि.) था। यह बचपन से ही आपके पास थे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनको आज़ाद कर के अपना बेटा बनाया था। जब दोनों जवान हुए तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने खुद दोनों का विवाह कर दिया। अगर हज़रत जैनब (रजि.) हज़रत मुहम्मद (स.) को बहुत पसंद होती तो वह खुद अपना विवाह करते ना के हज़रत जैद (रजि.) का।)

● हज़रत जैनब (रजि.) सब से सम्मानित और हज़रत मुहम्मद (स.) के वंश से थीं और गुलामों को सब से नीच जाति समझा जाता था। इसलिए हज़रत जैनब (रजि.) और हज़रत जैद (रजि.) के बीच हमेशा तनाव रहता था। और आखिरकार हज़रत जैद (रजि.) ने हज़रत जैनब (रजि.) को तलाक दे दिया।

● अरब देश में एक परंपरा रही कि वह मुंह बोले बेटे को भी अपने सगे बेटे जैसा समझते थे। बेटे के पिता के स्थान पर अपना नाम लगाते और उस को भी सगे बेटे जैसा विरासत में हिस्सा देते।

● ईश्वर को यह सब रिवाज नापसंद है। इन्सान अपनी मर्जी से ना अपने सगे बेटा-बेटी को अपनी जायदाद से बेदखल कर सकता है और ना किसी गैर को बेटा-बेटी बना कर अपनी विरासत में हिस्सा दे सकता है।

● शादी ब्याह के लिए जो रिश्ते जाएज़ है वह भी मुंह बोला बेटा-बेटी बनाने से नाज़ाएज नहीं हो जाएंगे।

● मुंह बोले रिश्तों का कोई महत्व नहीं है। समाज के मन में इस बात को मज़बूती से बैठाने के लिए ईश्वर ने हज़रत जैनब (रजि.) और हज़रत मुहम्मद (स.) का विवाह करा दिया। वरना बेटे की पत्नी (अर्थात अपनी बहू) से पिता विवाह नहीं कर सकता है।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के बारह विवाह में से यही एक विवाह है जो धरती पर नहीं हुआ बल्कि स्वर्ग में हुआ। जैसे हज़रत आदम (अ.स.) और हज़रत हव्वा (अ.स.) का निकाह खुद ईश्वर ने किया था उसी तरह हज़रत मुहम्मद (स.) और हज़रत जैनब (रजि.) का निकाह भी खुद ईश्वर ने किया था। इस विवाह का वर्णन कुरआन में इस प्रकार है।

ऐ नबी, याद करों वह अवसर जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिसपर अल्लाह ने और तुमने उपकार किया था कि अपनी पत्नि को न छोड़ और अल्लाह से डर।'' उस समय तुम अपने दिल में यह बात छिपाए हुए थे जिसे अल्लाह खोलना चाहता था। तुम लोगों से ड़र रहे थे * हाँलाकि अल्लाह इसका ज्यादा हक रखता है कि तुम उससे ड़रों। फिर जब जैद ने उसे तलाक दे दिया तो हमने उस का तुमसे विवाह कर दिया ताकि ईमानवालों पर अपने मुँहबोले बेटो की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे। (पवित्र कुरआन, ३३:३७)

(* जब आप को पता चला की तलाक के बाद अल्लाह तआला हज़रत जैनब से आप का विवाह करने का इरादा रखते है तो आप ड़र गए की लोग क्या कहेंगे और यह बड़ी बदनामी वाली बात होगी। आप चाहते थे की तलाक ना हो और अल्लाह चाहता था की यह प्रथा आप के जरिए टूटे। और वही हुआ जो अल्लाह चाहता था।**)**

● हज़रत जैनब (रजि.) को उनके घर में जो

अचानक देखने की बात है तो यह भी बात गलत है। उसके कारण निम्नलिखित है।

● ईश्वर ने पवित्र कुरआन में आदेश दिया है कि किसी के घर में बगैर सलाम किए और बगैर अनुमति लिए मत दाखिल हो।

(पवित्र कुरआन २४: २६-२७)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि, अपनी माँ के कमरे में जाना हो तब भी बाहर से इज़ाज़त लो उसके बाद ही अंदर दाखिल हो।

(इमाम मलिक, मुन्तखब अबवाब Vol-Hadis-No.754)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा जब किसी के घर जाना तो बिल्कुल दरवाजे के सामने मत खड़े होकर सलाम करो या इजाज़त मांगो बल्कि दरवाजे से हटकर खड़े हो ताकि अगर कोई महिला बगैर पर्दे के भी द्वार खोले तो आप उसे ना देख सको।

(अबु दाऊद, मुन्तखब अबवाब Vol 1-Hadis-No.753)

● ईश्वर ने पवित्र कुरआन में कहा है की ईश्वर को यह बात सख्त नापसंद है की कोई दूसरों को तो उपदेश दे और खुद उस पर अमल ना करें। (पवित्र कुरआन ६१:३) तो जो हज़रत मुहम्मद (स.) दूसरों को उपदेश देते थे, वह पहले खुद अमल करते थे।

● तो किसी महिला को उस के घर में हज़रत मुहम्मद (स.) का अचानक देखने का सवाल ही पैदा नहीं होता। और हज़रत जैनब (रजि.) को हज़रत मुहम्मद (स.) उनकी पैदाइश से देख रहे थे। तो अचानक पसंद करने का प्रश्न कहा होता है। और हज़रत मुहम्मद (स.) ने ही उनका पहला विवाह हज़रत जैद (रजि.) से कराया था। अगर आप चाहते तो पहले ही उन से विवाह कर लेते।

● तो हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह आरोप भी दुश्मनों ने लगाया हुआ है। जो आप (स.) को बदनाम करना चाहते है।

आप (स.) के कुछ विवाह के कारण

● हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) और उनके पति मक्का में यातनाएं सहते सहते तंग आगए थे। इसलिए मदीना स्थानांतरण करना चाहा और मदीना जाने के लिए अपने घर से निकल गए। रास्ते में हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) के कबीले ने रोक लिया और उनके पति से कहा कि अगर आप जाना चाहते हो तो जाओ मगर हमारे कबीले की लड़की को मदीना नहीं ले जा सकते हो। उन लोगों ने हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) और उनके दूध पीते बच्चे को रोक लिया। और उनके पति रोते हुए मदीना चले गए।

● जब उनके पति के कबीले वालों को इस घटना का समाचार मिला तो वह बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने कहा की अगर लड़की तुम्हारी है तो उस के गोद में जो बच्चा है उस पर पिता का ज्यादा हक है इस लिए वह हमारे कबीले में रहेगा। और वह बच्चा छीन कर ले गए।

● हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) ने जब पति और बच्चा दोनों खो दिया तो हर दिन जिस स्थान पर वह पति से अलग हुई थी उसी जगह पर आकर सुबह से शाम तक रोती रहती। ऐसा एक वर्ष तक हुआ। आखिर कार किसी को दया आ गई और उन्होंने उम्मे सलमा (रजि.) को बच्चा लौटा दिया और मदीना जाने की अनुमति दे दी।

● हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) ने अकेले ४०० Km का सफर पैदल तय किया और मदीना पहुँची और अपने पति के साथ रहने लगी। मगर आप ने मदीना में अभी एक वर्ष भी ना बिताया था कि आप विधवा हो गई। दुश्मनों ने मदीना वालों को घेर रखा था। लोग सामान

बेचने दूसरे शहर में नहीं जा पा रहे थे। इसलिए लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। ऐसे समय एक विधवा और उस के बच्चे को कोई कितने दिन सहारा देता।

● अगर बगैर विवाह किए हज़रत मुहम्मद (स.) उन्हें सहारा देते तो एक और आरोप आप (स.) पर लगता। हज़रत उम्मे सलमा (रजि.) को एक सन्माननीय जीवन का अवसर देने के लिए आप (स.) ने उन से विवाह कर लिया।

● उम्मे हबीबा यह अबु सुफयान की बेटी थी। अबु सुफयान यह मक्का के बड़े सरदार थे और राजा जैसे थे। आप मुसलमानों के कट्टर दुश्मन थे। मक्का वालों के मुसलमानों से जितने युद्ध हुए उन सबके अबुसुफियान ही सेनापति थे। जब आप की बेटी मुसलमान हुई तो उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। लाचार होकर वह अपने पति उबेदुल्ला इब्ने जाहश के साथ हबशा (Euthopia) जो के सऊदी अरब से समुद्र पार अफ्रीका में है वहाँ चली गई। अभी कुछ दिन गुजरे थे की आप के पती का देहांत हो गया। मक्का की राज कुमारी अफ्रीका में बेसहारा और लाचार हो गई। मक्का लौटो तो बाप जान का दुश्मन। अफ्रीका में ना कोई जान पहचान ना कोई रोज़ी रोटी का सहारा। आगे शेर पीछे खाई वाली हालत थी आप की। ऐसे में हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप को सहारा दिया। और आप से विवाह कर लिया।

● इस तरह आप (स.) ने जितने विवाह किए उन का कुछ ना कुछ उद्देश्य था। कुछ महत्वपूर्ण कारण थे जो हो सकता है हम समझ पाएँ और हो सकता है वह हमारी समझ से बाहर हो। क्योंकि हम २१ वी शताब्दी में रहते है और यह ७ वी शताब्दी की बात है। उस समय के सामाजिक स्थिति, रीतिरिवाज, लोगों की मज़बूरियां, सामाजिक सुरक्षिता, इत्यादि का इस समय हम पूरी तरह अनुमान नहीं लगा सकते है।

केवल एक बात याद रखिए की एक व्यक्ति पाप करते हुए पैग़म्बर नहीं रह सकता। वह पापी होगा या पैग़म्बर। दोनों एक साथ कभी नहीं। हज़रत मुहम्मद (स.) एक सच्चे पैग़म्बर थे और आप (स.) ने कभी कोई गलत काम नहीं किया।

● जयपुर के राजा मान सिंग ने बारह विवाह किये थे। और उन सब को एक साथ रखना उन के लिए राज्य चलाने से अधिक कठिन था। मगर राज्य में एकता और सुरक्षितता के लिए उन्हें छोटे-छोटे सरदारों से दोस्ती जरुरी थी। इसलिए सब की बेटियों से विवाह किया और राज्य में शांति बनाने में सफल रहें।

● उन के राज में शांति तो हो गई मगर घर में शांति बनाए रखना उन के लिए बहुत कठिन था। इसलिए जब भी कोई रानी एक शब्द भी मुंह से निकालती एक मुन्शी उसे लिखता रहता। और अगर उस रानी ने कोई गलत बात कह दी तो दंड के तौर पर उसे कुछ अनाज़ चक्की चला कर पीसने पड़ते। घर में अगर दो रानियां लड़ पड़ी तो उन के कबीले भी लड़ पड़ते।

● इसलिए ना केवल मान सिंग के लिए बल्कि हर व्यक्ति के लिए दो पत्नियों के बीच शांति बनाये रखना और न्याय करना बहुत मुश्किल है। और इस में आनंद से अधिक परेशानी है।

इसलिए जो पैग़म्बर भी ऐसा करता है किसी खास उद्देश्य से ही करता है।

जयपुर में आमेर किले (Amer Fort) में आज भी बारह रानियों के महल मौजूद है। आप जब भी जयपुर जाएँ इस ऐतिहासीक शहर के किलों को जरुर देखे।

****

हजरत मुहम्मद (स.) का आखरी पैगाम मानवजाति के नाम

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने आखरी हज के अवसर पर जो उपदेश लोगों को दिया था उसके मुख्य अंश इस प्रकार है।

● ईश्वर एक है। और उस के अलावा कोई पूजने के लायक नहीं। उस का कोई साथी नहीं। ईश्वर ने अपना वचन पूरा किया। केवल उस ने ही सभी अधार्मिक शक्तियों को पराजित किया। (और इस्लाम धर्म को फैला दिया।)

● लोगों! ईश्वर ने तुम सब को एक स्त्री और एक पुरुष से जन्म दिया। और तुम्हें अलग-अलग समुदाय और कबीलों में बाँट दिया, ताकि तुम पहचाने जाओ। तुम में सब से अधिक आदरणीय वह है जो सब से अधिक ईश्वर से ड़रने वाला हों। ना कोई अरब गैर अरब से महान है। ना कोई गैर अरब किसी अरबी व्यक्ति से महान है। ना कोई गोरा व्यक्ति किसी काले से महान है ना कोई काला व्यक्ति किसी गोरे से महान है। (अर्थात जात-पात का कोई भेदभाव नहीं) महानता केवल ईश्वर से ड़रने और आचरण की पवित्रता पर निर्भर हैं।

● लोगों! आज का (हज का) दिन, यह (हज का) महीना और यह मक्का शहर जिस तरह आदरणीय है उसी तरह तुम लोग की जान, माल और (इज्ज़त) सम्मान एक दूसरे के लिए आदरणीय है। (अर्थात कोई एक दूसरे के जान माल और सम्मान को नुकसान ना पहुँचाए)

● लोगों! मेरे बाद गुमराह ना हो जाना। ना एक दूसरे से युद्ध करना। सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। अपने दासों (गुलामों) की चिंता करना। उन को वही खिलाव जो तुम खाते हो। उन को वही पहनाओं जो तुम पहनते हो।

● मुसलमान होने के पहले की सारी दुश्मनी को मैं खत्म करता हूँ। मेरे कबीले ने जो एक हत्या का बदला लेना बाकी है उस को मैं क्षमा करता हूँ।

● मुसलमान होने के पहले जो ब्याज़ (Interest on Money) का लेना देना था वह मैं माफ करता हूँ। मेरे चाचा हज़रत अब्बास ने जो कर्ज दिया है, उसका सारा सूद (ब्याज़) में माफ करता हूँ (अब ना कोई ब्याज ले ना दे।)

● लोगों! अल्लाह ने हर हकदार का हक तय कर दिया है। अब कोई किसी वारिस के लिए वसीयत ना करें।

(अर्थात जायदाद में परिवार के किसी सदस्य को कितना हिस्सा मिलेगा यह ईश्वर ने पवित्र कुरआन में अवतरित कर दिया है। अब अपनी मर्जी से कोई मरते समय किसी का हिस्सा कम या अधिक ना करें।)

● बच्चा उसी का जिस के बिस्तर (घर में) पैदा हुआ। व्यभिचार करने वालों का दंड पत्थर से मारना है। न्याय अल्लाह के यहाँ होगा। जो कोई अपने खानदान के बारे में झूठ बोलेगा उसपर अल्लाह की लानत है।

● जो कर्ज ले उसे वापस करें।

● कोई चीज़ अगर तुम कुछ समय के लिए उधार लो तो वापस करो।

● उपहार लो तो दिया भी करो।

● अगर किसी की गारंटी लो तो अपना वादा पूरा करो। (उस कि तरफ से जुर्माना भरो)

● बलपूर्वक किसी से कोई वस्तु ना ले।

● अपने आप से और दूसरों के साथ अन्याय ना करो।

● अगर एक बदसूरत हब्शी भी तुम्हारा शासक बना दिया जाए और अगर वह ईश्वर के आदेश के विरुद्ध आज्ञा ना दे तो उसका आदेश मानना तुम सब के लिए अनिवार्य है।

● अब मेरे बाद कोई पैगम्बर नहीं आऐगा। और तुम अंतिम उम्मत (समुदाय) हो।

● पत्नी के लिए यह जायज नहीं के पती के बगैर अनुमति के वह उस का माल किसी को दे।

● पति का पत्नी पर और पत्नी का पति पर कुछ अधिकार (कर्तव्य) है। पत्नी का यह कर्तव्य है की वह व्यभिचार ना करें और ऐसे व्यक्ति को घर ना आने दे जिसे उसका पति पसंद नहीं करता है।

● अगर पत्नी व्यभिचार करे तो हल्का दंड दो यहाँ तक की वह सुधर जाए। उसके बाद उस से अच्छा व्यवहार करो। अच्छा खिलाओ पिलाओ, क्योंकि वह तुम पर निर्भर है। पति पत्नी का शारीरिक संबध ईश्वर का नाम लेने के बाद (विवाह के बाद) ही जाएज़ होता है। इसलिए पति पत्नी को अपने वैवाहिक जीवन में ईश्वर के आदेश का ख्याल रखना चाहिए।

● अब अपराधी खुद अपने अपराध का दण्ड भोगेगा। अब ना बाप के अपराध का दंड बेटे को मिलेगा और ना बेटे के अपराध का दंड बाप को।

● आप (स.) ने कहा ''ऐ लोगों! तीन बातें ह्रदय को पाक साफ रखती है (आपसी झगड़े-फसाद को नहीं होने देती)

१) कोई भी कार्य का उद्देश्य शुद्ध हो।
(आमाल में इखलास)
२) हमेशा सब के हित के कार्य करो।
(दीनी भाईयों की खैरख्वाही)
३) आपस में सहमती बनाए रखों।
(इत्तिदाद बनाए रखो।)

● लोगों महीनों को आगे पीछे मत करो। (अर्थात साल के बारह महीने है। इन्हें हमेशा १२ महीने रखों। कुछ दिन या महीने जोड़ कर Lunar महीने को Solar calender के साथ न मिलाओ।)

● लोगों ईश्वर का आदेश मैंने तुम लोगों तक पहुँचा दिया। मैं तुम लोगों के बीच दो चीजे छोडे जा रहा हूँ। अगर तुम उन दोनों को पकड़े रहोगे। तो कभी गुमराह नहीं होगे। वह दोनों चीज़ है। अल्लाह की किताब (पवित्र कुरआन) और मेरी सुन्नत (मेरे जीने का तरीका)

● लोगों अपने मालिक की प्रशंसा करो। पाँच समय नमाज़ पढ़ो। महीने भर उपवास (रोज़ा) रखो। जकात (दान) दो। हज किया करो। अपने शासक की आज्ञा मानों। ऐसा करोगे तो तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे।

● ऐ लोगों! जो यहाँ मेरी बात सुन रहे है। वह मेरी बात उन लोगों तक पहुँचा दे जो यहाँ नहीं है। हो सकता है कि कोई जो उपस्थित नहीं है वह तुम से अधिक समझने और याद रखने वाला है। (खुतबा हजजातुल विदा)

****

अग्नि का रहस्य क्या है?

● अग्नि को समझने के लिए हम पहले पवित्र वेदों के श्लोकों का अध्ययन करेंगे। फिर पवित्र कुरआन के आयतों का अध्ययन करेंगे और इस रहस्य को जानने का प्रयास करेंगे की अग्नि कौन हैं?

पवित्र वेदों के श्लोक

हम पवित्र वेदों के निम्नलिखित श्लोक का अध्ययन करते है।

● ऋग्वेद का पहला श्लोक है कि,

''सारी प्रशंसा और प्रार्थना अग्नि के लिए है।''
(ऋग्वेद १:१:१)

● ओ अग्नि! आप ही लोगों की मनोकामना को पूरी करते हो। आप ही प्रार्थना के योग्य हो। आप ही विष्णु, ब्रम्हा और बृहस्पती हो।
(ऋग्वेद २-१-३)

● मित्र, वारुन, अग्नि, गुरु, याम, वायु यह एक ही शक्ति के नाम है। विद्वान एक ईश्वर को उस के विशेषत: के आधार पर अलग-अलग नाम से पुकारते है। (ऋग्वेद १०-११४-५)

ऊपर लिखे हुए श्लोक यह स्पष्ट करते है कि अग्नि यह ईश्वर का ही एक नाम है, जो उस की विशेषता के अनुसार है।

अब हम पवित्र वेदों के कुछ और श्लोक का अध्ययन करते है।

● ''हम ने अग्नि को दूत चुना है।''
(ऋग्वेद १-१२-१)

● ''ओह अग्नि! मनु ने आप को पैग़म्बर के रुप में स्वीकार किया है।'' (ऋग्वेद १-१३-४)

● अग्नि वह इन्सान है जो ईश्वर की प्रार्थना करने वालों से प्रसन्न होते है।
(ऋग्वेद १-३१-१५)

● अग्नि को केवल विद्वान पहचान पाऐंगे।
(ऋग्वेद १०-७१-३)

● ज्ञान मंथन से अग्नि का रहस्य खुलेगा। और इसी पर तुम्हारी मुक्ति निर्भर है। अग्नि को मान कर ही आप लोग विश्व के सरदार (इमाम) बनोगे। (ऋग्वेद १-३१-१५)

● अग्नि के रहस्य का शोध मरुत गण (अर्थात रेगिस्तान के लोग) करेंगे। (ऋग्वेद ३-३-५)

● जब अंतिम मशाल (पवित्र कुरआन) को पहली मशाल (पवित्र वेद) पर रखा जाएगा तो ही अग्नि का रहस्य खुलेगा। (ऋग्वेद ३-२९-३)

पवित्र कुरआन की आयतें: -

पवित्र कुरआन की पहली आयत (पहला पद) है कि, ''सारी प्रशंसा एक ईश्वर के लिए है जो सारे ब्रम्हांड का मालिक है।'' (पवित्र कुरआन १:१)

● ''हज़रत ईसा ने कहा, ऐ बनी इस्राईल (यहूदी समुदाय)। मैं एक पैग़म्बर के मेरे बाद आने की खुशखबरी देता हूँ जिसका नाम अहमद है।'' (पवित्र कुरआन ६१:६)

● ''मुहम्मद किसी पुरुष के पिता नहीं है और वह आखरी पैग़म्बर है।'' (पवित्र कुरआन ३३:४०)

● ''ऐ मुहम्मद! जल्दी ही हम (ईश्वर) तुम को महमूद की पदवी देंगे।'' (पवित्र कुरआन १७:७९)

● ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

''हमने हर जानदार को पानी से पैदा किया है।'' (पवित्र कुरआन, २१:३०)

● हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा कि अगर हजरत मूसा भी आज जिवीत होते तो मुझे पैग़म्बर माने बगैर उन को भी मुक्ति ना मिलती। (तिरमिजी १४१-३ अहमद ३३८-४)

● कुरआन की इन आयतों में जो बात हम को याद रखना है वह यह है की एक ही महापुरुष को ईश्वर ने तीन नाम से याद किया। अहमद, मुहम्मद और महमूद।

अहमद, यह हज़रत मुहम्मद (स.) का धरती पर जन्म से पहले का नाम था। इस धरती पर आप का नाम मुहम्मद (स.) था। आने वाले समय में (परलोक में) आप को महमूद का पद मिलेगा।

अब हम फिर से हिन्दू धर्म के ग्रंथो का अध्ययन करते है।

● हमने इसी पुस्तक में इस के पहले अध्ययन किया के ईश्वर अपने विशेषता (Feature) वाले नाम से पैगम्बरों को भी संम्बोधित करता है। रहीम, गफूर जो के ईश्वर के नाम है इस से उस ने पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को याद किया है। ब्रम्हा यह ईश्वर का नाम है। इस नाम से उस ने भविष्य पुराण में हजरत आदम (अ.स.) और अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को याद किया।

इसी तरह अग्नि भी ईश्वर की एक विशेषता है। और इस नाम से भी उसने एक पैग़म्बर को ऋग्वेद में याद किया है। मगर यह कौन है इस को जानने के लिए हम पवित्र वेदों के कुछ निम्नलिखित श्लोकों का फिर से अध्ययन करते है।

● ऐ अग्नि हम तुम्हारे तीनों रुपों को जानते है। जहाँ जहाँ तुम्हारा ठिकाना है उन मुकामात को भी जानते है। हम तुम्हारे गुप्त नाम और तुम्हारे पैदा होने के मुकाम को भी जानते है। जहाँ से आये हो वह भी जानते है। (ऋग्वेद १०-४५-२)

● अग्नि स्वर्ग लोक में बिजली के रुप में पहली बार प्रकट हुए। दूसरी बार वह मानवजाति में प्रकट हुए, तब वह ज़ातवेद अर्थात (जन्म से ही ज्ञान रखनेवाला) कहलाए। तीसरी बार वह जल में प्रकट हुए। मानवजाति के कल्याण करनेवाले हमेशा सफल रहते हैं। (ऋग्वेद १०-४५-१)

● जिस अग्नि का अनंत रुप कभी खत्म नहीं होता, उसे बगैर शरीर वाली आत्मा कहते है। जब वह शरीर धारण करते है तब असूर (सबसे अंत में आने वाला) और नराशंस कहलाते है। और जब ब्रम्हांड को उज्जवलीत करते है तो मातरेशवा होते है। और उस समय वह हवा कि तरह (सब को लाभ देनेवाले) होते है। (ऋग्वेद ३-२९-११)

● अगर हम इन श्लोक का विश्लेषण करें तो हमें किसी महापुरुष के चार अवस्था का पता चलता है।

१) पहली अवस्था में वह बिजली की तरह जन्म लेते है। उस समय उन का नाम अग्नि होता है।

२) उन का दूसरा जन्म मनुष्य (आत्मा) के रुप में होता है। उस समय उन का नाम जातवेद (जन्म से ही ज्ञान रखनेवाला) होता हैं।

मनुष्य वास्तव में एक आत्मा है। वह पृथ्वी पर केवल शरीर धारण करता है। और देहांत के बाद फिर प्रलोक चला जाता है। इसीलिए जब

कोई मरता है तो उसकी लाश को देखकर कोई नहीं कहता यह वह व्यक्ति पड़ा है। बल्कि कहता है की उस की लाश पड़ी है। इसलिए यहाँ पर मनुष्य के रुप में पैदा होने का अर्थ है की बिजली के आकार से मनुष्य की आत्मा का रुप लेना।

३) महापुरुष का तीसरा जन्म पानी में होता है। और उस समय उन का नाम असुर और नराशंस होता है।

पानी में जन्म लेने का अर्थ है शरीर धारण करना। क्योंकि सभी जीवित प्राणियों को ईश्वर ने पानी से पैदा किया है। (पवित्र कुरआन २१:३०) और हर मनुष्य का शरीर ६५% पानी ही होता है।

४) महापुरुष का चौथा रुप प्रलोक में फिर प्रकट होगा। उस समय उन का नाम मातरेशवा होगा। और वह सब का कल्याण करेंगे।

अब हम फिर से इस्लामी ग्रंथों का अध्ययन करते है।

● हजरत अबु हुरैरा (रजि.) कहते है की हमने एक बार हजरत मुहम्मद (स.) से पूछा था ''या रसूल अल्लाह! आप कब पैग़म्बर बने?'' तो आप (स.) ने फरमाया ''मैं उस समय भी पैग़म्बर था जब हजरत आदम (अ.स.) अपनी आत्मा और शरीर के बीच थे।''

(तिरमिजी, मिश्कात, बाब सय्यीद मुर सालीन फसल सानी)

अर्थात जब ईश्वर पहले मनुष्य हज़रत आदम (अ.स.) को बना ही रहा था। तब भी मेरा अस्तित्व था।

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा,

''अल्लाह ने पहले मेरा नूर बनाया था।'

(जाईफ हदीस मरकतब दफ्तर-भाग ३)

● पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है की हमने हजरत मुहम्मद (स.) को 'रहमातुल लिल आलमीन' के रुप में भेजा है। (पवित्र कुरआन, २१:१०७)

'रहमातुल लिल आलमीन' का अर्थ है की सारे विश्व के लिए ईश्वर की कृपा। सब का भला करने वाला। सब की मुक्ति का कारण बननेवाला।

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की कयामत (प्रलय) के दिन जब सूरज की गर्मी से लोग परेशान होंगे और सभी लोग पैग़म्बरों से अनुरोध करेंगे की ईश्वर से विनती करें की ईश्वर उन सब को क्षमा कर दे और इस गर्मी की पीडा से बचा ले, तो कोई पैग़म्बर ईश्वर से बात करने की हिम्मत नहीं करेगा। जब कोई पैग़म्बर ईश्वर से बात करने की हिम्मत नहीं करेगा। तो लोग मेरे पास आएंगे। मैं उठूँगा और ईश्वर के सामने सिजदा करुँगा और उस समय तक सिजदें में रहूँ जब तक ईश्वर मुझे सर उठाने के लिए न कहें। जब ईश्वर मुझे सर उठाने कहेगा तो मैं लोगों के मुक्ति के लिए आग्रह करुंगा। उस के बाद ईश्वर मुझे उन सब को नरक से बचाने का आश्वासन देगा जिन लोगों ने शिर्क नहीं किया। अर्थात एक ईश्वर को छोड़कर और किसी की उपासना नहीं की। (अर्थात हज़रत मुहम्मद कयामत में एक ईश्वर को मानने वाले मानवजाति की मुक्ती का कारण बनेगें।)

(बुखारी, मुस्लिम, मारुफूल हदीस, V-1, Page245)

अब हम एक एक कड़ी को जोड़ते हैं।

● अग्नि का जन्म सब से पहले, बिजली की तरह हुआ। हज़रत मुहम्मद (स.) का जन्म सब से पहले नुर (प्रकाश) की तरह हुआ।

● अग्नि का दूसरा जन्म मनुष्य की आत्मा की तरह हुआ। नाम ''जात-वेद''। हज़रत मुहम्मद

(स.) का जन्म हज़रत आदम से पहले रुह (आत्मा) की शक्ल में हुआ। नाम अहमद।

● अग्नि का तीसरा जन्म पानी में। नाम आसुर अथवा नराशंस। ईश्वर ने मानव जाती को पानी से पैदा किया (पवित्र कुरआन २१:३०) इसलिए पानी में पैदा होने का अर्थ है की शरीर धारण करना। हज़रत मुहम्मद (स.) का पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में जन्म हुआ। नाम मुहम्मद।

● अग्नि का चौथे रुप में नाम मातरेशवा होगा। काम हवा की तरह सब का कल्याण करना। हज़रत मुहम्मद (स.) का चौथा रुप में नाम मेहमूद होगा। काम पापियों के मुक्ति के लिए कयामत के दिन ईश्वर से आग्रह करना।

● क्या आप को दोनों में कुछ समानता नज़र आती है?

● डा. वेद प्रकाश उपाध्याय जो कि प्रयाग युर्निवर्सिटी में संस्कृत के विद्वान है, उन्होंने वेदों के ज्ञान का मंथन करके यह शोध निकाला की वेदों में जिसे नराशंस, कल्की अवतार और महामे ऋषी कहा गया हैं वह हजरत मुहम्मद (स.) ही है। उन की पुस्तक ''नराशंस और अंतिम ऋषी'' को पढ़ कर आप विस्तार से जानकारी हासिल कर सकते है। इसे आप मेरी पुस्तक ''पवित्र वेद और इस्लाम धर्म'' में भी पढ़ सकते है।

तो जिस पैग़म्बर को वेदों में अग्नि कहा गया है वह हजरत मुहम्मद (स.) ही है।

● पवित्र ऋग्वेद में जैसे कहा है की ''जब अंतिम मशाल को पहली मशाल के साथ पढ़ा जाएगा तो ही अग्नि की पहचान होगी।'' तो आज हमने दोनों को पढ़ कर यह रहस्य जान लिया।

● पवित्र ऋग्वेद कहता है की अग्नि को समझने और मानने के बाद ही हमारा कल्याण होगा, और हम जगत के सरदार बनेंगे। तो आइए हम अपने कल्याण की तरफ पहला कदम उठाएँ।

● पवित्र ऋग्वेद कहता है की, अग्नि को पहचाने और माने बगैर मुक्ति असंभव है। तो आइए हम हज़रत मुहम्मद (स.) को अंतिम पैग़म्बर की तरह पहचाने और उन के आदेश का पालन करें। ताकि मरने के बाद भी हम सफल रहें।

हज़रत मुहम्मद (स.) के आदेश का पालन की शुरुआत कैसे करें?

● हज़रत मुहम्मद (स.) के आदेश का पालन की शुरुआत दो कामों से करें।

१) अपने मन में यह पक्का यकीन कर लें की एक ईश्वर (जो की निरंकार है) के अलावा और कोई भी पूजने के लायक नहीं है। और वास्तव में उस एक ईश्वर को छोड कर और किसी की भी पूजा और प्रार्थना ना करें।

२) अपने कर्मों को जितना बहतरीन (सर्वश्रेष्ठ) बना सकते हो उतना बेहतरीन बनाऐं।

कर्मों को बेहतरीन बनाने का अर्थ है पाप करना बिल्कुल छोड़ दें। जैसे की हराम कमाई मत करो। किसी को धोखा मत दो। चोरी मत करो। किसी के साथ अन्याय मत करो। हमेशा सच बोलो। दूसरों का भला करो। हमेशा एक दम साफ सुथरा रहो। (पैशाब की एक बूँद या किसी गंदगी का एक छींटा भी आप के शरीर या कपड़े में ना लगे।) अपने परिवार के साथ और अपने माता-पिता के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार करें। व्यापार के इस्लामी नियम मैंने अपनी पुस्तक ''कानूने तरक्की'' में लिखा। इस पुस्तक को पढ़कर अपने कारोबारी व्यवहार और सुधार लें। ईश्वर को मन में याद करते रहों। उस के नाम का जाप करते रहो। उसके दो मुख्य नाम है। हादी और रहीम। तो ''या हादी'', ''या रहीम'' का जब भी समय मिले जाप करो।

हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन एक नज़र में

आप (स.) के पिताश्री हज़रत अब्दुल्ला का देहांत	आप (स.) के जन्म से ७ महीने पहले 569AD
आप (स.) का जन्म	20/22 एप्रिल 570AD
दाई हलीमा आप (स.) को देहात ले गई।	आयु ४ महीने 570AD
दुबारा मां के पास आ गए।	आयु ५ वर्ष 575AD
हज़रत आमना (आप (स.) की माताश्री) का देहांत	आयु ६ वर्ष 576AD
दादा अब्दुल मुत्तलिब का देहांत	आयु ८ वर्ष 578AD
हज़रत खदीजा (रजि.) से विवाह	आयु २५ वर्ष 595AD
हिरा गुफा में उपासना का आरंभ	आयु ३७ वर्ष 607AD
पैग़म्बरी का आरंभ	आयु ४० वर्ष 610AD
मित्रों और रिश्तेदारों में धर्म प्रचार	आयु ४१ वर्ष 610/613 AD
पैग़म्बर होने की खुली घोषणा।	आयु ४४ वर्ष 614 AD
इथोपीया के ओर मुसलमानों का देशांतर	आयु ४५ वर्ष 615 AD
हज़रत मुहम्मद (स.) के कबीलों का सामाजिक बहिष्कार	आयु ४७ वर्ष 616-619 AD
हज़रत खदीजा (रजि.) और चाचा अबु तालीब का देहांत	आयु ५० वर्ष 619 AD
ताएफ की ओर सफर	आयु ५० वर्ष 619 AD
मेहराज की घटना, पाँच समय की नमाज पढ़ना	आयु ५० वर्ष 620 AD
हज़रत आएशा (रजि.) से विवाह।	आयु ५१ वर्ष 621AD
मदीना के ७५ लोगों ने इस्लाम कबूल किया।	आयु ५२ वर्ष 622AD
मक्का से मदीना का सफर (Migration)।	आयु ५२ वर्ष 622AD
मस्जिदे नबवी बनाने का काम आरंभ हुवा।	आयु ५२ वर्ष 622AD
येरुशलेम से मक्का की तरफ मुँह करने का हुक्म।	आयु ५५ वर्ष 624AD
बदर में पहला युद्ध।	आयु ५५ वर्ष 624AD
ओहद में दूसरा युद्ध।	आयु ५६ वर्ष 625AD

हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन एक नज़र में

तीसरा युद्ध जिसमें खाई खोदी गई।	आयु ५८ वर्ष 627AD
हुदैबीया में शांति संधी।	आयु ५९ वर्ष 628AD
खैबर के मुकाम पर यहूदीयों से युद्ध।	आयु ६० वर्ष 629AD
मुअत्ता के मुकाम पर रोम की सेना से युद्ध।	आयु ६० वर्ष 629AD
मक्का विजय हुआ।	आयु ६१ वर्ष 630AD
हुनैन के मुकाम पर युद्ध	आयु ६१ वर्ष 630AD
तबुक का सफर	आयु ६२ वर्ष 631AD
आखरी हज और आखरी खुत्बा (भाषण)	आयु ६३ वर्ष 632AD
बीमारी और देहांत	आयु ६३ वर्ष 632AD

हज़रत मुहम्मद (स.) की आयु Lunar Calender के अनुसार है और घटनाओं की तारीख इतिहास और Solar Calender के अनुसार है, इसलिए आयु और तारीख में कुछ अंतर है।

इस पुस्तक को लिखने के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता ली गयी है। हम उन सब लेखकों और प्रकाशकों के आभारी है।

१) पवित्र कुरआन (अनुवाद फातेह मोहम्मद जालंधरी)

२) मारुफूल हदीस (मौलाना मोहम्मद मनजूर नौमानी)

३) अब भी ना जागे तो
(मौलाना शम्स नवीद उस्मानी,
सय्यद अब्दुल्ला तारीक जासिन बुक डेपो,
उर्दू बाजार, जामा मस्जिद, दिल्ली)

४) हज़रत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रंथ
(डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, नेशनल प्रिटींग प्रेस, दरीयागंज, दिल्ली)

५) Hazrat Mohammed in world scripture
(A.H.Vidyarthi, Adam Publisher & Distibutors 1542,
Pataudi House, Dariya ganj, New Delhi-110002)

६) पैग़म्बरें इस्लाम गैरमुस्लिमों की नज़र में
(मोहम्मद याहया खान, फरीद बुक डेपो, नई दिल्ली ११०००२)

७) सि-राते अहमद मुज्तबा सल्ललाहु अलैहिवसल्लम
(शाह मिसबाहद्दीन शकिल, अल् रहमान प्रिटंर्स और पब्लिशर्स,
१८, जकरिया स्ट्रीट, कोलकत्ता ७०००७३)

८) The Quran & Modern Science
(Dr. Zakir Naik, Publishers :-Islamic Research Foundation,
56/58 Tandel Street (North), Dongri, Mumbai- 400 009)

९) सि-राते नबी
(लेखक- अल्लामा शिबली नौमानी (रह.), सय्यद सुलैमान नदवी)

१०) संत, महात्मा, विचारवंत और इस्लाम
(संकलक: सोमनाथ देशकर, संदेश प्रकाशन, पुणे-४११ ००५९)

MR. Q.S. KHAN IS ALSO AUTHOR OF FOLLOWING BOOKS.

Management Topics:-

- Law of success for both the Worlds.
  (Translated in Hindi & Marathi)
- How to Prosper Islamic Way?
  (Translated in Hindi & Urdu)

Religious Topics:-

- Teaching of Vedas and Quran
  (Translated in Hindi, Marathi & Gujarat)
- Hajj Journey Problems and their easy Solutions.
  (Translated in Urdu, Hindi, Gujarati, Bengali)
- Kya her Mah Chand dekhna Zaroori hai?
  (Translated in Urdu, English, Arabic)

Engineering Topics:-

1. Introduction to Hydraulic Presses and Design of Press Body.
2. Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.
3. Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.
4. Study of Hydraulic Accessories
5. Study of Hydraulic Circuits
6. Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductors, and Hydraulic Oil.
7. Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.

Books Written By Mr. Q.S. Khan
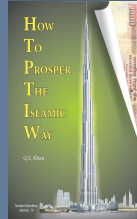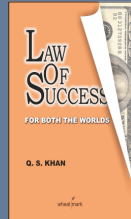
Hindi Translation of "Law of success for both the worlds" By Dr. Vimla Malhotra

Marathi Translation of "Law of success for both the worlds" By Mr. Sushil S. Limye
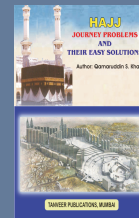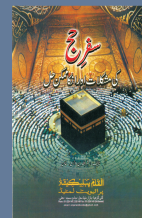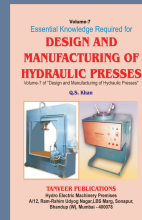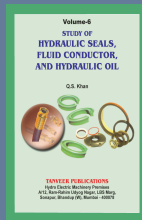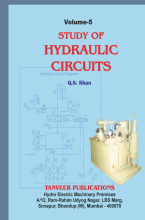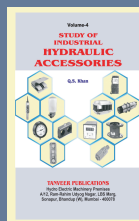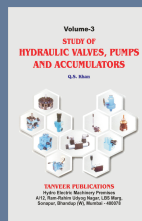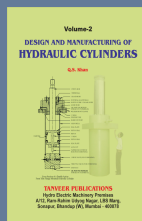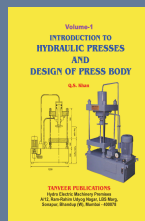
TANVEER PUBLICATION
Hydro Electric Machinery Premises, A/13, Ram-Rahim Udyog Nagar,
Bus stop Lane, L.B.S. Road, Sonapur, Bhandup (w) Mumbai - 400078.
Phone: 022-25965930, Mob: 09320064026. Email: hydelect@vsnl.com
Websites: www.tanveerpublication.com / www.freeeducation.co.in